12.03 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

NOTIFICATION UNDER CENTRAL EXCISE RULES, 1944, AND A STATEMENT ON THE REPORT OF WORKING GROUP RE. BUREAU OF INDUSTRIAL COSTS & PRICES

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH): I beg to lay on the Table a copy of Notification No. G.S.R. 349 (Hindi and English versions) published in Gazette of India dated the 6th April, 1974 issued under the Central Excise Rules, 1944, together with an explanatory memorandum. [*Placed in Library See* No. LT-6747/74.]

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PETROLEUM AND CHEMICALS (SHRI SHAHNAWAZ KHAN): I beg to lay on the Table a statement (Hindi and English versions) on the Report of the Working Group under the Chairmanship of the Chairman of the Bureau of Industrial Costs and Prices on the cost structure of certain bulk drugs, etc. [*Placed in Library. See* No. LT-6748/74.]

INTERIM REPORT 1973 OF WAKF INQUIRY COMMITTEE

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI F. H. MOHSIN): I beg to lay on the Table a copy of the Interim Report 1973 of Wakf Inquiry Committee. [*Placed in Library. See* No. LT-6749/74].

12.03½ hrs.

PUBLIC ACCOUNTS COMMITTEE

REPORTS AND MINUTES

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): I beg to present the following Reports and minutes of the Public Accounts Committee:—

(1) (i) Hundred and seventeenth Report on the Report of the Comptroller and Auditor General of India for the year 1971-72—Union Government (Civil) relating to Departments of Labour, Rehabilitation and Supply.

(ii) Minutes of the sittings of the Committee relating to the above Report.

(2) (i) Hundred and twenty-fourth Report on the Report of the Comptroller and Auditor General of India for the year 1971-72—Union Government (Civil), relating to the Ministry of Health and Family Planning (Department of Health).

(ii) Minutes of the sittings of the Committee relating to the above Report.

12.03½ hrs.

COMMITTEE OF PRIVILEGES

EIGHT REPORT

SHRI VASANT SATHE (Akola): I beg to present the Eigth Report of the Committee of Privileges.

12.04 hrs.

DISCUSSION RE. SITUATION IN BIHAR

MR. DEPUTY SPEAKER: Now, we take up the discussion on the statement of the Minister of Home Affairs regarding the situation in Bihar.

SHRI S M. BANERJEE (Kanpur): With a very heavy heart, anguish and anger I beg to move:

"That this House take note of the statement made by the Minister of Home Affairs in the House on the 17th April, 1974 regarding the situation in Bihar"

MR. DEPUTY SPEAKER: There is no motion It is only a discussion You may say, 'I raise a discussion'

SHRI S. M. BANERJEE: Sir, I raise a discussion under Rule 193 and request this House to take note of that.

I request that my hon. friend, Shri Bhogendra Jha who is in possession of all facts and figures may kindly be given the chance to speak on my behalf.

MR. DEPUTY SPEAKER: You both belong to the same Party. Yes, Shri Bhogendra Jha.

SHRI S. M. BANERJEE: Thank you, Sir

श्री भोगेन्द्र झा (जयनगर) : उपाध्यक्ष महोदय, बिहार में जो जानें गई हैं, खास कर बी० एम० एफ० और पुलिस की गोली से जो जानें गई हैं, उन में अधिकतर निर्दोष लोग हैं जिन की जानें गई हैं। मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से और मैं समझता हूं कि पूरा सदन भी इस में एक साथ होगा, उन निर्दोष लोगों के प्रति जिन की जानें गई हैं, श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, बिहार में जो बातें सामने आई हैं वह उस नारे का ही प्रतिरूप हैं—"गुजरात की जीत हमारी है, अब बिहार की बारी है।"। इस से यह साफ जाहिर हो जाता है कि यह मामला सिर्फ बिहार को लेकर ही नहीं उठा है। यह सही है कि कांग्रेसी सरकार ने 1971–72 में जो वायदे किये थे, गरीबी हटाने के, वे वायदे पूरे नहीं किये गये। जिन शक्तियों ने उस समय पुरानी कांग्रेस से बाहर आ कर नई कांग्रेस का निर्माण किया था और जिस से जनता में खुशी की लहर दौड़ी थी आज वह खुशी समाप्त होती जा रही है। आज फिर वही जमींदार, पूंजीपति, चोरबाजारी इस कांग्रेस में दाखिल हो गये हैं। केवल शरीर से ही दाखिल नहीं हुए, बल्कि उन की नीतियां भी कांग्रेस में चली आई हैं जिनके चलते हम ने देखा कि मुनाफाखोरों को पूरी छूट दी गई। पिछले साल गेहूं का थोक-व्यापार नाम के लिये लिया गया, जो गल्ला खुद-ब-खुद आ जायगा उस को ले लेंगे, इस तरह से जान-बूझ कर उस को नाकाम बनाने की कोशिश की गई और इस साल तो उसे भी खत्म कर दिया गया।

भारत सरकार पूरे देश में बड़े पैमाने पर चोरबाजारियों, के सामने, बड़े बड़े भूस्वामियों के सामने झुकी है। कल्याणी अधिवेशन में जो फैसला हुआ था कि 1973 तक हदबन्दी कानून लागू हो जायेगा, 1973 बीत गया, 1974 जा रहा है, हदबन्दी कानून लागू करने की चर्चा तक नहीं हो रही है। इस लिये कि जमींदारों का बड़ा तबका कांग्रेस में घुसता चला जा रहा है और उन्होंने कांग्रेस पर दखल कर लिया है। इसी तरह से जो बड़े भूस्वामी हैं, चोर-बाजारी हैं, करोड़पति हैं उन्होंने कांग्रेस पार्टी के ऊपर, इस सरकार पर एक बड़ी हद तक दखल कर लिया है, कब्जा कर लिया है और यह उसी का नतीजा है कि अभी कुछ दिन पहले 30 प्रतिशत कपड़े की कीमत बढ़ाई गई। गल्ले की कीमत तो बढ़ी ही है, लेकिन जो राशन और गेहूं पिछले साल का था, उस की कीमत भी राशन की दुकानों पर बढ़ा दी गई है। सरकार की नीतियों में जो परिवर्तन हुआ है उस के परिणामस्वरूप आप सब जानते हैं कि तीसरे

[श्री भोगेन्द्र झा]

दर्जे के मुसाफिरों के लिये रेलवे का किराया बढ़ाया गया, इस तरह से आम जनता पर बोझ बढ़ा है, करोड़पतियों का मुनाफा बढ़ा है, करोड़पतियों का मुनाफा बढ़ा है, बड़े भूस्वामियों का बटाईदारों पर बेदखल बढ़ा है, इन नीतियों के चलते जनता के अन्दर असन्तोष बढ़ा है। हम चाहते हैं कि जनता के अन्दर यह असन्तोष जो बढ़ा है इस सदन के जरिये हम उस का समर्थन करते हैं हम चाहते हैं कि यह असन्तोष संगठित जन-आन्दोलन का रूप ले।

उपाध्यक्ष महोदय, बिहार में यह असन्तोष बहुत ही शान्तिपूर्ण आन्दोलन का रूप ले चुका था। 14 मार्च को पूरा बिहार बन्द हुआ था जिस में कालिज के शिक्षक, हाई स्कूलों और प्राथमिक स्कूलों के शिक्षक से लेकर खान मजदूर, कारखाने के मजदूर, रिक्शा चलाने वाले मजदूर, सभी एक साथ शामिल हुए थे। एक जगह भी लूट नहीं हुई, एक जगह भी दंगा नहीं हुआ, इसी से घबरा कर कांग्रेस के बाहर के प्रतिक्रियावादियों ने, चोरबाजारियों ने, जमींदारों ने कांग्रेस के अन्दर के कुछ लोगों की मदद से बिहार में आग लगाने की कोशिश की और यह कोशिश कोई अनहोनी नहीं है, क्योंकि देश के करोड़पति और वे लोग जो कल तक पार्लियामेन्ट्री डेमोक्रेसी का उपदेश किया करते थे, लेकिन अब कुलक्स की श्रेणी में हैं, वे अब कहने लगे हैं कि पार्लियामेन्ट्री जनतन्त्र भारत के लिये मौजूं नहीं है। आप स्टेट्समैन अखबार को लीजिये, जो आज टाटा का अखबार है, जो कल तक भारतीय जनतन्त्र की प्रशंसा करता था, जो हमारी सरकार के प्रति बहुत भक्ति और आदर दिखाता था, वह अखबार लिखता है कि—

"Election and Parliamentary Democracy has become irrelement?

उस ने इस को इर्रेलेवेन्ट कह दिया है और और जयप्रकाश बाबू जो स्वतन्त्रता संग्राम में हमारे साथ थे और 1952 तक उन को चुनाव में विश्वास था। लेकिन मतदाताओं ने जो 1952 में ठुकराया उसके बाद उन्होंने अयूब खां की तानाशाही को कहा था कि गाइडेड डिमोक्रैसी का हम निरादर करते हैं और आज वे पार्टीलिस की बात कह रहे हैं। सरकार में अगर फौजी तानाशाह होता है वह पार्टियों पर रोक लगाता है। सरकार के बाहर जयप्रकाश बाबू कह रहे हैं हम पार्टीलिस करेंगे, पार्टी विहीन करेंगे और यह नारा जयप्रकाश बाबू का केवल जन असंतोष का नारा नही है। संगठित रूप से जयप्रकाश बाबू का यहां दिल्ली में सम्मेलन हुआ, ऊपर से वे जरूर होंगे कि हम हिंसा नहीं चाहते हैं लेकिन यहां जो पिस्तौल वाला आया था उसको भी उन्होंने फोन किया कि मेरे प्रति लोगों की आस्था हो गई है इसलिए मेरा नाम लेकर उन्होंने ऐसा किया है (व्यवधान) इस तरह से मैं चाहता हूं वाजपेयी जी इस पर गौर करेंगे क्योंकि हम सभी इस बात की शपथ लेकर बैठे हैं कि पार्लियामेन्टरी डिमोक्रेसी को हम निभायेंगे। (व्यवधान) हम विश्वास करते हैं कि पूंजीपति अपनी मर्जी से नही चलने देंगे। अगर पूंजीपति इसे कबूल करलें तो मजदूर वर्ग सौ फीसदी विश्वास करके चलेगा लेकिन हमें आशंका है कि पूंजीपति वर्ग नहीं चलने देंगे और यह शंका साबित हो रही है। हम तहे दिल से, ईमानदारी से

समझते हैं कि हिन्दुस्तान में शांतिपूर्वक क्रान्ति हो सकती है और शांतिपूर्वक हिन्दुस्तान में पूंजीवाद को मिटाया जा सकता है। इसी विश्वास पर हम खड़े हैं कि हिन्दुस्तान के मेहनतकश मध्यमवर्ग के लोग मिलकर बिना तलवार के, बिना बन्दूक के हिन्दुस्तान में इन्कलाब ला सकते हैं। यह चीज जब आगे बढ़ती है तभी हिन्दुस्तान मे करोड़पतियों ने घबराकर जनतन्त्र के खात्मे और चुनाव के खात्मे का नारा दिया है। चौधरी चरणसिंह जब बोलते हैं तो आप सभी जानते हैं वे हिंसा का खुलेआम समर्थन करते हैं। अपने को जो अहिंसा का अवतार कहते थे, जो भूख-हड़ताल के खिलाफ थे अनशन के खिलाफ थे वे आज हिंसा का समर्थन कर रहे हैं।

जो कुछ अभी बिहार मे बातें हो रही है वह देश के अखबार और सरकारी रेडियो के लिए एक बहुत हकीकत बन गई हैं, इतना बन गई हैं देश मे इस बात को फैलाने के लिए आज यह बिहार का मामला केवल बिहार का मामला नहीं है, बल्कि मध्य प्रदेश के, परसों उत्तर प्रदेश मे और फिर सारे देश मे चुनाव प्रणाली को खत्म करके फासिज्म लाने की साजिश का यह हिस्सा है। मैं एक फोटोस्टैट कापी आनन्द मार्गी की आपकी इजाजत से रखना चाहूंगा जिस मे दिया है 1 अप्रैल, 9 अप्रैल, 24 अप्रैल, को सभी आनन्दमार्गियों के नाम यह सर्कुलर है कि पूरे बिहार मे बड़े पैमाने पर इस दिवस को मनाओ और दफ्तरों को घेरो एक अप्रैल को जो उनके सरकार साहब हैं उनकी भूख हड़ताल का एक साल पूरा हो जायेगा इसलिये उस दिन से शुरू करो। 9 अप्रैल का जो दिन है उसको याद रखेंगे माननीय सदस्य, 9 अप्रैल को सर्वदं मोर्चा चलाया गया। अगर वाजपेयी जी को मालूम न हो तो मालूम कर लें। उनका जो परिपत्र है उसकी फोटोस्टैट कापी है जोकि 13-3-74 का है और 18 को बिहार मे आग लगाने की घटना हुई है। 16 तारीख को, शायद वाजपेयी जी का पता नहीं यह मैं मानकर चलता हूं, वाजपेयी जी भी और गुहा जी भी उस जाल मे फस गए 16 तारीख को। वहां पर बी० के० डी० का कोई सगठन नहीं है लेकिन वे भी पहुंच गए। सिंडीकेट के मेहता साहब भी गए। अगर मिश्र जी जाते तो मैं समझता वे बिहारी है इसलिए गए। इस तरह से 4 लोग पहुंच गए 16 तारीख को और 13 का परिपत्र है। मैं आपकी इजाजत से इसको टेबिल पर रखना* चाहता हूं क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अलावा यह जो 16 तारीख को जेल में मुलाकात करने गए, क्या बात हुई जेल मे उसके सम्बन्ध मे उस दिन गृह मंत्री जी ने कहा कि पता नहीं है। मैं आशा करता हूं अभी भी गृह मंत्री जी बतायें क्या बात हुई क्योंकि जेल मे कोई प्राइवेट बात नहीं कर सकता, वहां पर आफिसर मौजूद रहता है। इसलिए क्या उनके पास कोई रिपोर्ट है कि क्या बातें हुई हैं? मैं यह भी जानना चाहता हूं क्या वाजपेयी जी को कोई इजाजत थी? मुझे खबर है वाजपेयी जी को मुलाकात के लिये इजाजत

*The speaker not having subsequently accorded the necessary permission the documents were not treated as laid on the Table

[श्री भोगेन्द्र झा]

नहीं थी, अन्य तीन के लिए थी । वाजपेयी जी की उससे मुलकात हुई जो सौ लोगों की हत्याओं का मुजरिम होकर बैठा है, क्या वाजपेयी जी की आनन्द मार्ग से दोस्ती हो गई है या आनन्दमार्ग को ले आये हैं अपने में या स्वयं आनंद मार्ग में चले गए है. वे स्वयं कहेंगे । लेकिन अगर जेल वालों के लिए सहानुभूति हो तो हमारे 600 साथी जेल में बन्द हैं । हम वाजपेयी जी को अभी भी निमन्त्रण देते है । (व्यवधान)

तो मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि एक तरफ जयप्रकाश बाबू जिनके लिए 51 संसदस्यों ने श्रद्धा की बात कही थी. मैं समझता हूं उम्र के लिए श्रद्धा का होना कोई बुरी बात नहीं है । हम सब में जो वृद्ध है उन सभी के प्रति हम श्रद्धा अर्पित करेंगे लेकिन जो राजनीति का मामला है, जो यूवकों को गाइडेड डिमोक्रेसी को लेकर वे खड़े हुए हैं, जिसके लिए वे खड़े हुए है उसका क्या यह संसद् या संसद् का कोई सदस्य समर्थन कर सकता है ? अगर करता है तो जो कसम ली गई है संविधान के मुताल्लिक उस शपथ के खिलाफ वह काम करता है । वह पार्टी विहीन व्यवस्था इस देश की हो, वह व्यवस्था लाबू कैसे हो ? जबर्दस्ती लोगों के इस्तीफे दिलाकर । मैं आपके सामने बात रख रहा हूं कि 14 तारीख को दरभंगा में खादिम हुसेन जो बिहार असेम्बली के एम एल ए हैं, उनके घर पर आर एस एस के 25–30 व्यक्तियों ने हमला किया, मारपीट की। (व्यवधान) मैं पूरी जिम्मेदारी के साथ इस बात को कह रहा हूं । मैं दरभंगा में था । (व्यवधान) एक हिस्से से मुझे मालूम हुआ । तो जब उनके घर पर हमला हुआ, पुलिस को खबर दी गई लेकिन पुलिस ने किसी को गिरफ्तार नहीं किया । क्या बिहार सरकार को लकवा मार गया था ? जब आग लग रही थी बिहार में, 10–12 हजार लोग इकट्ठा हुए थे असेम्बली के सामने उनकी संख्या बहुत नहीं थी । हम समझते है अभी भी दस दिन की तैयारी से जनतन्त्र की रक्षा के लिए पटना में 10 लाख लोग इकट्ठे हो जायेंगे । उन आग लगाने वालों के खिलाफ जनतन्त्र की रक्षा के लिए, चोरबाजारी और मंहगाई के खिलाफ और रोजी रोटी के लिए 10 लाख लोग इकट्ठा हो जायेंगे । 25 तारीख को मैं समझता हूं बिहार में लाखों लोग कूच करेंगे, हर जिले में लाखों लोग कूच करेंगे, इसमें सौ पचास का सवाल नहीं है । लेकिन हालत क्या हो रही है ? तीन चार लड़के जाते हैं तो अफसर दफ्तर बन्द करके चला जाता है । लेकिन वह गिरफ्तार किसको करते हैं ? जो आग लगाने से रोकता है उसको । मिथिला विश्वविद्यालय यूनियन का सेक्रेटरी बैजनाथ चौधरी, सी० एम० कालेज की यूनियन का सेक्रेटरी जिसने पूरी जमात को रोका, न आग लगने दी, न लूट करने दी, न ईंटें फेंकने दी, विद्यार्थियों का समूह उसके साथ था तो उसको गिरफ्तार करके सीखा में नजरबन्द कर लिया गया । उससे वहां के एस० पी० ने कहा तुम आराम से बैठे रहो

जेल में। कम्युनिस्ट पार्टी, जिला कौंसिल का मेम्बर आज भी मीसा में नजरबन्द है। (व्यवधान) दरभंगा मे मै कहता हू उसके पहले एक ईंट नही फेकी गई। जब लोग निकले रेल मे आग लगाने के लिए तो हजारों विद्यार्थी खडे हो कि रेल की सम्पत्ति कांग्रेस सरकार की सम्पत्ति नही है, श्री ललित नारायण मिश्र की सम्पत्ति नही है इसके बदले मे हम लोगों को ही किराया चुकाना पडेगा इसलिए इसकी रक्षा हम करेंगे। तुम्हे बदला लेना है तो किसी मिनिस्टर के घर पर बदला लो। लेकिन उनको नजरबन्द कर लिया गया। मिथिला टाइम्स के कम्पोजीटर, प्रुफ रीडर्स को पकड कर गिरफ्तार कर लिया गया। क्या दरभंगा मे जहा कोई भी ऐसा वाकया नही हुआ, मै जाना चाहता हू कि क्या इनके अफसरो का बडा हिस्सा इस बात के लिए कोशिश नही कर रहा था कि यहा आग लगे, क्या वे इस बात में हमदर्दी नही दिखला रहे थे कि यहा आग लगे और बर्बादी हो और दफ्तर बन्द हो? मैने पटना मे देखा है तीन चार अमीर घरो के लडके है मसनद और डनलपपिलो पर आराम करने वाले वे निकल कर गए तो अफसर ने दफ्तर बन्द कर दिया लेकिन अगर 10–15 या 20 हजार लोग जाते है बात करने के लिए तो उन के पास उसके के लिए समय नही रहता।

दूसरी तरफ बिहार यूनिवर्सिटी टीचर्स फैडरेशन ने प्रस्ताव पारित किया था, विद्यार्थियो की जो मागे थी उनका समर्थन करते हुए तथा साथ ही जनतन्त्र पर जो चोट है उसका विरोध करते हुए और पार्लमेन्टरी डिमोक्रैसी की रक्षा करने के लिए लेकिन इनके आल इंडिया रेडियो ने पटना से जो ब्राडकास्ट किया उसमे जनतन्त्र वाले और रक्षा वाले हिस्से को गायब कर दिया। मैं यह आल इडिया रेडियो की बात कर रहा हू। बिहार यूनिवर्सिटी टीचर्स फैडरेशन के सेक्रेटरी श्री एम० के० बोस का जो खत है, मै चाहूगा आप इजाजत दे उसको मै टेबिल पर रख। मैं चाहूगा स्टेशन डायरेक्टर आल इडिया रेडियो, पटना के खिलाफ दीक्षित जी कार्यवाही करे। बिहार के विश्वविद्यालय टीचर्स का जो सगठन है उसकी ओर से जनतन्त्र की रक्षा की माग की गई, वह अखबारो मे नही आई तो चूकि करोडपतियो के हाथ मे है इसलिए मै उनकी बात नही कर रहा हू। लेकिन आल इडिया रेडियो जो भारत सरकार का है उसके लिए श्री गुजराल साहब का हुक्म था, दीक्षित जी का हुकम था या गफूर साहब का हुक्म था, किसके हुक्म से उसको काटा गया? इस पर यह कार्यवाही करें। मै चाहूगा इस खत को मैं टेबिल पर रख दू ताकि इस पर समुचित कार्यवाही हो। (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय, जहा पर यह आग लगाने की घटनाए हुई वहा पर खुद यह लोग गये, लाठिया ले ले कर आर० एस० एस० के लोग पहुचे और उन्होने उपद्रव किये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) बिल्कुल गलत।

श्री भोगेन्द्र झा इस पर भी वे गिरफ्तार नही हुए। अगर 20 25 गिरफ्तार कर लिये जाते, तो शान्ति रह जाती। उन को बाद मे छोड़ देते।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । या तो बाद में इन के अनर्गल आरोपों का खण्डन करने का आप हम को अवसर दें या अभी बीच में टोका-टोकी कर के जो सच्चाई है, उस को सामने लाने की मैं कोशिश करूं ।

MR. DEPUTY-SPEAKER: His pary's time is there. When his trun comes, he can have that time.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उसमें नहीं होगा । उस में हम आरोप नहीं लगाएंगे । हमारी लड़ाई तो सरकार से हो रही है । यह हम से लड़ रहे हैं । इन से निपटने के लिए हमें अलग से टाइम चाहिए और उन से निपटने के लिए अलग से टाइम चाहिए ।

श्री भोगेन्द्र झा : उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह जानता हूं कि सरकार चोर व्यापारियों के समर्थकों को जेल नहीं भेजती । मैं जानता हूं कि जिन लोगों ने आग लगाने का प्रयत्न किया, वे सभी बाहर हैं और जिन्होंने आग लगाने को रोका, वे जेल में हैं । बिहार में 600 कम्युनिस्ट अभी जेल में बन्द हैं इसी आन्दोलन के सिलसिले में । मैं किसान आन्दोलन की बात नहीं कर रहा हूं । अगर गया में 20, 25 को पकड़ लेते और पकड़ कर उन को बाद में स्वागत करते, उन को मालाएं पहनाते, तो हमें एतराज न होता, लेकिन जब भीड़ इकट्ठी हो गई, तो निर्दोष लोगों पर गोलियां चलाई गईं और उन की हत्याएं की गईं । बहुत से निर्दोष लोग उस में मारे गये । मेरा कथन है कि इन के अफसरों का एक हिस्सा निर्दोषों पर गोली इसलिए चलाता है कि लोगों में असन्तोष फैले और असेम्बली को भंग करने का आधार तैयार हो और हिन्दुस्तान से जनतन्त्र खत्म हो । इसलिए गोलियों से हत्याएं हुई हैं । वे आग लगाने वाले नहीं हैं जिन की गोलियों से हत्याएं हुई हैं ? वे लूटने वाले और उपद्रव करने वाले नहीं हैं, जिन की हत्याएं हुई हैं । वे निर्दोष लोग हैं जिनकी हत्याएं हुई हैं । जो लोग आग लगा रहे हैं, जो लूट-पाट कर रहे हैं । उन्हें संरक्षण मिल रहा है । उपाध्यक्ष महोदय मैं यह कहूंगा कि व्यक्तिगत मिनिस्टर्स के, पहले के भी और अब के भी, आदमी इन आग लगाने वाले गिरोह में हैं । यह पैसा देते हैं और यह बात अभी भी चल रही है । . . . (व्यवधान) . . . .

श्री श्याम नन्दन मिश्र : (बेगूसराय) नाम लीजिए ।

श्री भोगेन्द्र झा : यह चेलेंज करेंगे या यह खण्डन करेंगे, तो मैं नाम लूंगा ।

उपाध्यक्ष महोदय, ऐसी स्थिति में, मैं यह जानना चाहूंगा कि बिहार के जनमत ने क्या इन को इसीलिए चुना था कि आग लगाने के लिए या सारे कारोबार को ठप करने के लिए कुछ लोगों को मौका दो जबकि लाखों लोग चाह रहे हैं कि सरकार की नीतियों में परिवर्तन आए । सरकारी नीतियों को नहीं बदला गया और सरकार अगर मुनाफाखोरों या जमींदारों के साथ रहेगी, तो सरकार का भी परिवर्तन होगा । अगर सरकार यह फैसला कर लेती है कि वह व्यापारियों का साथ देगी, तो उस के लिए भी लोग तैयार हो जाएंगे । आज जिस तरह से सरकार का एक बहुत बड़ा अंग, अफसरों का एक अंग, मिनिस्टरों का एक अंग और आल इण्डिया रेडियो इन के सहयोग से जिस तरह से घटनाओं को प्रसारित कर रहा है, उस से

एक भयकर हालत पैदा हो गई हैं। आनन्द मार्गी और आर० एस० एस० श्री जय प्रकाश का समर्थन पा कर जो हत्याकाड बिहार में कर रहे हैं,, वह सारे देश के लिए खतरे की घड़ी है और जनतन्त्र के लिए चुनौती है। बाजपेयी जी के पटना जाने से पहले बर्ले साहब वहा पहुच जाते हैं ? बाजपेयी जी 16 मार्च को गये और वे उस से पहले पहुच गये। लेकिन इस सरकार के पास ताकत नही है, इस को लकवा मार गया है कि वह उन को परसन नान ग्रेटा डेक्लेयर कर दे, उस के पास इतनी ताकत नहीं है कि वह उन को देश निकाला कर दे। ऐसी स्थिति मे, उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस बात की ओर ध्यान दिलाना चाहता हू कि देश मे एक बहुत बडी अशान्ति लाने की साजिश है। जनमत के जरिये से देश के करोड़ों किसान, खेत मजदूर, कारखानो के मजदूर, दफ्तरो के कर्मचारी जो कि इस महँगाई से तबाह हैं, वे शान्ति पूर्ण तरीके मे सरकार से लडना चाहते हैं। वे उस सरकार की नीति मे परिवर्तन लाना चाहते हैं, जो कि व्यापारियो, मुनाफाखोरो, बडे जमीदारो और करोडपतियो से साजिश कर के आम जनता को मुसीबत मे डाल रही है? इसलिए उन का गुस्सा है। आज चोर व्यापारी, करोडपति सोलहो आने सरकार पर फासिस्ट रूप से कब्जा करके यह साजिश चल रहे हैं। इसलिए मैं समझता हू कि बाजपेयी जी के लिए यह खुशी की बात नही हैं। आखिर वे भी इसी वोट के बल पर आए हैं, श्री पीलू मोदी के लिए भी खुशी की बात नही होनी चाहिए। क्योंकि वे भी इसी वोट से यहां पर आए हैं। इसलिए मैं कह रहा हू कि हमें इस बात का विश्वास है कि आज नही तो कल, अगर देश मे शान्ति रही, देश का बहुमत, देश का लोकमत, श्रमजीवियो का बहुमत वोट के जरिये से, शान्त आन्दोलन के जरिये से पूजीपतियो की सत्ता को उखाड फेकेगा और देश को समाजवाद की ओर ले जाएगा और यह काम बिना खून-खराबे के होगा, लेकिन जो लोग आग से खिलवाड कर रहे हैं, वे यह कहते हैं कि देश को फौज के हवाले कर दो। यह मसानी साहब, जो कि पीलू मोदी साहब के साथी हैं और पहले इस पार्टी के अध्यक्ष भी थे, इस 'जेड' मेगजीन मे लिखते हैं। वे देश को फौज के हवाले कर देना चाहते हैं।

SHRI PILOO MODY (Godhra). On a point of order I think before somebody who is not in the Huose is mentioned there are well-established practices Nevertheless when somebody who is a leader of our party is mentioned in this flippant way by somebody who, after reeding the newspapers, does not understand it, I think there is something the Chair should do to protect not only the person who is not here but the reputation of the best party in India.

श्री भोगेन्द्र झा . उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा था कि 'जेड' नाम की मैगजीन में मसानी साहब ने लिखा है कि देश का फौज के हवाले कर दिया जाए और अपना काम चलाने के लिए फौज को जय प्रकाश जी जैसा या मेरे जैसा सलाहकार चाहिए। यह भी राय उन्होने दी। इसलिए मैं कहता हू कि जो लोग आग मे खिलवाड कर रहे हैं, वे समझ ले कि देश के श्रमजीवी कभी हिंसा पर उतारू नही हुए। संसार भर मे आप देखे वे कभी हिंसा पर नहीं उतरे। आप देखें कि रूस के जार ने चुनाव पद्धति को खत्म कर दिया, च्याग-काई-शेक ने चीन मे कभी चुनाव नही होने दिया

[श्री भोगेन्द्र झा]

और आज वह समुद्र में जल सेवन कर रहे हैं। अगर देश में कोई हिटलर के रास्ते पर चलने हैं, तो समाजवाद की रक्षा के लिए जनतन्त्र की रक्षा के लिए जनता लड़ेगी और हमें विश्वास है कि अगर कांग्रेस पार्टी में ताकत नहीं होगी, तो आम जनता के जोर से यह पार्टी फिर टूटेगी और ये लोग चोरबाजारियों को निकाल बाहर करेंगे और देश के सभी देशभक्त वे किसी भी पार्टी के हों, मिल कर जनतन्त्र को बचाएंगे और देश को समाजवाद की ओर ले जाएंगे और ये जो करोड़पति है, उन की दमड़ी भी जाएगी और और चमड़ी भी जाएगी।

इसलिए उपाध्यक्ष महोदय, बिहार में जो घटनाएं घट रही है, मैं आप के जरिये से सदन से और सरकार से आग्रह करूंगा कि निर्दोषों का कत्ले आम बन्द हो और जो यह गोली चल रही हैं, यह बन्द हो और सरकार के भीतर और बाहर जो लोग साजिश में लगे हुए है, इंटेलिजेंस से सरकार को भी मालूम है और अगर नहीं मालूम है, तो मैं खबर देने को तैयार हूं, उन अफसरों के खिलाफ कार्यवाही की जाए और वहां पर कुछ केन्द्र के अफसर भेजे जायें जो कि वहां पर शान्ति कायम रखें। वे लोग वहां पर संविधान का गला घोटना चाहते हैं और देश को बर्बाद करना चाहते है। यह चाहते हैं कि अगर बिहार में कामयाब हो जाएंगे, तो फिर यू० पी० और मध्य प्रदेश की सोचेंगे, लेकिन हम जनमत की रक्षा करेंगे। इसके लिए यह जरूरी है कि सरकार हिम्मत करे और एक बहुत बड़े पैमाने पर मुनाफाखोरों के खिलाफ अभियान चलाए। अभी बिहार में जो चोर व्यापारियों ने यह आग लगवाई और वहां पर रेलों को चलने नहीं दिया, तो चीजों की कीमतें ड्योढ़ी हो गई और व्यापारियों ने करोड़ों रुपया इस में कमा लिया। इसलिए मेरा सुझाव है कि वहां पर डी-होर्डिंग कम्पेन बड़े पैमाने पर चले और वह जन सहयोग से चले और जो भूमि-सुधार कानून पास हो गये हैं, पारित हो गये है, उन को सरकार लागू करे और गोली वहां पर न चलाई जाए और बी० एस० एफ० को वहां से हटा दिया जाए, तो बिहार के किसान, मजदूर मध्यवर्गी लोग, देश की रक्षा करेंगे, जनतन्त्र की रक्षा करेंगे और इस तरह से यह हिंसा का जो रास्ता अपनाया हुआ है और एक संकट पैदा हो गया है उस का टाला जा सकता है।

बस यही मुझे आप से निवेदन करना था।

SHRI PILOO MODY: What is all this santimonious humbug about democracy. They do not even have elections in their own party, let alone in the country of their mentors.

SHRI BHOGENDRA JHO: Shri Piloo Mody has no idea about democracy.

SHRI PILOO MODY: You have no idea of elections. You do not have elections in your party, and you are talking about democracy.

MR DEPUTY-SPEAKER: Shri Nawal Kishore Sinha.

Order, please. Now, I have been requested by the Whip of the Congress Party that the Congress Members may please take not more than seven minutes each in order to give chances to as many as possible. (*Interruptions*).

SHRI NAWAL KISHORE SINHA (Muzaffarpur): I could not follow.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I have been requested by the Whip of your party to allow the Congress Members seven minutes each in order to accommodate the maximum number.

SHRI NAWAL KISHORE SINHA: When I am in the Chair I try to maintain discipline, and therefore, I shall keep that in view.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Thank you.

श्री नवल किशोर सिंह : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यहां जिस विषय पर हम लोग विचार कर रहे है वह गम्भीर चिंता का विषय है ऐसा हमें भाव लेना चाहिए और इस में कोई छोटी मोटी बातें लाने या छोटी-मोटी भावनाओं से प्रेरित होने का सवाल नही उठता है। हमारे पूर्व वक्ता श्री भोगेन्द्र झा ने अपने भाषण में बार-बार इस बात पर जोर दिया कि ये लोग जो पीड़ित हुये हैं वे निर्दोष है। इसमें कोई शक नहीं कि समय की गम्भीरता का उन्होंने भी ख्याल रखा। लेकिन जहां तक इन लोगों को निर्दोष घोषित करने का सवाल है हमें अपने मित्र से यह उम्मीद करूंगा कि जो कुछ आन्दोलन हो रहा है उस आन्दोलन की बुनियाद में क्या है उस को जानने की कोशिश करें। इस आन्दोलन का बिहार में नारा क्या है? इस का नारा है—पैरालाइज दि गवर्नमेंट, सरकार के सारे काम काज को बन्द कर दिया जाय। आज बिहार में जो कुछ भी हो रहा है उस का उद्देश्य जो कुछ भी हो लेकिन जो उस उद्देश्य को प्राप्त करने का माध्यम है वह माध्यम है कि सरकार के सारे कार्यक्रमों को बन्द कर दिया जाय। गया के बारे में जो कुछ आप लोगों से सुना वह उसी आंदोलन का एक अंग था। 48 घंटे तक जनरल पोस्ट आफिस और टेलीफोन एक्सचेंज का घेराव, बार-बार अफसरों के मिन्नत और खुशामद करने के बाद भी घेराव का न हटाया जाना और तीन व्यक्तियों के गिरफ्तार होने पर हजारों व्यक्तियों का जमा हो कर गिरफ्तार व्यक्तियों को छुड़ाने की कोशिश करना, ये बात यह बताती हैं कि इस सब का उद्देश्य था सरकारी कामकाज को बन्द करना। अब मैं एक बात आप से जानना चाहता हू कि सरकारी कामकाज बन्द हो जाय, सदन या सदन का कोई सदस्य चाहे वह इधर का बैठने वाला हो या उधर का बैठने वाला हो, क्या इस बात का किसी अंश में भी वह समर्थन करता है? मेरा ख्याल है कि चाहे वह इस पक्ष के हों चाहे उस पक्ष के हों, इस की वकालत नहीं कर सकते।

हमारे देश में विद्यार्थियों का समाज एक बड़ा समाज है और नौजवान समाज है। जो लोग इस आंदोलन को बढ़ाना चाहते है वह ऐसा कह रहे हैं कि इस आन्दोलन मे विद्यार्थी मारे गए, इस आन्दोलन में विद्यार्थियों के साथ दुर्व्यवहार हुआ। लेकिन जो लोग वहां मारे गए हैं उन में चाहे वह जांच हम लोगों ने कराई हो या सरकार ने कराई हो, दो विद्यार्थी थे।..(व्यवधान).. वे लोग दावा करते है तो हम मान लेते है लेकिन उन के दावा करने के बाद भी दो ही थे। जो 13 घायल हैं उन में एक भी विद्यार्थी नहीं

[श्री नवल किशोर सिंह]

है। जो 88 गिरफ्तार हुए और जेलों में हैं उन में एक भी विद्यार्थी नही है। तो मैं आप से यह जानना चाहता हूं कि इस तरह से हमारे देश के नौनिहालो को भडका कर और उन की आड मे छिप कर जो लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति करना चाहते है वह क्या देश की सेवा कर रहे हैं या देश के साथ गद्दारी कर रहे है ?

जो कुछ गया मे हुआ उस को देखे। 12 बजे से अफसरो ने मिन्नत और खुशामद शुरू की और वह खुशामद चलती रही 4 बजे तक। पहली फायरिंग गया मे 4 बजे हुई थी। 4 बजे के बाद जब स्थिति बेकाबू हो गई तो कोई भी व्यक्ति चाहे भोगेन्द्र झा हो या ज्योतिर्मय बसु हो अगर वह सरकार मे हो और ऐसी हालत हो तो वह क्या करेंगे वे 4 बजे तक रुकते इस में भी मुझे सन्देह है। मै आप से यह भी कहना चाहता हूं कि यह क्यो हो रहा है ? यह हो रहा है इसलिए कि लोकतन्त्र मे हमारे देश मे चुनाव हुए हैं। मै नही कहता कि मैं भारत में सब से अच्छी पार्टी हूं। लेकिन मेरा यह दावा जरूर है और सन्त विनोबा जैसे सन्त ने इस बात की पुष्टि की है कि हम आप सब से अच्छे है। यह उन का स्टेटमेंट एक जगह नहीं बल्कि जगह का है। अब चुनाव में आप जीतते नही हैं तो यह कौन सा तरीका है चुनाव की हार का बदला लेने का ? इस में कांग्रेस जन का तो नुकसान नहीं होता। यह ठीक है कि मुजफ्फरपुर में दो एम एल ए को मारने की कोशिश की गई और बिहार के एक एम पी का घेराव हुआ। लेकिन आप बदला इस तरह से लेना चाहते हैं ? आप फिर सोचिए कि क्या कर रहे हैं ? चुनाव की हार का बदला लेने का जो तरीका है यह बड़ा ही नेफेरियस है और यह हमारे लोकतन्त्र का नाश कर देगा। इस मे उन का भी नाश होगा, वह भी बचेंगे नही।

एक बात मैं और कहना चाहता हूं। इस में कोई शक नही कि बिहार में हिंसा को रोकने में जयप्रकाश जी का योगदान रहा है। लेकिन जय प्रकाश जी को सोचने की जरूरत है कि वह जो कुछ कर रहे हैं उस का लाभ कौन उठाएगा। क्या उन के पास डेमोक्रेसी को चलाने के लिए कैडर है ? इस का लाभ फिर कौन लोग उठाएंगे ? उन की जो फिलास्फी आफ नान-वायलेंस है और जो पार्टीलिस गवर्नमेंट की फिलास्फी है क्या एक भी आदमी विरोधी दल में ऐसा है जो उन के इस आदर्श को ले कर चल सकता है ? उन की फिलास्फी आफ नान-वायलेंस को ले कर चल सकता है ? उन की पार्टीलैस गवर्नमेंट को ले कर चल सकता है ? आज जयप्रकाश बाबू को यह सोचने की जरूरत है कि वह जो कुछ कर रहे हैं उस का लाभ कौन उठाएगा ?

मैं एक बात और गृह मन्त्री दीक्षित जी से कहूंगा कि बिहार मे 7 लाख टन का रेकरिंग डेफिसिट है आजादी के पहले से। हम ने अनाज बढ़ाया है 50 लाख टन से बढ़ कर 90 लाख टन पर आ गए हैं लेकिन हमारी आबादी भी बढ़ गई है। इस 7 लाख टन की पूर्ति तो बिहार ने करनी ही है। अगर बिहार का साराडीहोडिंग हो जाय तब भी यह 7 लाख टन का डेफिसिट तो रहने ही वाला है। इसलिए केन्द्रीय सरकार को इस के ऊपर आत्म-निरीक्षण और आत्म-परीक्षण करने की जरूरत है। जो चार प्लान हुए हमारे देश के उस मे पर कैपिटा आउटले बिहार में कितना हुआ ?

लोएस्ट इन दि कन्ट्री 99 रुपए। शायद हमारे मुकाबिले वेस्ट बंगाल ही खड़ा हो सकता है जहां पर कैपिटा आउटले 73 रुपये है। तो इस बात को भी ध्यान में रखने की जरूरत है। दूसरी बात मैं अपने मित्रों से कहना चाहता हूं कि वे लोग चुनाव में अपनी हार का बदला इस तरह से हम से न लें। फिर चुनाव की ही तैयारी करें और बिहार में जो कुछ हो रहा है उस को रोकने में सहयोग दें।

श्री भागवत झा आजाद (भागलपुर) उपाध्यक्ष महोदय, बिहार की स्थिति से हम सब को गहरा दुख और क्षोभ है। इस का प्रारंभ वहां के विद्यार्थियों ने अपनी मांगों को ले कर किया। लेकिन प्रश्न यह है कि इन मांगों के नाम पर जो आज वहां पर आग, लूट और संहार की घटनाएं हो रही हैं उन के लिए जवाबदेह कौन है? मैं इस बात को पूर्णतया मानता हूं कि गणतन्त्र में अपनी मांगों के लिए शान्तिपूर्ण प्रदर्शन और धरना ये तमाम चीजें सही हैं। लेकिन इस की आड़ ले कर आज बिहार राज्य में आग और लूट की घटनाएं हो रही हैं इसके लिए जवाबदेह कौन है। विद्यार्थियों ने बार बार इस बात के लिए कहा कि इस आग और लूट में उन का हाथ नहीं है। उन के नेताओं ने कहा, उन सब ने यह कहा। विद्यार्थियों की मांगों का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं। अगर विद्यार्थी मांगते हैं अच्छी शिक्षा पद्धति या विद्यार्थी मांगते हैं पढ़ाई, विद्यार्थी चाहते हैं उन को चीजें कम दामों पर मिलें, उन्हें कम खर्च पर पढ़ने की सुविधा दी जाए तो इस में कौन सी दिक्कत है? अगर विद्यार्थी कहते हैं कि हमें स्वस्थ शासन चाहिए तो इस में कौन सी बात गलत है लेकिन प्रश्न यह है कि इन मांगों के लिए बिहार के विद्यार्थी शाम को प्रदर्शन करते हैं तो उन के पीछे एक हाथ में पैट्रोल और किरासिन का टिन लेकर, एक हाथ में दियासलाई लेकर कौन चलता है? इन विद्यार्थियों को आगे कर के उन के पीछे आग कौन लगाता है? मुख्य प्रश्न तो यह है कि आग कौन लगाता है.....

श्री पीलू मोदी: सी० पी० आई० के लोग।

श्री भागवत झा आजाद: पीलू मोदी कहते हैं कि आग लगाने वाले ऐसे व्यक्ति हैं जो उग्र-वामी पार्टियों के हैं, प्रतिक्रियावादी पार्टियों के हैं– उदाहरण स्पष्ट है। अब अगर आप गया की फायरिंग की बात करते हैं तो यह भी पता लगाइये कि गया में टेलीफोन एक्सचेन्ज को किस ने नुकसान पहुंचाया....

एक माननीय सदस्य: सत्याग्रहियों ने।

श्री भागवत झा आजाद: सत्याग्रहियों के नाम पर आग लगाना और सत्याग्रह इस दोनों में फर्क होता है — माननीय संसद् सदस्य इस बात को समझ लें — आग लगाना एक बात है और धरना देना दूसरी बात है – आज इन तमाम चीजों के नाम पर चुनाव में हारी हुई पार्टियां हमारा मुकाबला करती हैं, हमारा घेराव करती हैं। याद रखिये, हम भी आप का घेराव कर सकते हैं। आज अगर आप असेम्बली को, विधान सभा को, लोक सभा को तोड़ना चाहते हैं तो आप कहां रहेंगे? मैं कतई इस बात का विरोध नहीं करता हूं कि इन बातों के लिए शान्ति पूर्ण प्रदर्शन किया जाए, लेकिन अगर आप कोई बन्द कर के शासन को समाप्त करना चाहते हैं शासन को चलने नहीं

[श्री भगवत झा आजाद]

देना चाहते हैं तो हम समझते है कि आप जनतन्त्र मे विश्वास नही करते हैं । लेकिन हम जननन्त्र मे विश्वास करते है और हम कहते हैं कि हम विद्यार्थियो की मागो का समर्थन करते है। हम इस बात का समर्थन भी करते हैं कि इस बात की जाच कराई जाए कि सर्च लाइट प्रेस किस ने जलाया, सर्च-लाइट प्रेस जलानेवालो की एन्क्वायरी कराई जाए, हम इस बात की जोर दार माग करते हैं उन के सम्पादक ने, प्रदीप के सम्पादक ने, जो बयान दिया है, वह बडा भ्रामक है, कठोर है, बडा अजीबोगरीब है। मैं समझता हू कि कांग्रेस पार्टी और हम सभी लाग प्रेस की आजादी मे विश्वास करते है और हम बराबर विश्वास रखेंगे, इस मे हम उन का समर्थन करते है। इसलिए हम माग करते है कि सर्च लाइट प्रेस जलाने वाले को पकडा जाए, सजा दी जाए। अगर इस बात मे हम पीछे हैं तो हमें सजा दी जाये । लेकिन मैं इस बात को भी नही मानता कि बिहार में जो आग लगाई गई, जो होटल जलाया गया, जो आफिस जलाया गया, वह विद्यार्थियों ने किया । वह जलाने वाले आप थे, जिन्होंने लोगों को भडकाया, जिन्होंने विद्यार्थियों को आगे किया, जब गोलिया चली तो आप भाग गये और विद्यार्थी मारे गए।

गया के बारे मे अभी नवल किशोर जी ने बतलाया कि 8 मारे गए, लेकिन उन मे मुश्किल से एक विद्यार्थी है, एक सम्भवत: हो या न हो, लेकिन ये 6 कौन है ? 13 व्यक्ति घायल हुए, इन मे कौन से विद्यार्थी है, एक भी विद्यार्थी नहीं है । 88 गिरफ्तार हुए, इन मे कितने विद्यार्थी है ? इस लिए मैं आप से कहना चाहता हूं कि आप नाम पर न जाइये, मैं अपनी पार्टी की तरफ से कहना चाहता हूं कि हम सब मिल कर इस पर विचार करे। क्या विधान सभा टूट जानी चाहिए, अगर इस को तोड़ दिया जाना चाहिए, तो लोक सभा को भी तोड़ दिया जाना चाहिए तब फिर जब कल चुनाव होगा और अगर कही चुनाव मे आप का सपना सफल हो जाए, आप जीत जाएं, आप की सरकार बन जाए, तो फिर हम भी कहेंगे कि उस को तोड दिया जाए।

इस लिए प्रश्न बडा साफ है—प्रश्न सिद्धान्त का है— जहा हम उन की मागों का समर्थन करते है वहा इन राजनीतिक पार्टियों के दाव-पेच को भी समझते है कि वे इन विद्यार्थियों की शक्ति का उपयोग नही , दुरुपयोग करना चाहते हैं । यहा बार बार कहा गया है कि केन्द्रीय सरकार ने सी० आर० पी० और पी० एम० एफ० का उपयोग किया, यह क्यो करने दिया गया । क्या आप यह नही मानते कि तमिलनाडु मे विपक्ष की सरकार है, पाण्डिचेरी मे कल थी, अगर वहा शासन व्यवस्था भग हो जाए और अगर वे बी० एम० एफ० भेजने की सहायता मागें तो उन को न दी जाए। क्या आप का समर्थन करेंगे, मैं समझता हू कि आप नही करेंगे। इस लिए बिहार सरकार को भी अधिकार था कि ऐसी परिस्थिति मे इस फोर्स को बुलाए। लेकिन इस के आगे बढ़ कर मैं स्वयं कहता हू कि अगर शान्ति और व्यवस्था कायम करने वाली इस फोर्स ने कोई दुरुपयोग किया है तो निश्चय ही गृह मन्त्री जी सजा दें। मैंने स्वयं भागलपुर शहर का उदाहरण रखा है—वहा की स्थानीय पुलिस ने वहा के एक नौजवान को, जो अपनी बेटी का श्राद्ध कर रहा था, आख फोड़ दी, उसके हाथ तोड़ दिए।

लेकिन ऐसे कुछ उदाहरण इस बात का सबूत नही है कि आग लगाने वाले पर बी०एम०एफ० या सी० आर० पी धावा न करे, हमला न करे मैं जोरदार शब्दो मे माग करता हू कि ऐसे तत्वो का दृढता से मुकाबला किया जाये क्योकि इस से आप के शासन के प्रति, इस फार्म के प्रति आदर होगा, वरना इसके प्रति अनादर होगा।

एक सभ्रात नागरिक शाह मन्सूर के घर पर पुलिस ने छापा मारा और कहा कि हम कल्प्रिट को खोज रहे हैं। भले सज्जन के घर कल्प्रिट के नाम पर उसके बक्से खोजने लगे—ऐसी बातो की जाच होनी चाहिये। लेकिन जहा तक बुलाने का सवाल है हमे फख्र करना चाहिये कि कोई भी सरकार जरूरत पडने पर ऐसी फोर्स को बुलाये।

आज बिहार मे राजनीतिक स्तर पर एक बडा कदम काग्रेस ने उठाया है। उन्होंने वहा के मत्रियो की सख्या 46 से 14 की है, इसलिये की है कि आप स्वय कहते है कि काम्पैक्ट सरकार होनी चाहिये, बडा मत्रि-मडल नहीं होना चाहिये। मत्रियों की सख्या कम होनी चाहिये। मैं उम्मीद करता हू कि यह नया मत्रिमडल कुछ नये कदम उठायेगा . . .

श्री श्यामनन्दन मिश्र . सुरेश कुमार जी उसमें नही हैं।

श्री भागवत झा आजाद . इस नये मत्रिमडल को तुरन्त अपने प्रशासन मे सुधार करना चाहिये। वहा के उन भ्रष्ट अधि-कारियो को निकाल बाहर करना चाहिये, जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिये और खाने-पकाने के लिये काम किया है, जहा के डवलप-मेंट कमिश्नर, जहा के डिप्टी चेयरमैन, प्लानिंग कमीशन, चेयरमैन ने अपने स्वार्थ के लिये गोड्डा समग्र विकास समिति बना दी, वहा के एम० पीज को नही पूछा, वहा के एम० एल० एज को नही पूछा, वहा के पोलिटिकल पार्टीज को नही पूछा, अपने खाने के लिये सोसायटी रजिस्टर कर ली, इन व्यक्तियों के खिलाफ अविलम्ब कार्यवाही की जाय, ये शर्म-शर्म के लायक हैं। वहा के मत्री मडल को इनको निकाल बाहर करे। वहा के मत्रिमडल विद्यार्थियों के साथ सीधी बात करे, राजनीतिक पार्टियों के जरिये नही। उनके नेताओं को छोडें और कहे कि तुम्हारी मागो के लिये बात करना चाहते हैं। और उनका अविलम्ब सुधार करेंगे। वहां का मत्रिमडल बिहार के जमाखोरो, मुनाफा-खोरों के खिलाफ़ कार्यवाही करे, कीमतो को कम करने के लिये, स्वस्थ शासन के लिये कार्यवाही करे।

जहा तक कीमतो का प्रश्न है—गृह मत्री जी यह काम आपको स्वय भी करना होगा। केन्द्रीय स्तर पर इसके लिये 10 रुपये से अधिक के नोट्स का डीमोनिटाइ-जेशन कीजिये, यह बहुत आवश्यक हैं। उत्पादन अधिक होने मे कीमते घटेंगी, उत्पादन अधिक होने के लिये देश मे शान्ति और व्यवस्था चाहिये। धरना कम हो, हडताले कम हो ऐसे ठीक मे चलायी जाये, इनकी हडताले बन्द हो। ये तमाम बाते राष्ट्रीय स्तर पर बिना किसी पार्टी का बिल्ला लगाये हम सभी को करनी चाहियें। हम विश्वास करते हैं कि वहा की छात्र सघर्ष समिति इन बातो पर विचार करेगी और वहा के नये मत्रिमडल से बात करेगी।

मैंने आपके समक्ष निम्न सुझाव दिये है—

1 स्वस्थ शासन, प्रशासन मे परिवर्तन।

2. नोटों का मुद्रीकरण।

3. इकानामिक कादम्ज का कोडिफि-केशन किया जाये कि जमाखोरों, मुनाफाखोरों

[श्री भगवत झा आजाद]

के खिलाफ, जो कीमतें बढ़ा कर परेशानी पैदा करते हैं, उनके खिलाफ कार्यवाही की जा सके।

उपाध्यक्ष महोदय : ला एण्ड आर्डर का प्रश्न एब्सोल्यूट नहीं है। ला एण्ड आर्डर का सीधा सम्बन्ध मनुष्यों के पेट और भूख से है, अन्न की कमी को पूरा किया जाये। जमाखोरों, मुनाफाखोरों और बाजपेयी जी के मित्रों के खिलाफ धावा बोला जावे, जो कीमतें बढ़ाते है। हमारा विश्वास है कि इन तमाम चीजों को करने के लिये वहां का राजनीतिक नेतृत्व, प्रशासनिक नेतृत्व कुछ काम करके दिखलायेगा, हम उनके साथ है। लेकिन अगर वे इन बातों को नहीं करते है तो मै यह कहूंगा—

समय शेष है, नहीं पाप का अपराधी है व्याध,
जो तटस्थ है, जो पक्षस्थ है, जो पीछे है
(हाथ मे टिन लेकर) समय गिनेगा उनका भी अपराध।

SHRI SATYENDRA NARAYAN SINHA (Aurangabad): Mr. Deputy-Speaker, Sir, the discussion on subject of this dimension has arisen because of the point raised by Shri Jotirmoy Bosu the other day about the use of excess force by the BSF in Gaya. The hon. Members who have spoken before me have referred to the explosive situation in Bihar. There is no doubt that. But I was surprised to hear the adverse criticism given to Shri Jayaprakash Narayan from this forum. Unfortunately, he is not here to defend himself. But it is known to all of us that Shri Jayaprakash Narayan is not there to destroy democracy. He has made it very plain that he wants to preserve democracy, to give more content to it. He does not believe only in formal democracy. The organisation that he has set up is for saving democracy. While I am not here to defend him. I must say that but for his leadership Bihar would have been facing a large violent movement today. It is because of his gracious personality and leadership that the movement in Bihar is peaceful and non-violent.

I would like to ask some questions here. Who started the movement on the 16th March in Betiah? Who started the movement on the 17th March in Patna? It was not the students. The Students' Committee appeared on the scene on the 18th March. Nobody accuses them of having resorted to violent activities. It is they who came out with a statement condemning arson and looting done by anti-social elements. The Students Action Committee is a non-political committee. Members owed allegiance to all parties, including the ruling party. Therefore, to characterise such a body as being engineered or supported by any political party would be wrong and it would not be giving a correct picture to the House.

The discussion today is on the points raised by Shri Jyotirmoy Bosu on the happenings in Gaya. What happened in Gaya on the 12th of April? The statement made by the Home Minister has pained me because it is a gross understatement of what happened on the 12th April. He has stated that firing had taken place at three places only. He has mentioned that only eight persons were killed and ten persons injured. This is a gross understatement. Even the subsequent reports that the Home Minister might have got would confirm this statement or mine that firing was resorted to at five places at least, if not at six places. The firing never took place near the Telephone Exchange as stated by the Home Minister. The number of persons killed in the firing would be more than 50.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT): There were five firings at three places.

SHRI SATYENDRA NARAYAN SINHA: It was never near the Telephone Exchange, as was mentioned by the Home Minister in his statement. I say that the firing took place at five places. My information is from a source which cannot be considered to be hostile to the State Government or the ruling party. The number of persons killed would be more than 50. I have with me a list of at least 17 persons who were killed in the firing.

Sir, if you would permit me, I am prepared to read out the list of the persons who have been killed. One man lost his right hand.

What was the genesis of the trouble? Actually, the tension built up on the 11th April when Sargeant Lal took into custody four ladies and wanted to take them away. He has a very unsavoury reputation in Gaya. People sourrounded him. It was the intervention of the District Magistrate, who arrived on the scene, and on the assurance by D.M. that Sargeant Lal would be withdrawn to the police line, that the people were pacified. On the 12th April what happened was that one Manoj Kumar Bose was arrested along with two ladies. His mother and other persons, including women, prostrated before the jeep to prevent the arrested persons being taken away. When the policemen caught hold of those ladies by hand, it infuriated the mob. Although there were women constables, they were not utilized. This infuriated the mob and somebody from the crowd threw a brickbat. That started the trouble. The Home Minister might have received subsequent reports to show that there was no tear gas party. There was only a lathi party. The SDO and DSP came with one havildar and four armed police, with whom they wanted to control the crowd. When they failed in their attempt, they requisitioned the services of the BSF and the CRP.

We are not against the deployment of BSF as such. I have great admiration for them. The BSF has been reared up by a person with imagination, drive, skill and dedication, namely, Shri Rustomji, the Director-General of the BSF. He has stated only recently that they should not use 303 lethal weapons for quelling riots, they should have a humane approach and that they should develop riot guns to deal with the situation so that it may not prove lethal. Shri Jayaprakash Narain has also appreciated this humane approach What has pained us that the personnel of the BSF should have chased people who were running away, and fired at them. There was curfew for 39 hours continuously without a break to provide cover to the administration to dispose of the dead bodies without being detected.

The District Magistrate says that he did not issue the shot at sight order. At least that is what the Home Minister has said in his statement. There are many persons who have said that they have heard Shri Thakur, the Public Relations Officer, Gaya, announcing from the mike that anybody violating the curfew would be shot dead. The Government has denied it. The District Magistrate later on stated "no, it was meant for those who were indulging in arson and looting."

The hon. Member, Shri Bhagwat Jha Azad, has given some instances of excesses committed by the BSF. I am not making a statement of my own. I am only relying on the statement of Shri Jai Kumar Palit, President, Town Congress Committee, Gaya, belonging to the ruling party, that the personnel of the BSF chased people away, pursued them, entered even his private apartment, beat the inmates mercilessly, including his uncle, Shri Hari Prasad, a freedom fighter aged 80. Is it something which is normal for the BSF force to do? While I have all admiration for them, they will lose our respect and admiration if they behave like this.

[Shri Satyendra Narayan Sinha]

Shri Jai Kumar Palit, Shri Mudrika Singh, ex-MP and former General Secretary of the BPCC and Dr. Jugal Kishore Prasad, MLA, all of the ruling party, have demanded a judicial probe into the excesses committed by the BSF. Shri Mudrika Singh has stated that they were virtually interned in their houses and that they were not allowed to go out. The District Magistrate did not hold even a press conference nor did he issue curfew passes even to MLAs. So they were not allowed to go out and see what was happening. At that time the dead bodies were being disposed of. We are told that they took the dead bodies to five places for burning. One driver of a Government vehicle has stated that he was employed for taking away dead bodies to Dehri-on-Sone for disposal.

If there is a judicial enquiry, all these facts would come out. I would, therefore, say that either the Home Minister should graciously agree to a judical probe or, alternatively, appoint a committee of this House to go into this question. Let some members of the opposition and the ruling party go there and hold an enquiry. Shri Jaiprakash Narayan has appointed a non-official committee, which has its owns status. You cannot say that a non-official committee has no importance. After the Jallianwalla massacre Motilal Nehru headed a non-official committee to go into it. Even though Shri Jaiprakash Narayan has appointed a non-official committee so that all the facts might be collected, it would be better if the Government appointed a judicial committee which would command the confidence of the people and let a time limit be fixed for the report. Therefore, my submission is, whatever my hon. friend, Shri Bhogendra Jha, and others have said, the Students' Action Committee has not been inspired by any political party. Secondly, the movement is being conducted on peaceful and non-violent lines....

13.00 hrs.

SHRI BHOGENDRA JHA: They are demanding the dissolution of the Assembly.

SHRI SATYENDRA NARAYAN SINHA: When they came out with their demands, I suggested in this House, the other day, that their demands should have been discussed with them. But nobody cared to talk to them. The Government was keeping quiet. Now, they have increased their demands.

My hon. friend, Shri Bhagwat Jha Azad, has said that the Ministry has been cut down to 14. I would like him to consider for himself: Will this Ministry deliver the goods? Are they capable of taking the action that he has suggested. No. Then, it is being said that this is the politics of disruption. I say, it is the callous attitude, the cavalier attitude, of the Government which is driving people to despair and desperation. I would say, actually, it is not the politics of disruption but it is the politics of despair and desperation.

श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव: (मधेपुरा): उपाध्यक्ष जी, बिहार में गत महीने में जो वाकयात हुये और अभी जो हो रहे हैं, वे वास्तव में चिन्ताजनक और शर्मनाक हैं। हम इस सदन के इस भाग के लोग उस से ज्यादा चिंतित हैं बजाये उस भाग में लोगों से क्योंकि वे लोग इसके पीछे हैं और वे लोग इन्हें कराने में अपना सहयोग दे रहे हैं।

13.03 hrs.

[SHRI VASANT SATHE in the Chair]

यह बात सही है कि दुनियां की हालत [अनाज के मामले में तथा और मामलों में [बिगड़ गई है और उसके साथ साथ भारत

और बिहार की भी। इसी बीच मे यू० पी० और कुछ और प्रदेशो के चुनाव आये और विरोधी दलो मे यह मसूबा बनाया कि वे वहां अपनी सरकार बना लेगे और इस बिगडी हुई हालत से नाजायज फायदा उठायेगे. लेकिन वास्तव मे परिणाम दूसरी तरह का निकला। उनके सब मसूबो पर पानी फिर गया। वहा की जनता ने उनको यह बता दिया कि अभी उनकी आस्था कांग्रेस के ही साथ है। इससे बिगड कर विरोधी पार्टियो ने और खास कर हमारे वाजपेयी जी की पार्टी ने यह समझा कि उन्हे दूसरा तरीका अपनाना होगा। मुझे याद है चन्द एक माननीय सदस्यो ने यह बात इसी सदन मे कही थी कि यदि हम वोट से सरकार नही बदल सके तो चोट से सरकार को बदलेगे, (व्यवधान) . उसी साजिश के फलस्वरूप आज ये वाकयात पटना मे देखने मे आये है क्योकि गत महीने 16 तारीख और 18 तारीख को जो कुछ बिहार मे हुआ उसकी जाच पडताल से जो कुछ निकला है, उससे यह साबित हो चुका है कि उसमे किन लोगो का हाथ था। यह बात भी सदन के सामने आ चुकी है कि पटना में डिस्टिरबेंस होने से पहले यहा के चन्द एक नेता वहा पर गये थे और वहा जाकर उन्होने जेल मे आनन्द मूर्ति जी से बाते की और उसके बाद ही बिहार मे ये घटनायें घटी। आगे आगे वाजपेयी जी जाते है और पीछे से ये घटनाये बिहार मे घटती हैं। जहा वे उधर से आय और ये घटनाये हुई... (व्यवधान)..., वहा जो बात हुई है, उनमे यह देखा गया हैं कि आनन्द मार्गी लोग उस भीड मे थे। इससे यह साफ जाहिर होगा कि इन उपद्रवों के पीछे कौन है। विरोधी दलो के लोगो ने यहा पर जोरदार शब्दो से कहा कि विद्यार्थियो का यह एजीटेशन था और उनकी कुछ मांगें थीं। विद्यार्थियो की जो मांगें हैं, हकीकत यह है, कि ये राजनीतिक मागे है, और यह एक राजनीतिक साजिश है।

सभापति जी, हमारे यहा अभी 15 प्रतिशत ही लोग मुश्किल से ऐसे खुशकिस्मत है जो कि अपने बच्चो को कालेजो और स्कूलो मे पढने के लिये भेज सकते है और 85 प्रतिशत अभी भी ऐसे लोग है जो कि गावो मे रहते हैं, और जो अपने बच्चो को कालेजो मे पढने नही भेज सकते है। उन 15 प्रतिशत म मे 5 प्रतिशत ही ऐसे लोग होगे जो कि इन विरोधी दलों के बहकावे मे आ कर इस षडयंत्र मे सहयोग करेंगे। यह भारत की खुशकिस्मती है कि वे 85 प्रतिशत लोग ऐसा कोई काम नही करते है। जिनको लायन शेयर मिल रहा है, वही ऐसा कर रहे हैं और 25 वर्ष की आजादी के बाद भी जिनको कुछ नही मिला है, वह गड बड नही करते हैं। और शान्त हैं यदि वे बिगड जाये, तो आप समझ सकते हैं कि विरोधी दलो का क्या हाल होगा और उसके साथ साथ हमारा भी क्या हाल होगा। मैं अपने को एक एक्सक्लूड नहीं करता हू। उनके साथ हमारा भी क्या हाल होगा, इसका आप अन्दाजा लगा सकते हैं। इसलिये मै अपील करना चाहूगा और खास कर वाजपेयी जी और उनके दल के लोगो से और आप सभी से कि कम से कम इस आग को आगे न भडकाये जिसमे हम सारे लोग झुलसकर मरने वाले हैं।

[श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव]

अभी जो गया में घटनायें हुई हैं, उसकी बात आई और हमारे कुछ दोस्तों ने यह कहा है कि यह स्टूडेंट्स एजीटेशन है। मैं आपको बताऊं कि 8 मृतको में से एक को आइडेंटी-फाई किया गया है कि वह स्टूडेंट है, छः को कहा गया है कि वे स्टूडेंट्स नहीं हैं और एक के बारे मे अभी स्थिति सन्देहजनक है, वह क्लियर नही हो पायी है। इसी तरह से 88 लोगो को जो गिरफ्तार किया गया है, उनमें एक भी विद्यार्थी नही है और पालीटिकल पार्टीज के कार्यकर्ताओं को उसमें आइडेंटी-फाई किया गया है। इससे साफ जाहिर होता है कि दुर्घटनायें कौन कर रहा है और इनमें किन की साजिश हैं और किन का हाथ है।

गया मे जो उपद्रव हुये, उनमे श्री नवीन कुमार सिन्हा के बारे मे बताया गया है कि उनकी गोली से मौत हुई। उनके शरीर से एक पिलेट निकला है। पुलिस की तरफ से 303 के अलावा दूसरी गोली नही चली और उनके शरीर से पिलेट का हिस्सा निकला है। इससे आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि क्या साजिश है। इसी तरह से कहा गया है कि जैन मन्दिर मे गोली का दाग है। जब यहां से लोग गये और उस दाग को देखा तो यह पाया गया कि वह एक डेढ़ इंच तक छेद है पर उसके अन्दर से कोई गोली नही निकली इन सब बातो से जाहिर है कि क्या क्या साजिश की गई और क्या यह कराना चाहते है और किसके इशारे पर ये सारे वाकयात हो रहे हैं।

श्री ईश्वर चौधरी (गया) : इसकी न्यायिक जांच हो.... (व्यवधान).. ।

श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव : एक बात और जाहिर होगी। इस बीच जब पटना में वे वाकयात हुए, तो हमारे एक दोस्त हमारे जिला सहरसा में गये हुये थे। वहां इन पालिटीकल पार्टीज ने खास कर जन संघ पार्टी के लोगों ने किस तरह से हमारे माननीय सदस्य, श्री, चिरंजीत झा, जो यहां पर बैठे हुए हैं, को जलील किया और बाद में जब इंक्वायरी हुई तो इन के एक एम० एल० सी० एरेस्ट हुए और सोशेलिस्ट पार्टी के कई कार्यकर्ता एरेस्ट हुए है। तो इस से जाहिर होगा कि किस तरह से पालीटीकल पार्टी ने यह तय कर लिया है, वास्तव में डेमोक्रेसी में जिन का विश्वास नही है, कि वे देश को बर्बाद कर देंगे। हम उन्हें आगाह नहीं बल्कि चेतावनी देना चाहेगे कि यदि वे ऐसा करते रहेंगे, तो हम को भी बाध्य होकर कुछ करना होगा। यह देश के लिए खतरनाक बात है और जनता तो इसके लिए कुछ करेगी ही लेकिन जनता यदि बिगड गई तो जैसा कि मैं ने पहले कहा उन के लिए तो खतरा है ही, हमारे लिए भी खतरा होगा। इसलिए मैं उन से आग्रह करूगा कि वह इस तरह की कोई कार्यवाही न करे जिससे देश को खतरा पहुंचे। यह पार्टी की बात नही है, यह देश की बात है। संवैधानिक तरीके से वे अगर कुछ करे, तो उससे हमे एतराज नही है लेकिन उन को हिंसा का सहारा नही लेना चाहिये।

हमारे यहा मधेपुरा मे 19 तारीख को फायरिंग हुई थी। मैं वहा पर गया था। स्टूडेंट्स की जो डिमांड है, उसका मैं समर्थन करता हू। हम ने देखा जहां फाइरिंग नहीं होनी चाहिए थी वहा फाइरिंग हुई। इक्वायरी जो चल रही है, उस से पता चल रहा है कि किस तरह से पोलीटीकल पार्टीज के लोग उस के पीछे थे और किस तरह से वे साजिश कर रहे हैं। ये सब बातें हो रही हैं। जो लोगो की माग है और जो स्थिति वहां पर है, उस को देखते हुए वहां पर अनाज ज्यादा दिया जाए और वहा जो दूसरी दिक्कतें हैं, उन-को दूर किया जाए और जैसा कि हम ने पहले भी कहा है, कि उस में हम उन से सहयोग करना चाहते हैं। यदि वे शान्तिपूर्ण ढंग से कोई

काम करना चाहते हैं और डैमोक्रेटिक तरीके से इस तरह की कोई मांग रखते हैं तो हम उनका समर्थन करते हैं चाहे वह विद्यार्थियों की मांग हो या किसी और की मांगें हों, लेकिन हम नहीं चाहते कि देश बर्बाद हो और हम कोई ऐसी चीज नहीं होने देना चाहेंगे और जनता भी इसको बर्दाश्त नहीं करेगी। यदि यू० पी० के चुनाव के बाद और उड़ीसा के चुनाव के बाद वे जनता के फैसले को नहीं मानते हैं, तो मैं बता दूं कि वे समय को नहीं पहचान पा रहे हैं। तो कल को उन को दिक्कत होगी और देश को दिक्कत होगी। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि इस तरह के कामों में वे इन्वल्व न करें।

MR. CHAIRMAN: Shri Ishwar Chaudhry.

श्री ईश्वर चौधरी: सभापति महोदय, लोकतंत्र में सत्याग्रह, प्रदर्शन, धरना जन-अधिकार है।....

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): On a point of order, Sir. This should have been my turn. But I do not mind as we both belong to the Opposition. But I should have been consulted in the matter. My consent should have been taken and then only he should have been called.

MR. CHAIRMAN: This is not your turn. The Chair has the duty to balance the debate and I go by the list before me.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: That list is wrong.

MR. CHAIRMAN: There is no point of order. It is for the Chair to decide whom it should call.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: There is an order of the House.

MR. CHAIRMAN: You may show me the rule.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: There is an order of the House. It has been done all the time like that.

MR. CHAIRMAN: You must regulate yourself according to the rule. You point out to me the rule by which I have to go according to your wish or I have to decide who is to speak. You cannot dictate to me. When I am standing, please sit down.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I am on a point of order.

MR. CHAIRMAN: Please sit down. You must appreciate that after Mr. Bhogendra Jha, the Congress turn came and then Mr. Satyendra Narayan Sinha spoke

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Because I gave my consent to the Deputy Speaker who made an announcement —you may look at the record—

'If others have no objection, may I call Mr. Satyendra Narayan Sinha'. I said, I have no objection. Because it was my turn to be called, I allowed it.

MR. CHAIRMAN: You gave precedence to one person.. (*Interruptions*). Please do not create any disorder. I recognise you as the main Opposition. But where is the humiliation in this?

SHRI NOORUL HUDA (Cachar): There is no humiliation But that is the convention

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): I have to make a small representation to make the position clear. I think it was agreed, and the Deputy Speaker also announced that the Chair would call speakers in the order of two Congress Members and one from the Opposition, and I request you to follow that. *Inter se* between them it is for you to decide.

MR. CHAIRMAN: I am here to balance the speeches. Mr. Chaudhry comes from that region. So I thought that he might make some contribution. If you have a quarrel over that, all right, you speak.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I would like to put on record what an irregularity has been committed in this debate.

It is a very important matter. Shri S. M. Banerjee was the Mover, according to the order paper. He got up and spoke just for one minute and the next speaker should be a congressman. Mr S M Banerjee's place was taken by Mr. Bhogendra Jha. I did not object because he comes from Bihar. The Deputy Speaker said I will allow Mr. Satyendra Narayan Sinha to speak. Then I did not mind Now this is the third time. What is this? The Chair thinks anything can be done....

SHRI K. RAGHU RAMAIAH: Sir to put the record straight, call one more person from the congress and then you may call one from the opposition.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: No, no.

MR. CHAIRMAN: Please see Rule 350 It says: 'When a Member rises to speak, his name shall be called by the Speaker. If more members than one rise at the same time, the member whose name is called shall be entitled to speak.' This is the rule which has been given and I follow the rules.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, आप नियमों में मत जाइए। हम ज्योतिर्मय बसु साहब से कहेंगे कि यह हमारा उनका अरेंजमेंट होता है, मगर संख्या के हिसाब से वह सब से बड़ी पार्टी है, उन्हें मौका मिलना चाहिए, इस में कोई दो राय नहीं है। लेकिन अब ईश्वर चौधरी ने शुरू कर दिया है तो उन को बोलने दिया जाये।

SHRI JYOTIRMOY BOSU: It is**

MR. CHAIRMAN: You must withdraw that word. Otherwise I will have to proceed under the rules. You cannot insult the Chair. Direction 115 A says that 'Any one of the following three methods may be adopted by members who desire to notify the Speaker of their intention to take part in a debate or discussion....

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I gave that in writing.

MR. CHAIRMAN: Please wait. Then it says:

"(a) The names of members who wish to participate in a particular debate or discussion may be supplied to the Speaker by the parliamentary parties or groups.

(b) A member who prefers to write direct to the Speaker may do so without having to go through the machinery of parliamentary party or group

(c) A member who may not like to give his name to the Speaker through his party or to write direct to the Speaker but wishes to adopt the well-known parliamentary practice of catching the Speaker's eye may stand in his seat whenever he wishes to take part in a debate."

(*Interruptions*) Please listen to the whole thing. Then it says:

"The Speaker shall not be bound by the lists or order in which names have been given by parties or groups or individuals directly. The lists shall be for his guidance only

**Expunged as ordered by the Chair.

and it shall always be open to him to make changes whenever necessary in order that the debates are regulated in accordance with the general principles laid down by the Speaker from time to time."

Therefore, I was perfectly within my right to call Shri Ishwar Chaudhry.

The use of the word spoken by Shri Jyotirmoy Bosu against the Chair is irregular. I ask him to withdraw that. (*Interruptions*) I have already pointed out to you Direction 115A of the Speaker. I think the order in the House can be maintained only if I go according to the rules. If I go beyond the rules, you have every right to question. But, as long as I go according to the rules, you must cooperate with me to see that the order in the House is maintained. This is my request to you all. I do not understand how Shri Bosu made this uncharitable remark against the Chair. As long as I was within the rules, will it be all right to allow this remark to remain on record? This is for the House to decide. Otherwise it is impossible to function.

(*Interruptions*)

SHRI BHOGENDRA JHA: Mr. Chairman, Sir, will you kindly permit me to make my submission?

MR CHAIRMAN: On what? Is it a point or order? I must know whether we should go according to the rules or not. Do you want me to regulate the proceedings under the rules or not?

SHRI BHOGENDRA JHA: Sir, according to the rules quoted by you, you are right. And what Shri Bosu said was this. His Party being the next majority party, he should have been given precedence over the other parties. From that point of view I think he is right. Because you have called Shri Chaudhry and you have permitted him, you may ask him to speak.

MR. CHAIRMAN: Have you finished?

SHRI BHOGENDRA JHA: In regard to the word uttered by Shri Bosu, if you deem fit, that can be expunged.

SHRI S. M. BANERJEE: I want only half a minute. My name was mentioned properly and it was in the list. I have asked Shri Jha to speak.

MR. CHAIRMAN: Mr Guha, are you making a submission or speech?

SHRI SAMAR GUHA: I am making my submission. As per the rule read out by you, you are within your rights to regulate the business of the House. Anyway, the word ** is a very uncharitable remark Except on rare occasions only, generally, it has been the convention that, according to the party position, you ask the speakers to speak. I think the matter should end there and Shri Chaudhry may be allowed to speak.

MR. CHAIRMAN: I think the matter can be settled here. I believe that Shri Bosu agrees with me that Shri Chaudhry may now speak. Now, will you withdraw the remarks made by you against the Chair?

I think that remark will have to be expunged.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I rise on a piont of order Under what rules do you expunge it? You kindly read out the rule.

MR. CHAIRMAN: I shall show you the rule. The remark made by you is undignified.

**Expunged as ordered by the Chair.

श्री डी० एन० तिवारी (गोपालगंज) : सभापति महोदय, 15 मिनट टाइम बरबाद हो गया है, यह टाइम अपोजीशन मे काटा जाना चाहिये, हम लोग शान्ति मे बैठे रहे, लेकिन उन्होने इस टाइम को बरबाद किया इसलिए यह समय उन के समय मे से काटा जाना चाहिये ।

SHRI JYOTIRMOY BOSU: May I know the rule?

MR. CHAIRMAN: It is rule 380.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: You may ask Shri Chaudhry to continue.

MR. CHAIRMAN: I do not think that I yield to you. I have done it under the rules.

SHRI P. M. MEHTA (Bhavnagar): On a point of order.

MR. CHAIRMAN: What is your point of order, Mr. Mehta?

SHRI P. M. MEHTA: Sir, you had been pleased to direct that the words **should be expunged. My point of order is, are those words unparliamentary, defamatory or derogatory to anybody. He expressed an opinion You cannot expunge anything which is not unparliamentary, derogratory or defamatory

MR CHAIRMAN. Rule 380 says:

> "If the Speaker is of opinion that words have been used in debate which are defamatory or indecent or unparliamentary or undignified, he may, in his discretion, order that such words be expunged from the proceedings of the House."

This remark against the Chair is an undignified remark and therefore it is expunged.

(*Interruptions*)

SHRI PILOO MODY: Is it your contention that if the Chair ** it is permissible?

MR CHAIRMAN: That is hypothetical and I can not give any opinion on your hypothetical remark.

SHRI PILOO MODY. Sir, once the Chair arbitrarily puts things out of the record, entire passages of debates concerning allegations against the Government can be removed in the same manner. There will be no end to it. Therefore, I recommend to you, if Parliamentary democracy is dear to your heart suffer the insult rather than ruin the procedure.

MR CHAIRMAN: Simultaneously with this, Mr. Mody, you will appreciate that unless we agree to honour the Chair which has to regulate the proceedings—in its best wisdom and according to the rules—and unless this cooperation is given it would be impossible to regulate the proceedings of the House and the very basis of the parlimentary system would be threatened I do not say I have got all the experience and wisdom of the other Members But I am doing my best You must cooperate with me to enable me to regulate the proceedings.

श्री ईश्वर चौधरी (गया) : सभापति महोदय लोकतन्त्र मे देश की जनता को शान्तिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन और सत्याग्रह करने का अधिकार है और इसी अधिकार को लेकर सम्पूर्ण बिहार में छात्र संघर्ष समिति द्वारा भ्रष्टाचार, घूसखोरी, मंहगाई, शिक्षा मे सुधार, आदि मामलो को लेकर यह शान्तिपूर्ण प्रदर्शन चल रहा था। इसी

**Expunged as ordered by the Chair.

दरमियान गया में ता० 8 को शान्तिपूर्ण धरना पोस्ट-आफिस, स्टेट बैंक और रेलवे को छोडकर बाकी सारे सरकारी प्रतिष्ठानो पर आरम्भ किया गया था। यह प्रदर्शन महिलाओ, बच्चो और विद्यार्थियो द्वारा शुरू किया गया था। यह प्रदर्शन ता० 9 और 10 को भी शान्तिपूर्ण रहा, ता० 11 को साजेंट मेजर लाल जो गया के नागमणि अपने कुकर्मों के लिए प्रसिद्ध हैं, उन्होंने एक महिला सत्यग्रही के पास जा कर उस के सीने के पास हाथ लगा कर उस को एरेस्ट करने का प्रयास किया।

उनके कुकर्म देखकर सारे प्रदर्शनकारियो मे रोष आ गया किन्तु वातावरण शात रहा। उस महिला को एरेस्ट करने मे वह सफल नही हो सके और वामना के वशीभूत मि० लाल वापिस लौट गए। 12 तारीख को 12 बजे दिन मे श्रीमान् एस० डी० ओ०, सदर और उन के साथ मे कुछ और लाठीधारी आदमी आये, वहा पर, और स्पष्टत सारा काम ठप्प पड गया था इसमे कोई दो मत नही परन्तु प्रदर्शन बिल्कुल शन्तिपूर्ण था जिसमे महिलाये और बच्चे थे। एस० डी० ओ० के आने के बाद उन्होने एक मजूमदार बोस नामक विद्यार्थी को अरेस्ट करने का प्रयास किया। यह देखकर सारे विद्यार्थी और महिलाये आ गए और कहाकि लोकतन्त्र मे हम यह नही चलने देंगे। यह क्रम जारी रहा। फिर पता नही एस० डी० ओ० के मन मे हिंसा का रूप देने की इच्छा थी कि उन्होने अन्तोगत्वा अपने सारे लाठीधारियो का यह आदेश दे दिया कि लाठी चलाओ। नतीजा यह हुआ कि उन महिलाओ बच्चो, विद्यार्थियो और साथ साथ नागरिको पर अनगिनत लाठिया बरसाई गयी। परिणाम-स्वरूप लाठियो की मार के भय से, इस डर मे कि हम मार खा जायेंगे या फिर अपने को बचाने की भावना से उन्होने पथराव किया। पथराव मे सरकारी गुडे भी हो सकते है। पथराव प्रदर्शनकारी नही कर सके। मेरा यह अनुमान और धारणा है कि प्रदर्शनकारी अपने बचाव में कुछ नही कर सके क्योकि वे निहत्थे थे। कितना उनको पीटा गया आप अन्दाजा लगा सकते है। इन सारी बातो के बावजूद 4 बजे के लगभग जिलाधीश महोदय ने आदेश दिया कि गोली मार दो। गोली का आदेश होने के साथ मे के० पी० रोड, जैन मदिर लिहेरिया सराय आदि स्थानो पर गोली की बौछार हो गई। जलियावाला बाग का काड बैसाखी के दिन हुआ था लेकिन वहा पर उसके एक दिन पूर्व 12 तारीख को जलियावाला बाग के काड की रचना हो गई। जलियावाला बाग की रचना डायर ने की थी और यहा पर जिलाधीश महोदय डायर की उपाधि से अपने को बचा नही सकते। देखते देखते वहा पर करीब 70 लाशे पट गयी और दो सौ से अधिक प्रदर्शनकारी जिनमे निरीह बच्चे और महिलाये थी, चोट खा गये। वहा पर दो सौ राउन्ड गोलिया चली, साठ राउड अश्रु गैस फेकी गई और अनेको बार लाठी चार्ज हुआ। आज आप जैन मन्दिर और उन गलियों मे जा कर देखें जहा पर घुम घुम कर लोगों को गोली से मारा गया। यह सूचना देने के बाद कि गोली मार दो, फिर क्या था गोलियां चलने लगी लेकिन यह सरकारी अधिकारी अपने स्टेटमेंट मे कहते है कि केवल 8 मरे हैं। मैं इस बात की चुनौती देता हू कि आप इस बात की जाच कराये, अगर 70 से अधिक व्यक्ति न मरे हो तो मैं दावे के साथ कहता हू लोक सभा की सदस्यता मैं स्वीकार नही करूगा। मैं आप को इस बात की चुनौती दे रहा हू आप इसकी जाच कराये। मैं उस स्थान का वर्णन कर रहा हू जहा पर . .

सभापति महोदय क्या आप अपने दल का सारा टाइम लेने जा रहे है?

श्री ईश्वर चौधरी वाजपेयी जी भी बोलेंगे।

सभापति महोदय : सात मिनट आपके पक्ष के लिए हैं और सात मिनट तो प्राय आपने ही ले लिए हैं।

श्री ईश्वर चौधरी : मैं समाप्त कर रहा हूं।

चौक का वह स्थान जहा राजाराम स्वर्णकार की दुकान है वहा पुलिस ने अन्दर घुस कर गोलिया चलाई और उस दुकान में राम खिलावन स्वर्णकार और सुरेश राम को मारा गया। इतना ही नही, इतने लोगो को मौत के घाट उतारने के बाद पता नही चला उनकी लाशे कहा गयी। अगर लाशों का कुछ पता है तो आई० डी० ओ० हास्पिटल, कालरा हास्पिटल और पुलिस लाइन आदि स्थानों पर पता नहीं लाशें क्या हुई। मैं उन स्थानो को देख कर आया हू, गया मे बोध गगा पुल न० 18 वहा पर लाशों को पेट्रोल और लकडी के नीचे जलाया गया है। मैं सरकार से माग करता हू और चुनौती देता हूं अगर मेरी सारी बातें झूठ है, महिलाओं बच्चों को न मारा गया हो तो आप इन सारी बातों की न्यायिक जाच करवायें, अगर यह असत्य साबित हो गया तो कम से कम मैं इस बात का भरोसा रखता हू कि मैं लोकसभा की सदस्यता से अपना त्याग-पत्र दे दूंगा।

एक बात और कहूगा कि जब बिहार जल रहा था तो बिहार के सारे मंत्री यहा पर गुणा जोड और घटाने में व्यस्त थे, अपने स्वार्थ मे फसे हुए थे। मेरी आप से मांग है कि आप इन सारे तथ्यो की न्यायिक जाच करवाये।

SHRI JYOTIRMOY BOSU: This is a police raj where we are living today. It has been very rightly pointed out by no less a paper than *The Free Press Journal*, an ardent supporter of the Government; in a caption:

"More people are believed to have died in police firings all over the country in the 26 years since independence than in all the two centuries of alien rule? What has made the policeman in India so much despaised by the public whom the seeks to serve?"

This is the context in which we rise to speak, today.

Today I was surprised to read a press clipping of 21 March 1974 which says that they have formed a Cabinet Panel on the War Council pattern....

AN HON. MEMBER: Where?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Here. This is to fight the starving millions of the country, to let loose the blood-hounds to suck their blood and get at their throat. A Cabinet Panel on the War Council Pattern! 'An Inner Cabinet to be charged with the integrated responsibility for the whole range of government policies is being suggested here to deal with the crisis that has gripped the country'. This is for what? To let the blood-hounds loose and suck the blood out of the starving millions of the country.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: No, no. This is Shrimati Indira Gandhi's war on corruption.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Then let her threat herself.

This is amply demonstrated by figures. In 1950 the Central Police budget was Rs. 3 crores. In 1973, it is Rs. 166 crores. The State police budget in 1950 for all the States in India was Rs. 51.78 crores. In 1973, it is Rs. 312.93 crores.

This is democracy and socialism, Mr Congressman around us here which you have brought to this country! You are living surrounded by blood-hounds whom you let loose on the people who ask for the minimum requirements for human living.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY (Nizamabad): How many people have you murdered in Bengal?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Keep quiet.

In Gujarat—I am sorry I angered you; but I have reasons for it—around 140 people were shot dead. In Bihar also, they want to be ruthless and make it a battlefield. On the one side, you are armed to the teeth; we know the weapons the BSF and CRP carry are almost like those of infantry battalions. It is only for tackling unarmed civilians on the other side. You are on the one side armed to the teeth; on the other side are the starving population, millions of people confronting you. This is the implementation of Shrimati Indira Gandhi's *garibi hatao* programme.

What is happening? The people are only demanding implementation of the *garibi hatao* slogan on which votes were taken from them by Shrimati Indira Gandhi. They are struggling for survival, for food and against high prices, against blackmarketeers and hoarders, kulaks and corrupt practices.

One student came and saw me the other day. He asked: what will happen in this country? The Bihar Education Minister asked the college examining authority to give 15 grace marks to his son so that he could pass. Naturally he is to be taken as Minister. Mr. Lalit Narayan may help him. He must be made a Minister! So, 15 grace marks. The demand was everybody has to be given that mark. Otherwise, there would be trouble, and that is what has happened. I say that the demands of the youth and the students are more than justified, and therefore, they must be accepted.

Then, I would like to quote from the *Far Eastern Economic Review*, a very well known paper from Hong Kong. It says:

"The student violence in Gujarat and Bihar, says officials, was fanned by vested interests and those who do not want democracy. But the truth is that life has become unbearable for the vast majority of the people, while a few thousand wallow in luxury, unlimited corruption and power."

For example, Shri L. N. Mishra.

"More than 100 lives were lost in the two States after battles with the police....'

It is a scathing attack on this Government.

Then, I wish to quote the views of a former Inspector-General of Police. I do not like to quote in fact, but then, even a former diehard police officer like him says:

"Speaking gently and yet delivering hard punches, Mr. Mithilesh Kumar Sinha, who retired rearly 15 years ago as Inspector-General of Police, said: If you can't give the people food, there is bound to be a revolution.....Nearly two months ago I wrote to the Chief Secretary that your distribution system is so rotten that I am surprised there is no uprising. I had told him that the situation was so fraught with danger that Bihar could go the Gujarat way...."

It is not from the RSS or Anand Marg nor from the CIA. It is from no less a person than a retired Inspector-General of Police.

What is happening? Instead of registering the protests, bullets have been showered. Shri Jaiprakash Narayan, with whom we differ on many things—my party differs—and we do not agree with many things that he says, but here we congratulate him for coming up to organise the masses against this government of kulaks, thieves and butchers. He has successfully done it.

Another thing is this. I am glad you are smiling. I got a very shocking news. The Government of India

[Shri Jyotirmoy Bosu]

have considered Bihar to be their immediate battle-field against the Opposition. The Centre is to meet the Opposition's offensive. Bihar is regarded as a test case. The Centre regards Bihar as the scene for the final bid to meet the Opposition offensive. It does not see the Bihar case as a State problem but as one which has all-India implications for the Congress and the Government.

My memory is not quite short. In 1942, in the Quit India movement, though our party had our own stand and we did not approve of certain things, we know that Bihar's sacrifices, Bihar's contribution was about the highest in the country. Do not forget that you will not be able to tackle Bihar in this manner. The only way is to face them, meet their demand, and give up your association with the kulaks, thieves and reactionaries.

Then, about the shoot at sight order. I was surprised. Only the other day, this Home Minister, Shri Uma Shankar Dikshit, piously-dressed person, had apologised before the House for telling a thing which I would like to say, a lie,—but it is unparliamentary—and so I would say it was an unmixed untruth. What has happened again? He has made a statement about Gaya wherein he has said:

> "The State Government have intimated that no shoot at sight order was given at Gaya and that all the three firings took place under orders of the magistrates on the spot."

Of course the whole statement is a monument of falsehood. I shall come to that slowly. The shoot at sight order in West Bengal—have experienced it. In British days when there was alien rule it was mandatory to hold an enquiry after each and every police firing but under Mrs. Gandhi's orders that was done away with in West Bengal. I have with me enough correspondance with the Prime Minister on this matter and I can exhibit it before the House. It is being done daily. In the speeches of Mr. Uma Shankar Dixit, scruples are not to be seen, morals are done away with and lying also is not punishable. They have discovered that.... (*Interruptions*).

MR. CHAIRMAN: According to the Business Advisory Committee, your time is 9 minutes.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I know that Mr. Bhogendra Jha whose party has a lower strength was given 25 minutes.

MR. CHAIRMAN: The C. P. I. had 20 minutes. I am saying from the paper given to me. He moved the motion on behalf of Mr. Banerjee. He took 20 minutes.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I shall take a little time. Here is an item in *Hindustan Times*, front page story: shoot at sight order in Patna following day long....

I shall come to the main point. I take the entire responsibility to prove that Mr. Uma Shankar Dikshit has deliberately told an untruth in this House. Shoot at sight orders were given in Bihar, in Gaya. I take the responsibility. You are an upholder of traditions here. Let Mr. Uma Shankar Dikshit face it if he is worth his salt. According to the *Times of India* dated 14th April, 1974, "the Border Security Force patrolling the streets has been ordered to shoot at sight those violating the curfew and indulging in violence". Secondly, the *Times of India* on 16th April, 1974, says: "The District Magistrate Confirmed that he had issued shoot at sight order on April 14, against curfew violators, etc." Then I come to the real thing, the PTI creed: it starts "Del 76 gen—curfew". It goes on to say:

> "Mr. Lal confirmed that he had issued a shoot-at-sight order on April 13 against curfew violators indulg-

ing in violent activities like loot, arson, etc. He said the order had also been announced through loudspeakers on mobile vans...."

On April 13, PTI had put out a story from Gaya about the order to shoot at sight violators of curfew indulging in violent activities like loot, arson, etc. On April 14, the UNI had put out a story from Patna, quoting unidentified 'official sources', denying any such order. Then again on April 15, the P.T.I. confirms that when the district magistrate was asked about it, he confirmed the order. The PTI takes the responsibility. Either the Home Minister is misleading the House or the PTI is doing so. Let there be a probe. If the Minister has any sense of self-respect he should come for a probe and establish once for all that in this House lying cannot be allowed. I can tell you that this Home Minister will be required to go if he conducts a probe. It shows how mischievous they are. On 13, April around 4.45 p.m. the Government PRO Mr. Thakur announced that those who violated the orders would be bayoneted and shot. He has denied it but the denial has no basis because not less than three Congress legislators heard with their own ears sitting in the first class in the refreshment room in the first floor in Gaya station..(*Interruptions*) a sitting MLA of Gaya, sitting M. P. of this House from Gaya and an ex-MP ...(*Interruptions*) Mr. Sukhdev. These people heard with their own ears what Mr Thakur was announcing with a microphone and an amplifier and he was announcing that those who were seen in the town breaking the curfew will be bayoneted. They are all preaching non-violence. Have you seen beyoneting? I have seen. You do not know.

Sir, we have Ananda Marg, RSS and CIA. Who had been their protector? Who had been their collaborator? It is all the administration, persons sitting in the official gallery, administrators and policemen. They are hand in gloves with these people and they are protected. Whenever something happens....(*Interruptions*).

I know of the recent dialogue of Mr. Naik in Bombay with the leader of that party in Bombay. We know what goes on. We know Mrs. Gandhi is close to all these forces. We know all that.

The question is, in Gaya, it all started with molestation of a lady by a policeman, by a sergeant. Sir, do you know, even Professors have been arrested. When a deputation of Professors went to meet the District Magistrate, it was of no use. Prof. J. C. Jha—he contested the last elections—of Gaya College was suddenly arrested Students to All India Students Federation have been arrested. The question is, this firing had taken place in five places between 1 and 3 PM on 12th April. Scores had died and dead bodies have been given a mass burial and burning. Police have burnt the dead bodies. The Bihar Military Police refused to fire. That is one good thing.

Firing had taken place in Chattaki Masjid, Clock Tower, near Kotwali, near market and at Jain Mandir. Youth aged between 8 and 12 years have been found dead. The pretext was, there was loot. The Police went to a place called Jain Mandir and started smashing glasspanes of houses to prove that there was violence, and therefore, firing had been resorted to. In a hospital, 13 dead bodies were seen. The Border Security Force sealed the hospital, the largest hospital Sir, Curfew orders were given two hours late and when the curfew lapsed, that was not intimated.

I would say, they cannot see the writing on the wall. There is no Government functioning in Bihar. All of them are fiddling in Delhi and the head man is sitting here. Sir, many congressmen have unequivocally condemned this. But, most of the corrupt Ministers like Shri Daroga Rai and others are still going strong. The

[Shri Jyotirmoy Bosu]

funniest thing is, this gentleman, Shri Jagjivan Ram, whose son has been named as a Cabinet Minister, neither he knows about it nor his father knows about it.

Therefore, I demand immediate dissolution of the Assembly and you should seek fresh mandate from the people if you are worth your salt. You had to lick the dust. Here also, the same thing, unless you do it.

श्री शंकर दयाल सिंह (चतरा) : सभापति जी, छात्र आन्दोलन या युवा-आक्रोश जिस की चपेट में बहुत सारी बातें कही गयीं हैं जिसकी हवा गुजरात से शुरू हुई और बिहार में अभी तक वह आग लगी हुई है उस संबंध में बहुत कुछ कहा गया है। मैं यह कहना चाहता हूं कि जहां तक भ्रष्टाचार के खिलाफ बात है हमारी नेता प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने युवकों की सभाओं में बार-बार कहा है, युवक कांग्रेस की सभाओं में कहा है कि युवकों को आगे बढ़कर भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए और जहां तक युवा आक्रोश की बात है, छात्रों के भ्रष्टाचार के खिलाफ आगे बढ़ने की बात है बंगाल और केरल आदि बहुत सी जगहों में युवक-कांग्रेस ने आवाज उठाई थी और आगे आ कर भ्रष्टाचार को खत्म करने का काम किया था। लेकिन युवा आक्रोश और आन्दोलन के नाम पर जो हिंसात्मक घटनाएं भड़काई जाती हैं और युवकों को गुमराह किया जाता है यह कोई अच्छी बात नहीं है। देश को इस तरह से विघटन के मार्ग पर लाया जा रहा है।

बिहार की घटनाएं यह नहीं हैं कि 16 मार्च से शुरू होती हैं जब बेतिया में आन्दोलन हुआ, गोलीकांड हुआ और लोग मारे गये। 16 के बाद 18 तारीख को पटना में जो कुछ भी हुआ उस संबंध में भी मैं बहुत नहीं कहना चाहता इसलिए कि पूरा देश जानता है कि क्या हुआ। हां, एक बात मैं जरूर कहना चाहता हूं कि 16 को जब बेतिया में गोलीकांड हुआ था और 18 को जब पटना में गोलीकांड हुआ या आग लगी उस के दरमियान अटल बिहारी जी और एक दूसरे नेता पटना जरूर गए थे, यह मैंने अखबारों में पढ़ा था। मैं और कुछ नहीं कह रहा हूं। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि उन्होंने आग लगा दी। यह मैं कैसे कह सकता हूं ? लेकिन मैं यह जरूर कहता हूं कि वह बेचारे वहां गए थे और अखबारों में यह बात आई थी। यहीं से शुरूआत नहीं होती है। 21 जनवरी को बिहार बन्द का एक नारा दिया अपोजीशन पार्टीज ने। 21 जनवरी के दिन कहीं कुछ नहीं हुआ। मेरे क्षेत्र कोडरमा मे भीड़ ने क्या किया कि रेलवे स्टेशन पर आक्रमण कर दिया, गोली चली, दो आदमी मारे गए। शुरूआत वहां से हुई। बड़े योजनाबद्ध तरीके से चला आ रहा है।

12 अप्रैल को गया मे जो घटनाएं हुईं उनमें से कितने दोषी हैं, मैंने उस दिन कहा था जब आदरणीय वाजपेयी जी बड़े झुंझला कर खड़े हो गये थे, लेकिन वह कोई बे-बुनियाद बात मैं ने नहीं कही थी। 12 अप्रैल को जो कुछ गया में हुआ उस की नींव पिछले 17 मार्च को गया में डाली गई थी। 17 मार्च को गया में जनसंघ ने यह कहा था अपनी एक मीटिंग में—जन सब टू लांच धरना आन रेलवे स्टेशन ऐंड पोस्ट आफिस—यह वहां के इंडियन नेशन अखबार में 18 तारीख को प्रकाशित हुआ था और इसी मे यह भी लिखा हुआ है कि :

The concluding function was also attended by Shri Atal Behari Vajpayee.

यह 17 तारीख को हुआ था। यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि मैं ने बे-बुनियाद बात नहीं कही थी और जब कभी इस तरह के रेजोल्यूशन पास किए गये, अटैक हुए या आन्दोलन किए गए तो उस का शिकार किस को बनाया गया ? केन्द्रीय कार्यालयों को, पोस्ट-आफिसेज को, रेलवे स्टेशंस को और टेलीफोन एक्सचेंज को।

ये चीजे किस के लिए हैं ? ये जनता के लिए हैं। उन में आग लगती है तो किस का घर जलता है ? जनता का घर जलता है। अराजकता फैलती है तो उस से किस को नुकसान पहुंचता है ? जनता को नुकसान पहुंचता है। लेकिन बहुत से ऐसे दल हैं जो आग लगा कर हाथ सेंकने में मजा लेते है। यह जनतंत्र का अर्थ नहीं है।

मैंने जैसा आप से निवेदन किया गया 12 अप्रैल को जो घटनाएं हुईं उस से हर व्यक्ति दुखी है। गया एक ऐसी जगह है जहा की धरती पर आजसे हजारों साल पहले भगवान गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई। गया एक ऐसा स्थान है कि जहां भगवान विष्णु का मन्दिर है और जहा लाखो लोग प्रति वर्ष दर्शन करने जाते हैं। वह एक ऐसी जगह है जहां अन्तःसलिला फल्गू प्रवाहित है। हर व्यक्ति को वह शांति का पाठ पढ़ाता है और उस गया में अशांति का पाठ पढ़ाने की कोशिश किस ने की ? यह मैं नही कहना चाहता हूं, यह इंडियन नेशन अखबार कहता है। जहां तक गया की घटनाओं का जिक्र है ठीक ही दूसरे साथियों ने कोट किया है, गया कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री जयकुमार पालित ने यह मांग की है कि वहां जो कुछ भी हुआ उस में कुछ पदाधिकारियों, अधिकारियों और पुलिस का भी बहुत बड़ा हाथ है और उन्होंने न्यायिक जांच की मांग की है। वहां के एम० एल० ए० ने भी कहा है कि सारे मामले की न्यायिक जांच होनी चाहिए और मैं भी यह मांग करता हूं कि न्यायिक जांच होनी चाहिए जिस से बहुत से लोगों के मुखड़े साफ हो जायें। क्योंकि गया में शान्ति चाहने वाले लोग कभी भी अशान्ति में विश्वास नही करते, मर्यादा भंग करने में आस्था नहीं रखते, सन्तुलन खोने में उन का विश्वास नहीं है, वे चाहते हैं कि देश में जनतन्त्र ठीक ढंग से चले। लेकिन उन सब को भड़काने में जो तत्व सक्रिय रहे, उन का चेहरा साफ होना चाहिये।

14.00 hrs.

मान्यवर, गया में जो घटनाऐं हुई— उन का नारा क्या था ?

जो लोग एरेस्ट हुए उन का नारा था—कोतवाली जलाओ, साथी छुड़ाओ :

श्री ईश्वर चौधरी : कही भी लुटाई नही हुई, एक भी आगजनी नही हुई, लेकिन फिर भी गोलिया चलाई गई।

श्री शंकर दयाल सिंह : अब मैं एक मिनट का समय और लेकर अपने कुछ सुझाव आप के माध्यम से सरकार के समक्ष रखना चाहता हू। गृह मंत्री जी से मेरा सुझाव है —

1. वे स्वय जा कर गया की इन घटनाओं का निरीक्षण करे।

2. मैं चाहता हूं कि गया काण्ड की न्यायिक जांच हो।

3. दोषी अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही की जाय।

4. खाद्यान्न की कमी, किरासिन तेल की कमी, आवश्यक वस्तुओ की जो कमी है, उन की पूर्ति की जाय।

5. संवैधानिक मर्यादा के अनुसार विधान मण्डल के कामकाज मे सब का सहयोग मिलना चाहिये।

6. केन्द्रीय सरकार ने जिस तरह से अभी यहा के मंत्री मण्डल की ओर ध्यान दिया है, उसी तरह से यहा जो बड़े पैमाने पर भ्रष्ट अधिकारी हैं, उन का तबादला होना चाहिये, मुअत्तली होनी चाहिये, उन में भी सफाई की जरूरत है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मंत्री मंण्डल में जो भ्रष्ट हैं उन का क्या होगा।

श्री शंकर दयाल सिंह : अन्त में मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि छात्र नेताओं के साथ बातचीत केन्द्रीय सरकार के किसी वरिष्ठ मंत्री को करनी चाहिये, क्योंकि छात्र बुरे नहीं हैं, छात्रों को आगे रख कर पीछे कुछ ऐसे असामाजिक तत्व थे जिन का जनतन्त्र में विश्वास नहीं हैं और वे ही शिकार खेल रहे हैं।

एक बात मैं जरूर कहना चाहूंगा, जिस के लिये आप मुझे क्षमा करेंगे —हमारे आदरणीय मित्र भोगेन्द्र झा ने हाथ उठा-उठा कर बड़े जोर से चर्चा की कि 51 लोगों ने दस्तखत कर दिये जयप्रकाश नारायण जी के बारे में। किस चीज पर दस्तखत किये थे ? हम ने दस्तखत किये थे इस लिये कि यहां कुछ लोग इन्दिरा जी और जयप्रकाश बाबू के बीच कन्फ्रेन्टेशन करना चाहते थे, उस के लिये दस्तखत किये थे। मैं यह स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि बिहार में जो आग लगी है, उस में कम्यूनिस्ट पार्टी पीछे नहीं है। बेतिया में इन्होंने ही शुरू किया था और यहां भी आगे रहे हैं इस लिये इनको अपने फंक्शन को सुधारना होगा। ये लोग बारबार हमारी मदद से यहां जीत कर आते हैं और फिर ऐसा व्यवहार करते हैं। अगर हमारी मदद न होती तो यहां एक भी जीत कर न आते.... (व्यवधान)... यहां जीत कर आते हैं और फिर हमारी पीठ में ही छुरा घोंपते हैं... (व्यवधान).. अगर कांग्रेस की मदद न होती तो कोई भी जीत कर नहीं आ सकता था। हमारी मदद से आते हैं और यहां आ कर जिस पत्तल में खाते हैं उसी में छेद करते हैं—यह बात गलत है। ..... (व्यवधान)..... इस लिये, मान्यवर, जो बातें मैंने कही हैं मैं चाहता हूं कि सरकार उन पर गम्भीरता से विचार करे..... (व्यवधान)..

सभापति महोदय : जब आप का समय आये तब आप बोलिये और जितना कड़ा बोलना चाहते है, बोलिये।

श्री शंकर दयाल सिंह : दिक्कत यह है कि जब ये लोग बोलते हैं तो हम शान्ति से सुनते हैं, लेकिन जब हम बोलते हैं तो ये लोग भकबकाने लगते हैं, यह क्या बात है। जो सही बात है उसको मानिये।

श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा (नवादा) : सभापति महोदय, आज सदन में बिहार तथा गया गोली काण्ड पर जो बहस चल रही है, वास्तव में वहां की स्थिति बड़ी गम्भीर है और उस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। साथ ही साथ यह भी जानना आवश्यक है कि क्या सचमुच में यह विद्यार्थियों का आन्दोलन है और उन की मांगों के समर्थन में कुछ प्रतिक्रियावादी तत्वों ने हाथ बटाया है, क्या सचमुच में विद्यार्थियों की मांग के लिये उन के मन में सहानुभूति है या चुनाव में मार खा कर इस तरह का आन्दोलन कराने का कार्य उन लोगों ने आरम्भ किया है। इन सारी चीजों को गम्भीरता से देखा जाना चाहिये, तब सारी बातें स्पष्ट रूप से सामने आ जायेंगी।

माननीय ज्योतिर्मय बसु जी ने कहा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने गरीबी हटाने के नाम पर, बेकारी दूर करने के नाम पर जनता से वोट लिये थे, लेकिन न गरीबी हटी और न बेकारी दूर हुई। मैं कहना चाहता हूं कि श्रीमती इन्दिरा गांधी जी तो रात-दिन गरीबी दूर करने में और बेकारी दूर करने में जुटी हुई हैं, लेकिन ये कुछ ऐसे प्रतिक्रियावादी तत्व हैं, जिन का जनतन्त्र में विश्वास नहीं है, और वे ऐसे कामों में बाधा दे कर देश की गरीबी और बेकारी को बनाये रखना

चाहते हैं और इस आन्दोलन के पीछे भी ऐसे ही तत्वों का हाथ है। वे उन नीतियों को सफल नहीं होने देना चाहते हैं, चूंकि वे चुनाव में मार खा गये हैं वे सोचते हैं कि अगर सारा काम कांग्रेस ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में पूरा कर लिया, तो हमारा अस्तित्व ही मिट जायगा और हम इसके बाद कर ही क्या सकेंगे ? इस लिये आज हिंसात्मक आन्दोलन का सहारा ले रहे हैं। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये देश को और जनतन्त्र को न जलाइये, और देश जल जायगा और जनतन्त्र मिट जायगा तो हम और आप कहां रहेंगे। दोनों समाप्त होंगे।

जहां तक विद्यार्थियों की मांगों का सम्बन्ध है मैं भी उन के साथ हूं, और उचित मांगों का समर्थन करता हूं। मैं भी चाहता हूं कि देश में गरीबी, बेकारी, भ्रष्टाचार को निर्मूल किया जाय, लेकिन इन को निर्मूल करने का जो तरीका है उस को अपनाइये। माननीय मैं ता० 12 को गया में था। यह सत्य है कि विद्यार्थियों और महिलाओं का यह सत्याग्रह और धरना ता० 10 तक शान्तिपूर्ण ढंग से चलता रहा लेकिन ता० 11 से उस को हिंसात्मक बनाने का जो षडयन्त्र विरोधियों द्वारा रचा गया, किस दल ने षडयन्त्र किया, कहां मीटिंग हुई—मैं चाहता हूं गृह मंत्री जी इस की जांच कराएं। आप को पता लगेगा कि ता० 11 को जिला अधिकारी ने बड़ी सन्जीदगी से उस को बचाया, लेकिन इन लोगों का यह बरदास्त नहीं हुआ, ता० 12 को ये लोग निश्चय कर के आये और उसके बाद आग और गोली काण्ड की घटना हुई। यह इस बात का सुबूत है कि जो विद्यार्थी और महिलायें वहां सत्याग्रह में थे, उन में एक भी घायल नहीं है, एक भी जख्मी नहीं है। हमारे माननीय सदस्यों ने गया गोली काण्ड की जो चर्चा की है उस से मुझे भी दुख है। मैं बहुत दुखी हूं और चाहता हूं कि इस की जांच कराई जाये।

माननीय ईश्वर चौधरी जी ने कहा है है कि गया में 70 और 100 के बीच मौत हुई है और 200 घायल हुए हैं और लाशों को जला दिया गया अगर यह बात सही भी हो तो मैं पूछना चाहता हूं कि जो जख्मी हुए उन का इलाज कहां हुआ ? जख्मी लोगों के नाम बताइये, किस अस्पताल में भरती हुए, कहां इलाज कराया, आज उन लोगों को सरकार की तरफ से मुआवजा दिया जा रहा है, लेकिन एक भी नाम अभी तक सरकारी सूची के अलावा नहीं बताते हैं। हमारे गृह मंत्री जी ने बताया है है कि 23 आदमी अस्पताल में भरती हुए जिन में 8 की मौतें हुई और 15 जख्मी हुए, उनमें से दो-तीन चले गये थे—यह अस्पताल के रिकार्ड में है। और अस्पताल के रिकार्ड के अलावा इन के पास कोई खबर है तो बतानी चाहिये नाम के साथ। ये कहते हैं कि 200 जख्मी हुए, लेकिन उन का इलाज कहां हुआ। हमारे संगठन कांग्रेस के आदरणीय सदस्य श्री सत्येन्द्र नारायण सिंह कहते हैं कि मौतें अधिक हुई है—अगर उन की बात मान ली जाए तो क्या जिन को गोली लगी सब मर गये, जख्मी कोई नहीं हुए। जख्मी लोगों की लिस्ट 14–15 है, बाकी कहां गये। मैं चाहता हूं कि इस बात की जांच कराई जाय। इस तरह से असत्य बातें कह कर देश और जनता को गुमराह नहीं करना चाहिये। यह जनतन्त्र के विरुद्ध है। कोई भी आदमी जो शान्तिप्रिय है आज इस तरह की हिंसात्मक कार्यवाही आंखों से देखे तो सचमुच बेबड़ी असहनीय है। मैं गृह मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि जो वहां पर आपकी बार्डर सिक्योरिटी फोर्स है और सेन्ट्रल रिजर्व फोर्स गया में है,

[श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा]

उसने बहुत अधिक जुर्म किया है। निर्दोष व्यक्तियों के घरों में घुस कर पीटा है।

सभापति महोदय : आप मेरी बात सुन लीजिए। कांग्रेस पक्ष के लिये यह मुझे बिल्कुल बताया गया है कि 7 मिनट से ज्यादा किसी को न दें क्योंकि आपकी तरफ के काफी लोग, करीब 15 लोग बोलने वाले है। आपके 6 मिनट हो चुके है।

श्री सुखदेव प्रसाद वर्मा : तो मैं यह कह रहा था कि आज इस बात की जांच करानी चाहिए कि जयकुमार पालित, जो प्रखण्ड कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हैं उनके घर में घुस कर फौज ने उनके परिवार के लोगों को पीटा है। मै चाहूंगा इस तरह के जो जुर्म हुए है उनकी जांच की जाये और ऐसे व्यक्तियों को सजा मिलनी ही चाहिए।

मैं यह भी चाहूंगा कि आज विद्यार्थियों की जो मांगे हैं, श्री शंकर दयाल सिंह और श्री भागवत आजाद से मैं सहमत हूं कि उनकी मांगों की पूर्ति के लिए अविलम्ब कदम उठाये जायें। और माननीय गृह मंत्री स्वयं विद्यार्थियों के नेताओं से बात करें और समस्याओं का समाधान करें। मैं इस बात की भी चर्चा करना चाहता हूं कि हिंसात्मक आन्दोलन को माननीय जयप्रकाश जी ने अहिंसात्मक बना कर बिहार को जलते से बचा लिया है। अहिंसात्मक आन्दोलन चल रहा था लेकिन विरोधी दल जो आज उनके लिए आंसू बहाते हैं, उन्होंने उसमें हिंसा की भावना लाकर उनकी पीठ में छुरा मारा है। उन्होंने अहिंसात्मक रूप से जो आन्दोलन चलाया वह सराहनीय है।

मैं माननीय गृह मंत्री जी से यह भी चाहता हूं कि आज बिहार में जिन चीजों की कमी है, अनाज और दूसरे उपभोगी सामान की जो कमी है उसकी तरफ भी सरकार को ध्यान देना चाहिए। उन चीजों की सरकार वहां पर पूर्ति करे। सबसे बड़ा काम यह है कि भ्रष्ट अधिकारी वितरण में गड़बड़ी करते हैं, जिन चीजों की आवश्यकता है उनको जनता तक पहुंचने नही देते है उनके खिलाफ आप कार्यवाही कीजिए और उन चीजों को जनता तक पहुंचाइये। इस प्रकार के जो भी भ्रष्ट अधिकारी हों, चाहे कोई मन्त्री ही हों या किसी पार्टी के ही लोग क्यों न हों— जो भी इस तरह के गलत काम करते हैं उन को कटघरे में खड़ा करना चाहिए।

SHRI V. MAYAVAN (Chidambaram): Mr. Chairman, Sir, we have heard the speeches of hon. members. Mr. Jyotirmoy Bosu has rightly said that it is 'Police Raj' which is going on in Bihar. The other members have also pointed out that looting and shooting have taken place in Bihar. Whether the Treasury Benches are going to accept this or not, history will speak for itself about the facts.

Why is Bihar in the vanguard of this revolution? That will have to be considered in the House. What are the reasons for this situation and for the activities that have taken place in Bihar? It is the economic backwardness. Nobody had thought of it. Bihar has got almost the major heavy industries. Yet, Bihar is economically backward. So far as per capita income is concerned, Bihar is the second from the bottom. What is the reason for this? We have been spending crores of rupees in Bihar; even then we find that it is economically backward, facing this kind of situation and activities. More than economic backwardness, the

State is now in the clutches of casteism, and the common people of the State are the victims of the vagaries of he dominant caste leaders. Political instability and insecurity and economic backwardness of the State are the result of the never-ending see-saw battle between different castes. The unscrupulous political learders exploit for their own ends the cleavages in the castes.

The Central Government are the silent spectators. Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi nominated Shri Kedar Pandey for the Chief Ministership of that State. But what did happen? He was removed unceremoniously from the *gaddi* by one of the cabinet colleagues of Mrs. Gandhi. You can very well imagine the currents and under-currents in the political field.

Now, another eminent leader, after the formation of the new Ministry, has rightly pointed out and characterised the new Ministry as old wine in a new bottle. There is no change at all and this Ministry also will not last even a few months. It is from his speech we can conclude that it would not last even three or four months.

Students' unrest in Bihar is increasing. Why? Because the students when they go to the mess, they could not see the food being served. Provisions are not available. The food situation there is so bad. When I had been there recently, personally I asked them and I was told that rice is selling at Rs. 11 per kg. Why is this situation? What is the State machinery doing? Is it not the duty of the State to procure foodgrains for their own people? So, these things will have to be viewed seriously by the Treasury Benches and they will have to come forward with some solution o solve all these problems. This is a never-ending thing. It will have to be solved effectively and I call the Minister for Home Affairs to see that these things are solved.

Sir, Bihar is the home of the Sadaquat Ashram and the Sarvodaya Leader, Jayaprakash Narayan. Jayaprakash Narayan is the only one great leader of the pre-Independence era. Yet, the Prime Minister accused Jayaprakash Narayan of speaker-heading the politics of disruption in the country. I am compelled to say that, if men like Jayaprakash Narayan are accused of having personal motives, the doomsday of the ruling Congress Party is fast approaching.

The ruling Congress Party leaders talk ceaselessly about the establishment of a casteless society but the ruling Congress Party leaders in Bihar themselves are fathering casteism and factionalism in the State. One who sows the wind will have to reap the whirlwind. That is the proverb which I would like to quote here. That is the situation being faced by the ruling Congress Party in Bihar.

The people of Bihar seem to be the fodder for the burning jealousies among the different castes in Bihar.

Coming from Scheduled Castes, I am pained to say that the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes in Bihar are going back to the stone-age civilisation. We read also in papers about naked parades being conducted by people. These things will have to be curbed and curtailed once for all if we talk of democracy and a casteless society.

Our leader, Jagjivan Ram is being brushed aside by the ruling Congress in Bihar. I warn....

SHRI DHAMANKAR (Bhiwandi): Are you worried about it?

SHRI V. MAYAVAN: When we talk of a casteless society, why cannot I mention these things?

[Shri V. Mayavan]

I warn the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes people will never tolerate any insult to this venerable leader.

In Gaya, Mr. Choudhari has already stated the situation there warrants immediate action by the Home Ministry. I would request the Home Minister to solve all these problems immediately.

श्री जगन्नाथ मिश्र (मधुबनी) : सभापति जी, आज कपिल, कणाद, गौतम, महावीर, जनक और जानकी की भूमि में जो कुछ हो रहा है उससे मैं अति दुखी हूं और उन राजनीतिक दलों की, जिनका इसमें हाथ है, भर्त्सना करना चाहता हूं। मुझे आश्चर्य है कि इतने चुनाव लड़ने के बाद भी वे दिवा स्वप्न देखने में क्यों लगे हैं। उन्हें वस्तु-स्थिति का ज्ञान क्यों नहीं होता है। मुझे यह भी कहते परम दुख हो रहा है कि वे इसे स्वीकार क्यों नहीं करते हैं। चुनाव के मैदान को छोड़ कर वे अब कुछ और सोचने लगे हैं। जो बात सभी के लिए दुखद हो सकती है वह उन लोगों के लिए भी दुखद है। उनका यह ख्याल है, जो सत्य से परे है कि छात्रों के नाम पर हम अपनी किसी गलती को पचा लेंगे। लेकिन हमारी सरकार, हमारा दल छात्रों की जो जायज मांगें हैं उन मांगों के मानने में थोड़ी भी हिचकिचाहट नहीं दिखाता है और इस तरफ के सदस्यों ने इस सदन में आज और इस में पहले भी ऐसा एलान किया है कि छात्रों की जायज मांगों को मानने में हमें कोई एतराज नहीं है लेकिन उन्हें बलि का बकरा बना कर अगर वे कुछ करना चाहेंगे, तो यह चलने वाली बात नहीं है। मैं आज अपने इन शब्दों के साथ राजनीतिक दलों को सावधान करना चाहता हूं कि छात्र और जनता कांग्रेस पार्टी और कांग्रेस सरकार के साथ है। इन्दिरा जी के नेतृत्व में उन को विश्वास है। इसलिए वे अपने मन में इस भ्रम को दूर कर दें। जब मैं यह सोचता हूं कि इन की ये हरकतें क्यों हो रही हैं, तो मुझे यह स्पष्ट दीखता है कि उड़ीसा और यू० पी० में जो चुनाव के नतीजे निकले और आम जनता ने उन को तिरस्कृत कर दिया, उस से ये बहुत ज्यादा परेशान हुए। उन की परेशानी का एक और भी कारण रहा। और वह था मधुबनी का उप-चुनाव, जहां से मैं आता हूं। उन की बहुत तमन्ना थी और उन्हें बहुत आशा थी कि वहां से उन का उम्मीदवार विजयी होगा, लेकिन जनता ने जिस जोश के साथ, जिस उत्साह से, जिस उमंग से कांग्रेस के उम्मीदवार बिहार के मुख्य मंत्री श्री गफूर को, अपना समर्थन दिया था इन के पांव के तले की मिट्टी खिसकने लगी (व्यवधान) वाजपेयी जी, आप की हरकतों की चर्चा, आप के दल की हरकतों की चर्चा बहुत हो चुकी है, इसलिए मैं उन का दोहराना नहीं चाहता, लेकिन मैं इतना अवश्य कहूंगा कि आप भावावेश में न बहें और आप गंभीरता से इस पर विचार करें, आप विपक्ष को जानने वाले हैं, इसलिए आप पुनर्चिन्तन करें कि आप का दल, आप की पार्टी आप के लिए क्या करने जा रही है ... (व्यवधान) . आप के पटना के गमन और गया के गमन ने क्या गुल खिलाए। इसलिए आप परहेज

से काम लें। आप का वह वाक्य हमेशा मेरे कान में गूंजता रहता है। बंगला देश के निर्माण के समय जब पाकिस्तान से हमारी लड़ाई चल रही थी, तो आप ने कहा था कि देश का एक नेता है और वह है इन्दिरा गांधी। तो आज इस वर्तमान महंगाई के समय में आप को उसी दृष्टिकोण से सोचना चाहिए और आगे आना चाहिए। अगर इस ख्याल से आप कुछ सोचते नहीं हैं, आप जरा चिंतन नहीं करते हैं तो आप देखेंगे कि अब तक तो आप जनता के द्वारा ठुकराते जाते रहे हैं और इस बार अगर ठुकराए गए तो फिर घिर कर उठने वाले नहीं हैं। इसलिए मैं आप से संयम से काम लेने को कहूंगा।

जो कुछ बिहार में हो रहा है, वह दुखद है, यह मैंने पहले कहा। सरकार बड़ा संयम से काम ले रही है, सरकार बड़े विवेक से काम ले रही है वरना कुछ और हुआ होता। मैं विश्वास करता था कि इसके लिए सरकार को सदन के सभी लोगों की ओर से वाह वाही मिलनी चाहिए थी। सरकार कभी भी परहेज के दायरे से बाहर नहीं गई। गया की बात कर रहे हैं, तो केवल फेब्रिकेशन हो रहा है, बात का बतगड़ बनाया जा रहा है। जब सरकार के पास कोई चारा नहीं रहा, तो उस को फाइरिंग करनी पड़ी। इसकी चर्चा हमारे माननीय गृह मंत्री जी ने की है और अखबारों में भी समाचार निकला है। उन को एक बार फिर वे देख लें या फिर मेरे कथन पर विश्वास कर लें। मेरी अपनी सरकार में पूर्ण आस्था है और आज जो स्थिति पैदा हो गई है, उस को सरकार अपने नियंत्रण में कर लेगी। इस में मेरा अविश्वास नहीं है लेकिन आप लोगों को अविश्वास भले ही। इसलिए मैं अपने इन शब्दों में इन का ध्यान आकर्षित करूंगा कि जो यह समझ रहे हैं कि जो कुछ हो रहा है यह किरण नये सूर्योदय में परिणत होगी, तो मैं कहता हूं कि यह जो किरण है, यह नये सूर्योदय में परिणत नहीं होगी बल्कि इस में आप जल कर खाक हो जायेंगे और वह जंगल की आग की लपेट की तरह बुझ जायेगी।

मैं अभी समाप्त कर देता हूं। मैं पूछता हूं कि प्रतिपक्ष हिंसा और दबाव-धमकी की राजनीति में उलझ कर अराजकता और अव्यवस्था का सूत्रधार बन कर रह जाएगा या अधिक दूरदर्शिता, विवेक एवं शान्ति की रीतियों का सहारा ले कर समस्याओं के लोकतंत्रीय राजनैतिक समाधान खोजेगा। मैं उन से जानना चाहता हूं कि अराजकता और हिंसा के उफान ने क्या सदा ही अधिक आतंकपूर्ण, निरंकुश और जालिम शासन को जन्म नहीं दिया है? क्या सार्वजनिक और निजी सम्पत्ति के विनाश और हिंसा के पीछे कोई नैतिक मूल्य है और यदि है तो क्या वे लोकतंत्रीय अनुशासन के नियमों के अनुकूल हैं? क्या यह आन्दोलनकारी देश की इस मूल समस्या से परिचित है कि आवश्यक वस्तुओं का अभाव और अबाध गति से बढ़ती हुई कीमतों का चक्र भारत की आत्मा को उतना पीड़ित नहीं कर रहा है, जितना कि विवेक और संगठना का दुर्भाग्यपूर्ण अभाव।

सभापति महोदय: अब आप खत्म कीजिए। आप जहां से पढ़ रहे हैं, उस का नाम बता दीजिए।

श्री जगन्नाथ मिश्र : मैं अभी खत्म कर रहा हूं।

मैं जानना चाहता हू कि क्या वे दुर्भाग्यपूर्ण कटु यथार्थ से परिचित है कि देश मे फैले भ्रष्टाचार के लिए विरोधी राजनीतिज्ञ किसी से कम जिम्मेदार नही है जो काले धन के बल पर देश की राजनीति और राज सत्ता पर अधिकार जमाने का स्वप्न देखते हैं।

इस स्थिति मे यदि हम अहिसात्मक और शान्तिपूर्ण रीति नीति का परित्याग कर के निराशा के आवेग मे हिंसा और अराजकता पर उतारू हो जाएं, तो यह संकट संहारक बन जाएगा। यदि हम हठ पर डटे रहे तो मानना होगा कि हारे हुए पाडवों मे लोकशाही की द्रोपदी को भी दाव पर लगा दिया है। इसलिए क्रोधावेश के बजाए होश और विवेक से काम लेना नितात जरूरी है।

याद कीजिए, बापू ने तनिक सी हिंसा ...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह हम को पाडव बता रहे हैं और ये कौरव हैं। यह हम स्वीकार करते हैं।

श्री जगन्नाथ मिश्र हारे हुए, तिरस्कृत। मैं कह रहा था कि याद कीजिए, बापू ने तनिक सी हिंसा होने पर एक महान देशव्यापी आन्दोलन वापस ले लिया था और अपने साथियो के प्रतिवाद करने पर साफ़ कहा था कि अहिंसा के बिना आया स्वराज्य मेरे किसी काम का नहीं।

श्रीमन्, मैं अपने इन शब्दों के साथ अपने दोस्तो से आग्रह करूगा कि वे पुनर्चिन्तन करे और बिहार मे नामॅलसी आए और हमारी सरकार का जो प्रयास है उस में अगर वे अपना योगदान दें तो उन को यश मिलेगा, नही तो वे अपयश के भागीदार होंगे।

SHRI HARI KISHORE SINGH (Pupri): Mr. Chairman, Sir, I was listening with due attention to the speeches made by Shri Bosu and Shri Mayavan from the DMK. Shri Bosu, by quoting from newspapers, said that the ruling party has made Bihar a test case for the violence of State power.

This is hardly true. His demand for the dissolution of the State Assembly is highly erroneous and misleading. I hope he realises the implications of that remark which is a danger to the proper functioning of Parliamentary institutions and for its very survival in this country. This betrays his real intentions and this was made very clear in his concluding remarks when he demanded the dissolution of the Bihar Assembly. This is the crux of the problem and express the motivation behind the movement that the Opposition Parties are instigating some young men and youths in Bihar and other parts of the country to launch.

What is the objective behind this movement? It is to demand the dissolution of the elected institutions, resignation of the elected Members of the legislature and later on of this Parliament as well I hope Mr. Mayavan, who was very lavish in his compliments at our party, realises the implications of this demand. I think he has heard the name of Shri M. G Ramachandran and the charges he has made about the functioning of D.M.K. government in Tamil Nadu.

SHRI C T. DHANDAPANI (Dharapuram): I want to know about the allegations levelled against D M K. by a man purchased by central leadership.

SHRI HARI KISHORE SINGH: I do not know whether he has been purchased by central leadership but till the other day he was the Treasurer of your party. (*Interruption*).

What has happened in Gaya is very tragic. As Shri Shankar Dayal Singh has pointed our Gaya is a place where Prince Sidhartha sought liberation of Buddha soul and attained enlightment and preached message of peace and hope to the humanity at large. Gaya is also a place where people go to pay homage to the dead and the buried. I would request the hon. Members of Opposition to realise the gravity of the situation and have second thoughts about the intensity of the movement. I do not know whether they want parliamentary institutions to flourish in this country and the peaceful methods of social change to continue. But I would like to know whether gherao and violence have any place in a democratic society. If you indulge in gherao and prevent people from going to post offices, railway stations or hospitals then what recourse the ordinary citizens have unless State authorities provide protection and facilities and if the Government is not competent to provide these ordinary facilities to the ordinary citizens then that Government has no right to exist. If people are prevented violently from getting ordinary Civil benefits, then the Government is justified in using force. I am sorry eight persons were killed. I do not want to enter into the controversy whether they were students or not but as far as my information goes most of them were not students.

No student was killed in Bettiah. Very few were killed in Patna, and my information is that in Gaya also only two persons could be described as students, but I am not sure about that. But what is more important is not whether they were students or not but the fact that precious human lives have been lost. And for what? What is the objective of this movement? That is the question that I want to ask. I would most humbly request Shri Vajpayee to clarify this, because the Vidyarthi Parishad is the mainstay of the movement in Bihar. I do not know whether he will accept it or not, but the Vidyarthi Parishad is the main force behind the movement. I do not know about RSS but the Vidyarthi Parishad has been clearly the mainstay of this movement. I do appreciate the feelings of my Marxist friends, but they have nothing to gain from this movement in Bihar, because Bihar has shown clearly and categorically that the CPM has no place in the political life of Bihar.

SHRI NOORUL HUDA: Nobody is talking of gaining anything. Our party is not interested in gaining anything from the movement.

SHRI HARI KISHORE SINGH: They are interested in the dissolution of the Assembly. Their leader has just said that they are interested in the dissolution of the Assembly. So, we know what they are aiming at. They are not interested in the functioning of this parliamentary institution and the democratic way of life. We know that very well. Therefore, my appeal to my hon. friends of Jan Sangh, S.P. and S.S.P. is this: For God sake, do not destroy the very basis of democratic institutions and parliamentary system of government in your hatred of the ruling Congress Party. To my friends of Jan Sangh, I would request that so long as Jan Sangh accepts the parliamentary way of life, and here I would request Shri Vajpayee in particular, they should consider and ponder over the fact whether the way the movement is going on it will be conducive to the effective functioning of parliamentary democracy in this country or not.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: What about the CPI? He has no advice to the CPI?

SHR HARI KISHORE SINGH: In the context of Bihar, I would request the Home Minister to make an inquiry whether the holders of edible oil who were caught for adulterating edible oil in Gaya are financing this movement or not.

SHRI BHOGENDRA JHA: They are financing it.

SHRI HARI KISHORE SINGH: Who is financing this movement in Bihar. From where is the finance coming?

AN HON. MEMBER From black money.

SHRI HARI KISHORE SINGH. Of course, it is coming from black money. Therefore, I would request the Home Minister to make an inquiry and to take suitable action

The economic situation in Bihar is very difficult We forget the fact that in Bihar, the small cultivators and peasants have been forced to buy diesel at Rs. 3 per litre. This is within my personal knowledge. These people have also been forced to buy urea at the rate of Rs. 2.50 per kg. This is also within my personal knowledge. In this backward State which has been chronically suffering from food shortage, there is a shortage of about 7 lakh tonnes. How are we going to meet a situation like this where the peasants have been forced to buy diesel, urea and fertilisers at very big highly inflated blackmarket prices. It is not real shortage which is there, because things are available in plenty but at higher prices. Therefore, I would request the Central Government to take immediate and effective action so that the agricultural production in Bihar may not suffer and our friends who are not interested in the working of this system may not profit from the difficulties and hardships of the people.

I wish to congratulate the students of Bihar on the fact that most of them have not fallen prey to the machinations of the Opposition parties. They are a very healthy element. I am glad that they have drawn our attention to the rottenness of the educational system Whatever Prof. Nurul Hasan may say or whatever we may say the fact remains that all of us are for improvement and change in the educational system, but nothing has happened in this regard during the last 27 years. It is high time that our educational system is made job-oriented and more productive and more useful.

श्री रामावतार शास्त्री (पटना) : सभापति महोदय, बिहार में जिस तरह का संकट आज उपस्थित है, ऐसा संकट पहले कभी नहीं था। लोगों को खाने को नहीं मिल रहा है, भ्रष्टाचार चरम सीमा पार कर चुका है कोई चीज नहीं मिलती है और कीमतें दिन प्रति दिन आसमान छूती जा रही है। इसी पृष्ठभूमि में बिहार के किसान, मजदूर, छात्र, नौजवान, तमाम लोगों ने यह तय किया है कि महंगाई के खिलाफ, बेकारी के खिलाफ, अभाव के खिलाफ, पेशा टैक्स के खिलाफ, भ्रष्टाचार के खिलाफ, एक आन्दोलन चलाया जाय। इन मांगों के अतिरिक्त छात्रों ने यह मांग भी की कि विश्वविद्यालयों की शिक्षा पद्धति को सुधारा जाय। तमाम विश्वविद्यालयों में जात पात घर कर आया है, उसका खात्मा किया जाय। इन मांगों को लेकर, ता० 16 मार्च, को पूरे बिहार में बिहार राज्य छात्र नौजवान मोर्चे की तरफ से, शान्तिमय आन्दोलन किया गया, तमाम जिलों में प्रदर्शन किया गया। उस मोर्चे में आल इण्डिया स्टूडेण्टस फेडरेशन, स्टूडेण्ट

फेडरेशन ऑफ इंडिया और स्टूडेण्टस एसोशियेशन शामिल थीं। उस दिन तमाम जगहों पर शान्तिमय प्रदर्शन किये गये। लेकिन दुर्भाग्य से पुलिस के लोगों ने शान्त प्रदर्शनकारियों पर बेतिया में गोली चलाई और वहां पर 11 या 12 आदमी मारे गये, जिन में 4 छात्र थे। बाद में कुछ समाज-विरोधी तत्वों ने अलग अलग जगहों पर जा कर कुछ गोलमाल करने की कोशिश की। पटना में भी छात्रों ने प्रदर्शन किया। इस तरह से पूरे राज्य में प्रदर्शन हुआ इस से प्रतिगामी खेमें में घबराहट मच गई और उन्होंने ता० 18 मार्च, का इस्तेमाल किया। छात्र नौजवानों की जायज़ मांगों की आड़ में उन्होंने हत्या, लूट, आगज़नी, वगैरह करने की कोशिश की। उस के बाद पुलिस ने नंगा नाच किया —पूरे शहर को उन लुटरों की मर्ज़ी पर छोड़ दिया गया, आगज़नी करनेवालों की मर्ज़ी पर छोड़ दिया गया। पुलिस चुपचाप बैठी रही—यह सब मैं खुद देख कर आया हूं। हमारे यहां पुनाईचक मुहल्ला है—पुलिस ने घर घर में गली गली में लोगों को घुस कर मारा। एक जगह दो छात्र खड़े थे, सिर पर गोली मारी गई, एक का सिर उड़ गया, वह वहीं मर कर गिर गया, लेकिन दूसरा भाई संयोग से बच गया।

इसी तरह से सर्चलाइट में हुआ — उसका दफ्तर जल रहा था, लेकिन पुलिस का कहीं पता नहीं था। उसके बगल में जनरल पोस्ट आफिस में कोई गड़बड़ी नहीं थी। बी० एम० पी० वहां रक्षा के लिये मौजूद थी। लेकिन उस के बावजूद बाहर के पुलिसवालों ने उसमें घुस कर गोली चलाई, 5 डाक-तार कर्मचारी घायल हुए, जिन में एक आदमी की मृत्यु हो गई— वहां गोली चलाने की कोई वजह नहीं थी। पटना सिटी और गया की बात कही गई है। वहां खदेड़-खदेड़ कर लोगों को मारा गया। गया में एक-एक मील तक पीछा कर के मारा गया।

श्री हरिकिशोर सिंह : गलत है।

श्री रामावतार शास्त्री : लखी सराय स्टेशन पर गोली मारी गई, मुंगेर में गोली चलाई गई, देवघर में गोली चलाई गई, इस तरह से सारे सूबे में गोली चलाई गई, जिस की जितनी भी निन्दा की जाय थोड़ी है। इसी तरह से जहां जहां लूटपाट और आगजनी की गई है तथा कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तरों पर हमले किये गये हैं उस की भी निन्दा की जानी चाहिए। मैं मांग करना चाहता हूं कि इन तमाम घटनाओं की न्यायिक जांच करवाई जाय ताकि जो इस के पीछे तत्व थे, फासिस्ट तत्व थे, चाहे वे आर० एस० एस० के हों, जनसंघ के हों, आनन्दमार्ग के हों या कांग्रेस के अन्दर जो गोरिंग और गोवल्स के चेले घुस आये हैं—जिन में से कुछ के भाषण अभी हम ने सुने हैं —वे ही इन लोगों के काले चेहरे बेनकाब हो सके। यहां लोग तमाम गड़बड़ी करवा रहे हैं। सभापति जी, आज ज़रूरत इस बात की है कि अगर ये ईमानदार हैं तो जूडिशियल एन्क्वायरी करवायी जाय और जितने लोग मारे गये हैं, उन निरपराध लोगों के परिवारों को मुआवज़ा दिया जाय। जनता के अन्दर जो असन्तोष है,

[श्री रामावतार शास्त्री]

खाने को नही मिल रहा है, गल्ला नही मिल रहा है, उस को पहुचाये। डीहोर्डिंग करवाइए, जो छिपा हुआ गल्ला है उस को निकलवाइये।

अन्त मे मैं एक बात कहना चाहता हू—प्राइम मिनिस्टर साहिबा को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की बिहार स्टेट कौन्सिल के सैक्रेटरी श्री जगन्नाथ सरकार ने जो चिट्ठी लिखी है जिस मे उन्होंने इशारा किया है कि किस तरह से सरकार मे आनन्द मार्गी और आर० एस० एस० के आफिसर्ज घुसे हुए है, उस पत्र के दो पैरो को मैं पढ़ देना चाहता हू —यह पत्र उन्होने 4 अप्रैल को प्राइम मिनिस्टर को लिखा था —

"We have always suspected that many Anand Margis and RSS men have infiltrated inside the administration We recently received some concrete instances which we would like to bring to your notice

Akhaura Himachal Pradesh, IPS, Commendant, Bihar, Military Police, at Dehri-on-Sone, posted at the eastern gate—

MR CHAIRMAN: Under the guise or reading a letter, you must not refer to a third party.

श्री रामावतार शास्त्री : लेकिन एक बात मैं जरूर कहूंगा कि अभी भोगेन्द्र झा जी बोल रहे थे, उन्होंने एक चिट्ठी टेबिल पर ले ली है ....

सभापति महोदय : उसी तरह से आप भी ले कर दीजिए।

श्री रामावतार शास्त्री : मैं उसे पढ़ देना चाहता हू —

"A R. Sarengi, Under Secretary, River Valley Project Department, received a printed circular letter issued by A and Marg to its members exhorting them to step up heir agitation in the month of April. We are enclosingt a fascimited of the said letter for your reference."

इस पत्र को श्री भोगेन्द्र झा जी ने टेबिल पर रखा है। मेरी माग है कि इन तमाम बातो की जाच करवाई जाय और इस तरह के अफसरो के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही की जाय। आज जो लोग माग कर रहे है, कि समदीय जनतन्त्र खत्म किया जाय, माग करने वालो मे जनसघ के लोग है, एस० एस० पी० के लोग है मैं उन से कहना चाहता हू कि आप उम्मीदें कर सकते है, ना चनाव हो सकते है, इस मे कोई हर्ज नही है। लेकिन जो इस तरह की माग कर रहे है वे जनतन्त्र के विरोधी है और यह अफसोस की बात है कि ऐसे जनतन्त्र के विरोधियो, की मदद श्री जयप्रकाश नारायण कर रहे है जिन से इस तरह की कोई उम्मीद नही थी। मुझे विश्वास है कि जय प्रकाश जी इन बातो को समझेंगे और इस तरह के जनतन्त्र विरोधियो को अलग-अलग करेंगे, वरना बिहार की जनता इन्हें खुद अलग-थलग कर के छोड़ेगी और हम लोग सिर पर कफन बान्ध कर मैदाने-जंग मे निकलेंगे और इन फासिस्टो के खिलाफ जग करेंगे, सघर्ष करेंगे— यही मेरा निवेदन है।

श्री डी० एन तिवारी (गोपालगंज) : सभापति जी, मैं सब से पहले श्री जयप्रकाश नारायण जी को साधुवाद देना चाहता हू उन्होंने बिहार के अन्दर हिंसा की जो अग्नि लगी हुई थी, उस को एक मोड दिया । मै यह बात अपनी तरफ से ही नही कहता हू— बडे-बडे अफसरो ने भी मुझे बताया है कि यदि जयप्रकाश जी नही रहते तो हिंसा की आग और ज्यादा भडकती । उन्होने मोड दिया है, इस मे कोई शक नही है उस से कुछ शान्ति आई है । हमारा उन से मतभेद राजनीतिक हो सकता है, दूसरे मुद्दो पर हो सकता है लेकिन जो अच्छा काम करे उस को कहना चाहिए कि अच्छा काम किया है ।

श्री नागेन्द्र प्रसाद यादव (सीतामढी) : आप कैसे कहते है कि जय प्रकाश जी बिहार मे अच्छा काम कर रहे है वह गलत काम कर रहे है ।

श्री डी० एन० तिवारी आप अपना मत कहिएगा, लेकिन हमारे मन को रोकने का आप का अधिकार नही है ।

सभापति महोदय उनको अपनी बात कहने दीजिए । उस पर आपत्ति मत कीजिए । कोई भी बिना चेयर की पर्मीशन के खडा हो कर न बोले ।

श्री डी० एन० तिवारी यह मेरा नियम नही है कि कोई अपना मत व्यक्त करे उसको मैं रोकू । मै अपने साथियो से आग्रह करू कि मै अपना मत दू तो उसमे कोई रुकावट न करें । मैं किसी से भी झगडा नही करना चाहूगा । मै अपने साथियो से इधर के या उधर के, कहना चाहता हू कि दोष यदि अपने मे भी हो तो उसको भी कहना चाहिए, उसे छिपाने की कोशिश नही करनी चाहिए । यह सही है कि हम या हमारी पार्टी या हमारी सरकार दो चीज नही कर सकी । हम ब्लैक-मार्केट नही रोक सके और घूसखोरी को बन्द नही कर सके । चाहते हुए भी यह हम नही कर सके तो यह भी हमारी कमजोरी है । वैसे ही अगर कम्युनिस्ट पार्टी मे या जनसंघ मे दोष हो तो उसको कहने मे भडकना नही चाहिए ।

गया का जो वाकया हुआ उसका एक लिंक पहले से है । बिहार मे जो कुछ शुरू हुआ या जो होने वाला था 18 को उसकी शुरुआत दो-तीन दिन पहले हुई । वह बेतिया मे शुरू हुआ और भोगेन्द्र झा मुझे माफ करेंगे, उनकी पार्टी वाला ने किया । (व्यवधान) ।

MR CHAIRMAN You should not disturb him like that.

SHRI BHOGENDRA JHA Let Tiwariji demand a judicial enquiry into Betia

SHRI D N TIWARI I am for it.

इक्वायरी हो, मुझे उसमे कोई विरोध नही है लेकिन मै कह रहा हू कि सबकी इक्वायरी करने के लिए । (व्यवधान) मुझ से क्यो झगडा करते है । मै तो सरकार की कमजोरियो का भी वर्णन करूगा । (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी सभापति जी अपनी पार्टी का नाम लेकर इधर मे बोले है हमने इनको नही टोका हम बाद मे इनका जवाब देगे ।

SHRI D N TIWARI You may differ with me, but do not disturb me

MR CHAIRMAN He should not be disturbed, that much tolerance must be shown

श्री डी० एन० तिवारी मै यह कहना चाहता हू कि यह भी सही है कि 16–17 के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने अपना हाथ खीच लिया इसमें भी कोई शक नही है । पटना मे जो घटना हुई उसमें इनका बहुत कम योग

[श्री डी०एन० तिवारी]

था । लेकिन शुरू करने में इनका योग था (व्यवधान) एक बात और यह है कि चूंकि शुरूआत हो चुकी है इसलिए बडे बडे नेताओं को छोडकर इनके और वर्कस की यह भावना गई नही थी कि इसलिये कही कही देखा कि कम्युनिस्ट पार्टी के लोग भी आ गए लेकिन इन्होंने अपना हाथ खीच लिया था इसमें भी कोई शक नही है ।

अभी तो मैं ने दो मिनट भी नही लिए ।

सभापति महोदय पांच मिनट हो गए हैं, दो मिनट और है । मुझे सात मिनट पर स्टिक्ट रहने के लिए कहा गया है ।

श्री डी० एन० तिवारी : मुझे अनडिस्टर्ब्ड बोलने दिया जाय । एक बात और है कि जवान और बूढ़ो मे डिफरेन्स किया जाय । जवान जल्दी जल्दी बोलते हैं ... जल्दी-जल्दी नही बोल सकते हैं इसलिए ज्यादा समय देना चाहिए ।

सभापति महोदय उनके लिए दो मिनट और ।

श्री डी० एन० तिवारी दूसरी बात मै यह कहना चाहता हू कि यह मामला केवल एकोनामिक्स का नही है यह पोलिटिकल है । पोलिटिकल ज्यादा है और एकोनामिक्स का कम है । वजह है कि स्टूडेन्टस की जो माग थी उनमे 90 प्रतिशत के करीब बिहार गवर्नमेंट ने मान ली थी इसलिये एकोनामिक फ्रंट पर उनके बहुत कम मतभेद रह गए थे। चीफ मिनिस्टर ने कहा था कि इस दस परसेन्ट को भी हम बात करके तय कर सकते है । जब पालिटिक्स की बात आई तो स्टूडेन्ट्स पीछे रह गए और पार्टी वाले आगे चले गए । इसमें जो पार्टीज है उसकी जाच सरकार करेगी

श्री भागेन्द्र झा आपको पता नही है ।

श्री डी० एन० तिवारी : । लेकिन हम बोलेगे तो आप झगड़ा करने के लिए तैयार हो जायेंगे । कहा जाता है कि गया मे बहुत ज्यादा मृत्यु हुई । हो सकता है लेकिन किनकी मृत्यु हुई और क्यो छिपाया गया ? इसमे मुझे मालूम होता है कि उसमे कुछ दल के लोग रहे होंगे जो मारे गए और उनकी लाशे इसलिए छिपाई गई जिससे उस दल की बदनामी न हो अगर कोई डेथ हुई है ना । यदि नही हुईतो सभी लाश पोस्ट मार्टम के लिए गई । अगर नही गई तो यह मालूम होता है कि दल के लोगों ने लेकर उनको छिपा दिया ताकि उनके दल की बदनामी न हो जाय । हमने देखा है जब डकैत मारे जाते हैं तो अपने साथियो की लाश लेकर वे चले जाते हैं, उनको छोडते नही है । (व्यवधान)

तो स्टूडेन्ट्स का प्रोमेशन जयप्रकाश जी के आन्दोलन के बाद बहुत शान्तिमय ढंग से चला और आज तक भी चलता है हमारे जिले में भी एक जगह फायरिंग हुई थी जो सरकार की कमजोरी थी । हमारे जिले में ... द्वारा मैं बिना गोली के भी काम चल सकता था केवल धमाके से काम चल सकता था गोली चलाने की जरूरत नहीं थी ... गोली चली । हाला यह है कि जब ... तनाव की स्थिति आती है तो जैसे लोगों का मूड बिगड जाता है वैसे ही सरकारी अफसरों का भी मूड बिगड जाता है । बिगडना नही चाहिए लेकिन वे भी मनुष्य है हाड माम के होते है, उनका भी मूड बिगडता हैं और कुछ ज्यादती भी हो जाती है । अब कहा कहा सीमा से अधिक हुआ है, कहां कहा फाजिल हुआ है वह तो जाच करने से ही पता लग सकता है । इसकी जाच की जाये ।

एक बात मै और कहूगा कि हमारे यहां बाजार मे चीजे मिल नही रही है । तो यह हमारा एडमिनिस्ट्रेटिव फेल्योर है । उन चीजों को ब्लैक मार्केट में बिकने दिया जाये और असल दाम पर बाजार मे वह चीजें न मिले यह एडमिनिस्ट्रेटिव ... है, ... लेकिन ... एडमिनिस्ट्रेशन को उतना मजबूत नहीं बना सके हैं कि इसे रोक सकें ।

इसलिए मैं गृह मंत्री जी से कहूंगा कि इस पर भी उनको बड़ी गंभीरता से विचार करना चाहिये कि जो चीजें ब्लैक मार्केट में मिल नहीं रही हैं वह आती कहां से हैं? अगर ब्लैक मार्केट में मिल रही है तो उनको यह जब्त करके ठीक दाम पर बाजार में बिकवाने का प्रयत्न करें। अगर इस बात को नहीं देखा गया तो हम समझते हैं लोगों का आक्रोश कम नहीं होगा। बिहार के लोग बहुत गरीब हैं जैसा कि अभी डी० एम० के० के मित्र ने कहा कि वहां की सबसे कम पर-कैपिटा इनकम है। जब वहां पर सब से ज्यादा गरीबी है तो आप जानते हैं 'बुभुक्षित किन करोति पापम्' जो भूखा है वह कौन सा पाप नहीं कर सकता है। इसलिए यदि ब्लैक मार्केट को रोक कर वहां पर बिहार में सामान नहीं पहुंचायेंगे और लोग भूखे रहेंगे तो ऐसी घटनायें होती रहेंगी। इन शब्दों के साथ में कहना चाहता हूं कि सरकार को भी सचेत होना चाहिए और हमारे जो राजनीतिक दलों के भाई हैं उनकी गलती है तो उसको भी सुधारने की कोशिश करें।

सभापति महोदय : साढ़े तीन बजे प्राईवेट मेम्बर्स का काम शुरू होना चाहिए है और अब आधा घंटा बचा है इसलिए आधे घंटे में आपको समय का एडजस्टमेंट करना चाहिये।

15.00 hrs

श्री चिरंजीव झा (सहरसा) : सभापति जी हमारा बहुत सा समय चला गया है, इस लिए इन सबका ध्यान रखते हुये, हमें समय दीजिये।

पहली बात तो मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि मेरे पास हमारे माननीय सदस्य श्री वाजपेयी जी की जनसंघ का कच्चा चिट्ठा है। मैं भुक्तभोगी हूं इसलिए मैं समय चाहूंगा ताकि इन लोगों की क्या हरकतें है वे सब मैं आपको तथा इस महान सदन को बता सकूं;।

सभापति यह कहावत है, गधा गिरा आसमान से और रूठा नगर के लोगों से। इन लोगों की हालत यही हो गई है। बार-बार ये लोग मार खाते हैं जनता इनको पीटती है और हर चुनाव में यह पछाड़ खाकर बोखला जाते हैं और यह जनतंत्र पर ही अपना दोष दिखाते है और चाहते हैं कि जनतंत्र को उखाड़ कर फेंक दिया जाये। ये फासिस्टवाद की प्रवृत्ति पैदा करना चाहते हैं।

सभापति जी साफ बात है कि देश में भ्रष्टाचार है, अभाव है, मंहगाई है और उसके खिलाफ अगर देश में जमाखोरी और मुनाफाखोरी है, अहिंसक आन्दोलन होता है, छात्र आन्दोलन होता है जो यह स्वागत की बात है हम भी उसका समर्थन करते हैं। उनकी यह बात उचित है और इसमें कोई इंकार नहीं कर सकता। लेकिन अगर वह आन्दोलन हिंसा का रूप ले ले और वह जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर दे सार्वजनिक संपत्ति को नष्ट करें तो सरकार एक तटस्थ दृष्टा की तरह देखती नहीं रह सकती। ऐसी अवस्था में किसी भी सरकार के लिये लाजमी हो जाता है कि राष्ट्र की संपत्ति एवं साधन तथा लोगों की जान माल की रक्षा के लिए ऐसे बर्बर समाजद्रोही तत्वों पर गोली चलाये।

सभापति जी, मैं आप को बताना चाहता हूं कि हाल ही में जब मैं 7 तारीख को अपने क्षेत्र में गया था, तो मेरे साथ क्या घटना घटी और इसमें इन लोगों का कितना बड़ा हाथ है——(व्यवधान) जनसंघ और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के लोगों को।

[SHRI ISHAQUE SAMBHALI *in the Chair*]

15.04 hrs.

सभापति महोदय, जरा ध्यान दें। जब मैं 7 तारीख को अपने क्षेत्र सुपौल पहुंचा, जो कि एक सब डिवीजनल टाऊन है, तो मैंने अपने

[श्री चिरंजीव झा]

मित्रों से मिलकर वहां की स्थिति की जानकारी ली। उन लोगों ने बताया कि वहां 19 मार्च को स्टेशन को नुक्सान हुआ था और गोदाम लूटा गया था उसके बाद से, उन लोगों ने बताया वहा पर शान्ति है और किसी तरह का उपद्रव नही है। और आजकल चार जगहो पर कुछ छात्र दिन भर का उपवास रखते हैं। मैंने उनसे कहा कि हम चाहते हैं एक बार उन लोगो के पास चलें। उन लोगो ने भी सलाह दी। उसके बाद मे सभी मित्रों के साथ चारो स्थान पर उन लोगो के पास गया और उन लोगों से मिला और उन लोगो ने बातें की। बड़ी शान्ति मे उन लोगो ने अपनी बातें कही और हम ने भी अपनी बातें कही। फिर वहा से चलकर मे सहरसा गया जो कि डिस्ट्रिक्ट टाउन है वहा पर मैंने कलैक्टर से बाते की और उनको सुपौल की वर्तमान स्थिति की जानकारी दी। मैंने यह भी सलाह दी कि दूसरे तीसरे दिन जो हगामा होने वाला है उसके लिए भी प्रशासन को सावधान रहना चाहिये। इसके बाद कलैक्टर ने हमसे पूछा कि क्या आप सहरसा भी घूमे हैं। मैंने उनसे कहा कि मै यहा नही घूमा हू क्योकि हमारे लोग यहा उपस्थित नही हैं, उनसे हमने बाते की हैं। इसके बाद जब मैं वहा से निकला और रोड पर आया तो जनसंघ के जो एम० एल० सी०है, वे पीछे बैठे हुये थे और वहा पर आर० एस० एस० के लोग और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के लोग भी थे और उन लोगो ने समझ लिया था मेरे बारे मे कि मैं यहा आने वाला हू। उन को यह सूचना थी। उन सब लोगों ने साजिश करके अपने लोगो को मेरा घेराव करने के लिए भेजा और उन लोगों न घेराव करके हम से कहा कि हम उनको अपना त्यागपत्र लिखकर देवे। मैंने कहा कि मैं त्यागपत्र नहीं दूंगा और इसलिए नही दूंगा क्योंकि मुझे विश्वास है कि त्यागपत्र से समस्या का समाधान नही होगा। मैंने कहा कि अगर वे लोग मुझे कंविन्स कर दे कि मेरे त्यागपत्र देने से समस्या का समाधान हो सकता है, तो मै त्यागपत्र दे सकता हू। जब मैंने उनकी बात को नही माना तो उन लोगो ने हमारे साथ जोर जबर्दस्ती की और हाथापाई करना प्रारम्भ कर दिया। उसके बाद सभापति जी, करीब एक घटे तक उन लोगो ने मेरा घेराव किया और बाद मे पुलिस आई और उसने आकर मुझे छुडाया। पुलिस भी एक दर्शक की भांति बहुत देर तक हा हा, हू हू करती रही। इसी बीच घेराव करने वाले लोगों ने हमारे कपड़े फाड दिये और हाथ की घडी खीच ली। चश्मा और कलम ले लिया (व्यवधान).. इस तरह का दुष्कर्म इन लोगों ने किया है।

सभापति जी, मैं इनको चेतावनी देना चाहता हू और कहना चाहता हू कि इन लोगो को भी हम लोग इसी तरह से परेशान कर सकते हैं। हमारे साथ जनता है और विद्यार्थी हमारे साथ है। ये लोग हत्या करते हैं और घरो मे चोरी करते हैं। यह लोग जनता के सामने कभी खडे नही होते है और खडे होते हैं तो बुरी तरह पछाड खाते है। इसलिए ये लोग चोरी चोरी हम लोगों पर हमला करना चाहते है। मैं आपको बताना चाहता हू कि इन लोगो की ऐसी करतूते है, ऐसी घिनौनी करतूते है कि इन लोगो को खुद शर्म आनी चाहिए। इनकी इन हरकतो के कारण बार बार जनता इनकी पिटाई करती है, फिर भी ये लोग ऐसी हरकत करने पर आमादा है।

सभापति जी, आज अगर छात्र आन्दोलन करता है, कि हमारी पढ़ाई का जो तरीका है, वह ठीक नहीं है और उसमें सुधार हो, तो यह ठीक बात है। अगर वह कहता है कि हमको सामान नहीं मिलता है और वह हमको मिलना चाहिये और ठीक से मिलना चाहिये, उचित दाम पर मिलना चाहिये, तो यह बात ठीक है। मंहगाई, जमाखोरी, मुनाफा-खोरी तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ अगर उन सब का आन्दोलन है तो हम लोग भी उसका स्वागत करते हैं। हमे विश्वास है कि उसका असर हमारे अधिकारियों पर भी पड़ेगा और हमारे एडमिनिस्ट्रेशन पर भी और उसमें सुधार आयेगा लेकिन ये जनसंघी लोग और यह आर० एस० एस० वाले चाहते हैं कि (व्यवधान..)

SHRI DHAMANKAR (Bhiwandi): Sir, this sort of boeing is not Parliamentary. Hon. Members should not indulge in this.

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN (Badagara): This is RSS training.

सभापति महोदय : आप सही फरमाते हैं मैं भी समझता हूं कि इस तरह की कोई चीज नहीं होनी चाहिए। ये सीनियर मेम्बर हैं और उनके लीडर भी यहां मौजूद हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि इस चीज का वे ख्याल करेंगे। इतना ही कहना काफी होगा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, हम नहीं चाहते कि इस तरह की बीज हो। श्री उन्नीकृष्णन ने कहा कि यह आर० एस०. एस० की ट्रेनिंग है, इस से हम प्रोवोक होने वाले नहीं हैं। (व्यवधान...)

श्री चिरंजीव झा : सभापति जी, आज की जैसी स्थिति है, उसमें जहां सरकार का कर्तव्य है कि वह जनता की कठिनाईयों को दूर करने के लिये जल्द से जल्द समुचित प्रयास करे। वहीं इन विरोधी पक्ष के लोगों का भी यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि जो लोग हिंसा करते हैं, उपद्रव करते हैं, लूट खसोट, तोड़-फोड़ और आगजनी करते हैं, उसका वे खुलकर विरोध करें। इस तरह से किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। लेकिन ऐसा वे नहीं करेंगे। इन को तो अपना उल्लू सीधा करना है, विद्यार्थियों का मुखौटा ओढ़ कर उनको बदनाम कर के ये यह सब कुछ करते हैं। जैसे गधा शेर की खाल ओढ़ कर खेत चर रहा था वैसे ही ये लोग विद्यार्थियों का मुखौटा लगा कर सारी गड़बड़ करना चाहते हैं। ये जो छात्र समुदाय है, विद्यार्थी है, वे हमारे राष्ट्र के भावी कर्णधार हैं। इन के ऊपर देश का बहुत बड़ा भरोसा है और कल सारी जिम्मेदारी उन के कन्धों पर जाने वाली है। हम मानते हैं कि वे किसी से भी कम देश-भक्त नहीं हैं। हमारे छात्र समझदार हैं और असल बात को भी समझते हैं। इसलिए उन की जो कठिनाई है, उनकी जो दिक्कतें हैं, यह महान सदन और हमारे पक्ष के सारे लोग उस को महसूस करते हैं, हम लोगों की उन के प्रति पूरी सहानुभूति है। हम लोग जल्दी से जल्दी उस का समाधान चाहते हैं। हम चाहते हैं हमारे गृह मंत्री जी ऐसी व्यवस्था करें कि विद्यार्थियों के नेताओं से सीधे सम्पर्क स्थापित करें, उनकी बातें सुनें, उन की मांगों की पूर्ति करें और ये जो विचौलिए बीच में जा कर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं इन लोगों को उस का मौका न दें। इन शब्दों के साथ मैं आप को धन्यवाद देता हूं कि आपने हमें इतना समय दिया।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, इस चर्चा में बार बार मेरे दल की ओर स्वयं मेरी आलोचना की गई है। मैं यह दावा नहीं करता कि हम कोई गलती नहीं कर सकते, कोई त्रुटि नहीं कर सकते। उदाहरण के लिए सहरसा में जो कुछ हुआ वह निन्दनीय है। उस कांड के साथ हमारे दल का जो भी व्यक्ति शामिल है उसका आचरण आपत्तिजनक है। हम ने उन से सफाई मांगी है और अगर उन का हाथ उसमें पता

[श्री अटल विहारी वाजपेयी]

लग जाएगा तो हम दलीय स्तर पर उन पर कार्यवाही भी करेंगे। लेकिन कांग्रेस के मित्रों से मेरा एक निवेदन है कि बिहार मे जो कुछ हुआ उसकी गहराई में जा कर सोचने का प्रयत्न करें। वे बलि के बकरे न ढूंढें। अपनी विफलता पर परदा डालने के लिए वे बहानों की तलाश न करें। राजनैतिक लाभ उठाने के लिए वे आरोप लगाने की प्रकिया में न फसें। गुजरात में जो कुछ हुआ और बिहार में जो कुछ हो रहा है वह कोई राजनैतिक दल नहीं कर सकता। सब राजनैतिक दल मिल कर भी नहीं कर सकते। जनता बिगड़ गई है। लोग बगावत पर आमादा हैं। आम आदमी के धैर्य का बांध टूट रहा है। सारी वस्तुओं का अभाव हो रहा हैं, महंगाई आसमान चूम रही है, विषमता की खाई बढ़ रही है और प्रशासन में चोटी से लेकर एड़ी तक भ्रष्टाचार व्याप्त है।

श्री नागेन्द्र प्रशाद यादव : गलत है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : बिहार में आन्दोलन अभी शुरू हुआ है मगर मेरे पास 11 सितम्बर 1973 का कांग्रेस के एक एम एल ए का दिया गया वक्तव्य है, उसकी दो लाइनें मैं उद्धृत करना चाहता हूं :

"Shri Jai Narayan: The State Congress is full of corrupt and discredited leaders. He charged the Government with functioning as a private concern of the Ministers and officials."

यह हमारा कहना नहीं है। कांग्रेस में भी ऐसे लोग हैं जो यह अनुभव करते हैं कि प्रशासन जिस तरह से चलना चाहिए नहीं चल रहा है। बिना पैसा दिए आज सरकारी दफ्तरों में काम नहीं होता है। इस से आम आदमी का क्षुब्ध होना स्वाभाविक हैं, आवश्यक हैं। मैंने पिछले विवाद में कहा था कि यह एक पार्टी की विफलता नहीं है, सारी व्यवस्था टूट रही है, जनता लोकतंत्र में निष्ठा खो रही है। किसी के भड़काने से लोग गोलियां नहीं खाया करते। अगर बिहार में जो कुछ हो रहा है वह हम कर रहे हैं तब तो हम बड़े शक्तिशाली हैं। मगर हम इतने शक्तिशाली नहीं हैं। गुजरात में तो हमारी कोई स्थिति भी नहीं है। मगर गुजरात में सरकार को त्यागपत्र देने के लिए मजबूर होना पड़ा। गुजरात की विधान सभा तोड़नी पड़ी क्योंकि गुजरात में जनता बिगड़ी और आज बिहार में जनता का रोष जाग रहा है। आप उस के कारणों में जाने की कोशिश कीजिए। क्या कोई इस बात से इनकार कर सकता है कि बिहार आर्थिक दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है ? प्राकृतिक साधनों से भरपूर लेकिन गरीबी में अकाण्ठ डूबा हुआ बिहार अभी तक नहीं बिगड़ा यह ताज्जुब की बात है, अब बिगड़ गया यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है। 21 सितम्बर 1973 को बिहार के राज्यपाल क्या कहते हैं, यह मैं बताना चाहता हूं, आन्दोलन तो बाद में हुआ। हिन्दू के संवाददाता ने बिहार के राज्यपाल से भेंट की। 37 लाख रुपये के एम्प्लायमेंट देने के क्रैश प्रोग्राम के बारे में पूछा। भण्डारे साहब ने क्या कहा ?

"There is no crash programme in Bihar. There is only one programme in the State, and that is crush programme."

यह आन्दोलन से पहले की बात है। बेकारी से त्रस्त विद्यार्थी बिगड़े। अब कहा जा रहा है, कांग्रेसी सदस्य कह रहे हैं, हमारे अन्य मित्र कह रहे हैं कि विद्यार्थियों की मांगें उचित हैं। ये मांगें कब से उचित हो गईं ? क्या यह सच नहीं है कि आज मांगे तभी उचित होती हैं कि जब उन के समर्थन में लोग सड़कों पर निकल आते है ? शिक्षा पद्धति में परिवर्तन की मांग अगर उचित है तो उस को मनवाने का तरीका क्या है ? इस सदन में सब

कांग्रेसी सदस्य कह रहे थे कि शिक्षा पद्धति दोषपूर्ण है । उस को बदलेगा कौन ? अगर शासन बदलने के लिए तैयार नही है तो क्या विद्यार्थी अपने भविष्य को अधकार में डुबा कर विश्वविद्यालयों की खाक छानते फिरे ? मैं बिहार के विद्यार्थियों को बधाई देना चाहता हू कि वे अपनी उचित मांगो को मनवाने के लिए आन्दोलन के रास्ते पर आए । यह ठीक है कि आन्दोलन शातिपूर्ण होना चाहिए । लेकिन मैं कास्टीट्यूशन में और एक्स्ट्रा-कास्टीट्यूशन मे एक अतर करना चाहता हू । आन्दोलन शातिपूर्ण हो । मगर आन्दोलन एक्स्ट्रा कास्टीट्यूशनल हो सकता है । हमारे कांस्टीट्यूशन मे सत्याग्रह भी नही है । किसी से हाथ जोड कर कहना कि आप त्यागपत्र दे दे कास्टीट्यूशन मे इस की व्यवस्था नही है । बिहार की विधान सभा भग करने की माग करना सविधान के अतर्गत नही है । लेकिन एक बार केरल की जनता बिगडी थी तो केरल की विधान सभा भग की गई थी ।

श्री भोगेन्द्र झा केरल मे सत्ता नही बदली थी । ऊपर से हस्तक्षेप किया गया था ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी . जो बात केरल के लिए भोगेन्द्र झा जी कह रहे है वह बिहार के लिए नही कह रहे हैं । केरल और बिहार को नापने के दो गज नही हो सकते ।

सभापति जी, स्थिति यह है कि तर्कसंगत और न्यायोचित मागें भी तब तक सुनी नही जाती, जब तक जनता उन के पक्ष मे सडको पर नही आती । रेलवे कर्मचारियों ने हड़ताल की धमकी दे दी तो बोनस के बारे मे श्री ललित नारायण जी मिश्र चर्चा करने के लिये तैयार हो गए, वरना वह बात करने के लिये भी तैयार नही थे....

रेल मंत्री (श्री एल० एन० मिश्र) : हमेशा तैयार था । हम बार बार कहते है कि चर्चा करने के लिये तैयार है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी . आप ने कहा था कि बोनस नही मिलेगा, बोनस के बारे मे बात नही हो सकती ।

श्री एल० एन० मिश्र आप प्रामीडिरज को देखिये ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी . मेरा निवेदन है कि आज लोगो के अन्दर से यह विश्वास डिग गया है कि शान्तिपूर्ण तरीके से उन की बात सुनी जायगी । यह विश्वास फिर से प्रतिष्ठित होना चाहिये । यह प्रश्न आरोप-प्रत्यारोप का नही है, इस विश्वास को कायम करने के लिये आप क्या कर रहे है?

सभापति जी, गृह मत्री जी ने अपने वक्तव्य मे यह बात कही है—

"I sincerely hope that all sections of the House would join in my earnest appeal to the students and others in Bihar, Gujarat and elsewhere to eschew violence and co-operate wholeheartedly in maintenance of peace and harmony and in upholding the basic values of our democracy society"

मुझे लगता है कि बिहार के विद्यार्थी जो कुछ कह रहे है उस मे और गृह मत्री जी के कथन से कोई अन्तर नही है । विद्यार्थी जो कह रहे हैं उस का एक अश मैं पढ कर सुनाना चाहता हू—

"प्रदेश की मौजूदा सरकार कातिल है, यह खत्म हो । लेकिन मात्र मत्रिमडल मे हेर-फेर हमारा लक्ष्य नही है । सरकार बदलना या नयी विधान सभा का चुनाव भी हमारा लक्ष्य नही है । हमारा लक्ष्य है उस के चरित्र को बदलना । लोकतात्रिक मूल्य नष्ट होते है, लोकतात्रिक प्रक्रियाये भ्रष्ट होती है, तो लोकतात्रिक सस्थाये खिलौना बन जाती है । आज यही स्थिति है,

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

इसी कारण लोकतंत्र की औपचारिकता एक मुखौटा बन गई है जिस के पीछे भ्रष्टाचार, दामों की लूट और आतंक का राक्षस अपना मुंह छिपाता है । हमारा लक्ष्य है बालिग वोट के अधिकार को वास्तविक बनाना, लोकतांत्रिक मूल्यों, प्रक्रियाओं और संस्थाओं के पीछे बिराट और संगठित जनशक्ति को खड़ा करना क्योंकि ऐसी लोकतांत्रिक शक्ति ही महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी के राक्षस का वध कर के प्रत्येक नागरिक को सुरक्षा और आत्म सम्मान का जीवन प्रदान कर सकती है । हमारी लड़ाई आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों के मौजूदा घिनौने स्वरुप को बदलने की जनता को उस की शक्ति और अधिकार से लैस करने की लडाई है ।"

श्री हरिकिशोर सिंह : यह आप का ड्राफ्ट है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर मेरा ड्राफ्ट है तो आप ने जो दोषरोपण मेरे ऊपर किये हैं उन का कोई आधार नहीं रह जाता । बिहार के विद्यार्थी बड़े उद्देश्यों के लिये लड़ रहे हैं । सरकार को गम्भीरता से विचार करना होगा कि देश के ढांचे में बुनियादी परिवर्तन कैसे लाया जा सकता है ।

मैं कांग्रेस के मित्रों से पूछना चाहता हूं--अगर सरकार शिक्षा पद्धति में परिवर्तन करने की उचित मांग को न माने तो क्या विद्यार्थियों को हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना चाहिये ? अब वे नहीं बैठेंगे--यही परिवर्तन आ गया है और यह परिवर्तन लाने में हमारी प्रधान मंत्री जी ने बड़ा योगदान दिया है । अब जनता मन को मसोस कर नहीं बैठेगी, अब जो अभाव से पीड़ित हैं जो वंचित हैं, जो शोषित हैं, जो दलित हैं, वे वर्तमान के साथ समझौता नहीं करेंगे । आप ने अपेक्षा का ज्वार जगाया है, अगर वह अपेक्षा पूरी नहीं करेंगे तो अपेक्षा बगावत के रूप में सडकों पर निकलेगी--आज यही हो रहा है ।

29 दिसम्बर, 1970 को प्रधान मंत्री जी ने चण्डीगढ़ में भाषण करते हुए कहा था--अगर गरीबी बढ़ेगी, विषमता बढ़ेगी तो लोग हिंसा का आश्रय लेंगे, लोग सड़कों पर निकल आयेंगे--आज वही हो रहा है । जिन्होंने आंधी के बीज बोये हैं उन्हें तूफ़ान की फसल काटने के लिये तैयार रहना चाहिये ।

बिहार में जो कुछ हुआ है--उस में एक घटना अभी तक पूरी तरह से सामने नहीं आई है । सरकार ने भी सर्च लाइट पर हुए हमले की जांच का आदेश नहीं दिया है । यह प्रेस की स्वाधीनता का मामला है । बिहार के काण्ड के लिये हमारा दल दोषी ठहराया जाता है । किन्तु सचाई क्या है ? कुछ दिन पूर्व सर्च लाइट के सम्पादक यहां आये थे । उन्होंने एक प्रेस कान्फरेंस की थी। मैं उन के कुछ शब्दों को यहां उद्धृत करना चाहता हूं--

"The burning down of the offices and press of the *Searchlight* was a deep-laid conspiracy against an outspoken newspaper, Shree S. K. Rau, its Editor, said here today.

He said the complicity of the State Government in the conspiracy was clear from the facts that the Police were not ordered to take action against the mob and the fire-brigade services were not available even on the day after the arson.

Mr. Rau was emphatic that the mischief-mongers were neither students nor the Anand Margis. He also excluded the R.S.S. and the Jan Sangh.

He said, the Bihar CPI was particularly uphappy because of the criticism it got."

(*Interruptions*).

SHRI BHOGENDRA JHA: Mr. Rau is himself a Jana Sanghi. . .

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, सर्च लाइट के सम्पादक ने जांच की मांग की है और यह कहा है कि अगर जांच कमीशन बनेगा तो वे और तथ्यों को कमीशन के सामने रखेंगे । मैं जानना चाहता हूं कि सरकार सर्च लाइट पर हुए हमलों और अग्नि काण्ड के लिये जांच कमीशन बनाने को तैयार क्यों नहीं है ?

दूसरी बात —गया के बारे में है । बहुत सी बातें कही गई हैं, मगर मेरे सामने श्री मुद्रिका प्रसाद सिंह, एक्स एम०पी० का बयान है, वे कांग्रेस के हैं, एक जिम्मेदार आदमी हैं—उन्होंने कहा है—

"He told reporters here today that about 40 to 50 persons were killed in indiscriminate police firings at Gaya on April 12, according to a general public belief.

He said that for 48 hours the entire people of Gaya were under house arrest. The patrolling armed forces announced every five-minute that anybody coming out of his house would be shot dead."

यहां गृह मंत्री महोदय का बयान गलत साबित हो जाता है ।

"Mr. Singh said that according to official figure only 8 persons were killed in the police firing. But God alone knew how many people were killed. But the fact remained that several bodies were whisked away in police vans. The bodies were also dragged up to a considerable distance. The clot of bloods on several roads spread over a distance of 20 ft. bore testimony to it.

He said that the police opened fire near the post office, Jain Mandir, Wool House, Kiran Cinema, Sabji Market, Motimahal and at other places. The body of a 12-year boy was found abandoned in the river Falgu.

The students agitation, he said, was most peaceful. It was spontaneous. There was a mass upsurge among the people as well. The work in all the Government offices had been totally paralysed by offering *dharna* which had been most peaceful. There was no physical obstauction by the students.

He said that the local officials had conspired to resort to firings only to teach a lesson to the students and the people of Gaya. Although the firings were opened at 3 P.M. he had secret information that the conspiracy was hatched at 9 in the morning on that day."

यह किसी प्रतिपक्ष के सदस्य का बयान नहीं है, यह श्री मुद्रिका प्रसाद सिंह जो कांग्रेस के एम०पी० रहे हैं, उन का बयान है । हमारे कांग्रेस के सदस्य कह रहे थे कि जो मरे हैं उन में विद्यार्थी नहीं हैं । क्या इस का अर्थ यह नहीं है कि आन्दोलन केवल विद्यार्थियों तक सीमित नहीं है, इस में जनता भी बड़ी मात्रा में शामिल हो गई है ? क्या यह जन-आन्दोलन नहीं बन गया है ? क्या यह सही नहीं है कि पुलिस ने महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया है ?

श्री उमा शंकर दीक्षित : यह सही नहीं है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी क्या आप देखने गये थे ? मेरा दीक्षित जी से निवेदन है कि बिहार की सरकार जो कुछ कर रही है केवल उस पर भरोसा न कर के आप केन्द्र की तरफ़ से जांच कराइये । महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार का मामला किसी पार्टी का

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

मामला नहीं है । अगर यह आरोप गलत है तब तो सरकार को अदालती जांच की मांग स्वीकार करने में और भी आपत्ति नहीं होनी चाहिये । तथ्य सामने आ जायेंगे, दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा जो झूठे आरोप लगा रहे हैं उन की कलई खुल जायेगी । बिहार में गोली चली, इतने लोग मारे गये, सर्च लाइट पर हमला हुआ—इन सब बातों की जांच से सरकार क्यों डरती है ?

मुझे खेद है कि इस चर्चा में श्री जय प्रकाश नारायण जी का नाम भी घसीटने की कोशिश की गई है । जो उन के चरणों में बैठने की पात्रता भी नहीं रखते, वे आज उनके माथे पर कीचड़ उछालने की कोशिश कर रहे हैं ।

जय प्रकाश जी से मतभेद हो सकता है लेकिन उनकी देश भक्ति में कोई सन्देह नहीं कर सकता है । लोकतंत्र एक साधन है, साध्य नहीं हैं । जयप्रकाश जी को पूरा अधिकार है कि वे यह कहें कि लोकतन्त्र के वर्तमान ढांचे में बुनियादी परिवर्तन की आवश्यकता है । लेकिन इसके कारण कोई यह नहीं कह सकता.... (**व्यवधान**)..

आज बिहार जल रहा है, बिहार की सड़कें रक्तरंजित हैं, सरकार जुल्म पर आमादा है । संगीनों से लोगों को मारा जा रहा है लेकिन संगीनों पर बैठा नहीं जा सकता मैं साहिर लुधियानवी की एक गज़ल का एक हिस्सा रखते हुये खत्म करना चाहता हूं :—

जुल्म फिर जुल्म है बढ़ता है तो मिट जाता है,
खून फिर खून है, टपकेगा तो जम जायेगा,
तुमने जिस खून को मक्तल में दाबाना चाहा,
आज वह कूचा ओ बाजार में आ निकला है,
कहीं शोला, कहीं नारा, कहीं पत्थर बनकर ।
खून चलता है तो रुकता नहीं संगीनों से,
सर उठता है तो दबता नहीं आईनों से,
जुल्म की बात ही क्या, जुल्म की औकात हीं क्या,
जुल्म बस जुल्म है आगाज से अंजाम तलक
खून फिर खून है, सौ शक्ल बदल सकता है,
ऐसी शक्ल कि मिटाओ तो मिटाये न बने,
ऐसे शोले कि बुझाओ तो बुझाये न बने,
ऐसे नारे कि दबाओ तो दबाये न बने ।

पुलिस अत्याचार से समस्यायें हल करने के बजायें विद्यार्थियों के साथ, नयी पीढ़ी के साथ सम्पर्क करने का सेतु स्थापित कीजिये, सरकार और प्रतिपक्ष के बीच पुल टूट गया है वह स्थापित कीजिये । आप की विश्वसनीयता खत्म हीं गई है । उसको कायम करने की कोशिश कीजिये । हमको दोष देने से समस्या हल नहीं होगी । यह प्रश्न एक पार्टी का नहीं है, सारे देश का है । गुजरात एक चेतावनी थी, बिहार में वह चेतावनी दोहराई जा रही है । अगर हम नहीं सुनेंगे तो देश भर में आग भड़केगी जो हम सबको ले बैठेगी ।

श्री **विभूति मिश्र** (मोतीहारी) : अभी बिहार के बारे में बहुत तरह की मांग हुई। एक बात यह है कि बिहार का मामला राशन और भाषण से तय होने वाला नहीं है। यदि आप चाहते हैं कि बिहार के मामले को राशन और भाषण से तय कर लें तो यह तय होने वाला नहीं है। बिहार की आर्थिक परिस्थिति बहुत खराब है। अंग्रेजी राज्य के जमाने मे बिहार की आर्थिक दृष्टि से 11वीं पोजीशन थी लेकिन आज नागालैण्ड के बाद आखिरी पोजीशन बिहार की हो गई है। गरीबी की वजह से आज बिहार में छात्रो के अन्दर असन्तोष है। छात्र समझते हैं हम पढ़ कर क्या करेंगे ? अपने मां बाप की जायदाद जमीन को बेचकर छात्र पढ़ता है और फिर बी० ए०, एम० ए० पास करने के बाद उनको कहीं जगह नहीं मिलती है। इस तरह उनके घर की जमीन जायदाद भी बर्बाद हुई और पढ़ाई के बाद छात्र भी बेकार हो गया। यह बेकारी का मसला जो बिहार में है उसको केन्द्रीय सरकार को हल करना चाहिये। कितना ही समय बीत गया लेकिन बिहार की आर्थिक परिस्थिति में सुधार नहीं हुआ। अगर आप वहां पर आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं करेंगे तो बिहार की यह ज्वाला मिटने वाली नहीं है। (**व्यवधान**) पीलू मोदी जी, हां कारखाना बिहार में है लेकिन एक बिहारी को नौकरी नहीं मिलती हैं, बम्बई से आकर लोग नौकरी पाते हैं।

सभापति जी, मैं चाहता हूं गृह मंत्री जी छात्र और शिक्षक दोनो को बुलायें। पहले भी मैंने यह मांग की है कि इन दोनों के नेताओं को बुलाकर आप बात करें और केन्द्रीय सरकार की औकात में जितनी ताकत हो, अविलम्ब उनकी समस्या को हल करने का प्रयत्न करें आप छात्र के नेताओं को जरूर बुलायें और शिक्षकों के नेताओं को भी बुलायें, बात करें और फिर यह जो कहते हैं कि जन आन्दोलन है वह जन आन्दोलन नहीं रहेगा।

तीसरी बात यह है कि जैसा बाजपेयी जी ने कहा, वे जिसकी साठ-गांठ में है, उन्होंने माओ और गांधी की एक साथ तुलना की है। माओ कहता है राज्य निकलता है बैरल आफ गन से और गांधी जी कहते थे सत्य अहिंसा और तपस्या से राज आता है। अब दोनों लाइन बाई लाइन एफर्ट करते हैं पटना के मैदान में तो यह कैसा मेल है। बाजपेयी जी बतायें कि गांधी जी और माओ का कैसा मेल है जोउनकी तुलना की जाती है कि माओ और गांधी एक हैं? (**व्यवधान**) आप यह बिहार का आन्दोलन बिहार मत समझिये, यह सारे देश का आन्दोलन है। बिहार के आन्दोलन में दुनियां की ताकतें काम कर रही हैं। बाजपेयी जी को पता न हो तो वहां स्टेशन पर जाकर देखें कि कहां कहां के लोग आते हैं और जाते हैं। इसलिये मैं चेतावनी देना चाहता हूं कि सरकार को कि वह समझे, अगर नहीं समझेगी तो फिर बिहार का मामला आपके हाथ में नहीं रहेगा, हिन्दुस्तान का मामला नहीं रहेगा। इसमें माओ और गांधी, दोनों के भाव एक साथ हैं। दोनो भावों को लेकर यह आन्दोलन आगे बढ़ रहा है। मैं चाहता हूं विद्यार्थियों और शिक्षको से बात करने के बाद जो इसमें कैद हैं उनको आप छोड़िये और फिर विद्यार्थी या शिक्षक जो भी हों, उनसे बात करने के बाद आप इस मामले को शीघ्र से शीघ्र हल कीजिये।

वहां पर महंगाई की हालत मैं आपसे क्या बताऊं, मुझको रिपोर्ट मिली है कि मेरे जिले में दो रुपये किलो नमक बिक रहा है। इसलिये मैं कहूंगा कि आप महंगाई को दूर कीजिये। मैं कांग्रेस पार्टी का मेम्बर हूं, जवाहर लाल जी ने कहा था कि कोई ब्लैक-मार्केटीयर हो तो उसको लैम्प-पोस्ट के पास मार दिया जाये। मैं अपनी सरकार से पूछना चाहता हूं कि 25–26 साल की आजादी के बाद आज तक कितने ब्लैक-मार्केटीयर्स को आपने पकड़ा है और कितनों को लैम्प-पोस्ट के पास सजा दी हैं। एक भी ब्लैक-

[श्री विभूति मिश्र]

मार्केटीयर को नहीं । इसलिये मैं कहूंगा कि आप राज चलाना चाहते है तो ब्लैक-मार्केटीयर्स को पकड़िए, चाहे जिस पार्टी के भी हों और पकड़कर उनका मजा दीजिये ।

एक बात की मेरी माग है कि बन्दूक के टोटे और गोली को सस्ता न कीजिए । यह बन्दूक की गोली और टोटे इसलिए नही बनाये गए हैं कि हमारे ही बाल बच्चा पर चलाये जाये । मैं आपको बेतिया एक घटना बताता हू कि एक लडके ने ईंटा फेंका; एस० पी० के गाल पर लगा, मैंने सुना है एस० पी० ने तुरन्त उसको गोली से मारा और वह मर गया । तीन घटे के बाद दूसरी बार गोली चली । मेरा कहना है किसी ने हमको ईंटे से मार दिया तो उसको गोली से मारने का हक हमको नही है । मैं चाहता हूं आप इसकी जाच करवाये । हमको साहस होना चाहिए कि सारी बिहार की घटनाओं की जाच हम करवाये । जयप्रकाश जी के चैलेंज को हम मानते हैं, उन्हें कहा सरकार रिटायर्ड आदमी को रख देती है, आप रिटायर्ड आदमी को नही बल्कि सुप्रीम कोर्ट के किसी जज को लीजिए और उससे कहिए एक अवधि निश्चित करके कि 10-15 रोज या एक महीने मे सारी घटनाओं की जाच करके हमको दीजिए ।

सर्चलाइट के साथ मेरी पूरी सहानुभूति है । जब हम बच्चे थे तब सर्चलाइट को पढ़ा करते थे, उसकी भी जाच होनी चाहिए क्योंकि सर्चलाइट को जला देने से बिहार का इतिहास जल गया है ।

एक बात मैं और कहना चाहता हू कि जहां पर लेडीज सत्याग्रह करें वहा उनके लिए लेडीज फोर्स होनी चाहिए । बिहार मे इसकी कमी है । जहा लेडीज का सत्याग्रह हो वहां पर आप लेडीज फोर्स रखिए तभी वाजपेयी जी का जवाब हम दे सकते है । वाजपेयी जी के साथ मेरी सहानुभूति है लेकिन इनके ऊपर आक्षेप करने के पहले हमको अपना दिल साफ करना चाहिए । लकड़ी जब सूखी हो तभी उसमे आग लगती है, अगर लकड़ी गीली हो तो उसमे आग नही लगेगी । वह लकड़ी सूखी हमने की है । पिछले 20-25 वर्षों मे हमने गवर्नमेंट चलाई है तो हमको कबूल करना चाहिए । गांधी जी जैसे आदमी ने भी कहा था कि हिमालयन ब्लन्डर हुई । एक हिंसा की वजह से जो चोरा चोरी' मे हुई असहयोग आन्दोलन उन्होंने बन्द कर दिया । हम को सरकार चलानी है इसलिए यह न समझिये कि जिसका भाई भतीजा या बेटा मारा गया वह हमारा साथ देगा । हमने देखा था कि महेश प्रसाद सिंह हार गए महा माया बाबू ने एक विधवा औरत को खड़ा कर दिया जिसका पति पटना मे गोली से मारा गया था । अब वहा के रहने वाले महेश प्रसाद सिंह को सारन के रहने वाले महा माया बाबू ने हरा दिया । इसलिए हमको बहुत दुःख है और खेद है कि गोली से जितने लोग मारे गए उस मे कितनी औरतें विधवा हो गई और कितनी मा बगैर बच्चे की हो गई ।

सभापति महोदय : आप का टाइम खत्म हो चुका है । माफ कीजिएगा, और समय देना मुश्किल है । इस सवाल पर जितना भी डिस्कशन हुआ है, इसमें कुछ अच्छा नतीजा निकलेगा। यह बहुत अच्छी बात है लेकिन जो प्रोग्राम दिया गया है, उसके मुताबिक 4 बज कर 15 मिनट पर मिनिस्टर साहब को रेप्लाई देना है और अभी मेरे पास लम्बी लिस्ट है 14 साहबान बोलने वाले हैं । आप तो बुजुर्ग हैं, आप को खुद इस सिलसिले मे कोआपरेशन करना चाहिए ।

श्री विभूति मिश्र : मैं दो मिनट में खत्म कर दूंगा ।

मैं अपने गृह मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि जितने लोग अपोजीशन में बैठे हुए हैं, उन से वे सावधान रहें क्योंकि हमारे यहां

जैसी कहावत है, 'वधवा धईलख त घर गईम बधीनिया धईलख त घर गईन'। किसी ने 16 को शुरू किया और किसी ने 18 को किया। ये सब हम को खाने वाले हैं। इसलिए मैं कहता हू कि आप सचेत रहिये और अपनी ताकत पर भरोसा कीजिए। अगर किसी विरोधी पार्टी की ताकत पर यह सरकार भरोसा करेगी, तो यह जिन्दा रहने वाली नही है। अगर कोई पार्टी लेफटिस्ट है, तो हमे लेफटिस्टेम से आगे होना चाहिए, अगर कोई तपस्वी है, तो हमे उससे ज्यादा तपस्वी होना चाहिए। इसलिए किसी के भरोसे हमे नहीं चलना चाहिए और अपनी ताकत पर भरोसा होना चाहिए। अगर हमारी ताकत मे कोई कमजोरी है, तो उस को दूर करें। पहले लोग जंगल मे जा कर तपस्या करते थे और तपस्वी बनते थे। इसलिए मैं अपनी सरकार से कहूंगा कि अगर आप न्याय, त्याग और तपस्या के बिना राज्य करना चाहते हैं, तो आप इस गद्दी पर नही बैठे रह सकते है। बस मुझे इतना ही कहना था।

श्री यमुना प्रसाद मंडल : (समस्तीपुर) : सभापति महोदय, आज यहा बिहार की स्थिति के बारे में विचार नही है, आज तो लिक्वीडेशन आफ डेमोक्रेसी का जो प्रो-प्लान करने वाले लोग है, उन के विषय मे हमें विचार करना होगा। फासिज्म लाना है, प्रजातंत्र को बढाना है, प्रजातंत्र के रास्ते कितने कड़े होते हैं, कितनी हर्डिल्स होती हैं, इस पर विचार करना है।

बिहार को स्थिति के बारे में दो एक शब्द मैं आपसे पहले कहना चाहता हूं। मैं सब से पहले उन निर्दोष व्यक्तियों के प्रति, जो इन लोगों के बहकावे पर झुण्ड में गये थे—उन का कोई दोष नही था—और उस में वे मौत के शिकार बने, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हू। उन के परिवार के लिए जितनी भी दया हमारे मंत्री करें, वह बहुत कम होगी। मैं आप को बताऊं अपने संसदीय क्षेत्र समस्तीपुर की बात, वहा की प्री-प्लनिंग की बात। 27 फरवरी को समस्तीपुर बन्द का आयोजन किया गया। कहा गया और नारे लगाए गये, हर गलियो में नारे लगाए गये कि खून की धारा बहायेंगे, खून की धारा बहायेंगे। वह डिवीजन न हेडक्वार्टर है.......(व्यवधान) आप हमें शिक्षा दीजिए हनुमान जी। तो मैंने देखा कि इस गड़बड़ की स्ट्रेटजी पहले ही कर ली गई थी। 27 तारीख से पहले ही इन लोगो ने इस को शुरू किया था और एक निरीह राम बाबू साहू को इन्होंने राम के घर पहुचा दिया। यह इन की करामात है। सन् 1967 में भी इन लोगों ने समस्तीपुर से ही यह शुरु किया था और वह 1967 का इतिहास ये फिर समस्तीपुर से दोहराना चाहते थे। मगर वहां की जनता चेत गई। वह जान गई कि 1967 में उन लोगों ने क्या गलती की थी। इस तरह राम दयाल कालेज से कैसे दीना नाथ पांडे को लाया गया। तो यह प्री-प्लानिंग सभापति महोदय, 27-2-74 से पहले से ही हो रही थी मगर जनता ने इन स्थानो पर इन का साथ नही दिया। फिर आ कर क्या हुआ। इस हाउस में मैंने प्रश्न किया कि क्या यह सही है कि आनन्द मूर्ति से आप आनन्द की शिक्षा-दीक्षा लेने गये थे? तो क्या जवाब दिया था गृह मंत्री जी ने। वह सारे हाउस को इस महान लोक सभा को मालूम है कि वहां ए,बी सी नही, वहा एम बो, बी गये थे और उन के साथ तीसरे भी गये थे। (व्यवधान) श्री अटल बिहारी का नाम मैं अब नही लूंगा। अब वे अटल नहीं रहे अच्छे रास्ते पर। आज वे हिंसा के रास्ते पर उतर आए हैं। एक अब 'ए' के साथ 'बी, बी' की है, एक ब्लेंडी बाथ ए ब्लैंडी बाथ.... (व्यवधान) आप गालिया दोजिए, मैंने उन को स्वीकार नही कर सकता। तो अब ब्लेंडी

[श्री यमना प्रसाद मंडल]

रास्ते पर आ गये है । ए, बी, बी साहब, आप के पास बडी वक्तृता की शक्ति है, आप ब्रह्मचारी हैं । आप बातें तो ऐसी लम्बी लम्बी करते है मगर काम क्या है । आप आनन्द मूर्ति जी से क्या क्या बाते करने गये थे और क्या क्या आनन्द लेने गये थे, यह प्रत्यक्ष हो गया 18 तारीख को । 18 तारीख को सब से घृणित बात जो सारी दुनिया मे हुई वह यह थी कि चार अखबारो पर बडा भारी आघात हुआ । श्री बी० एन० आजाद जो कि आल इण्डिया एडीटर्स कान्फ्रेंस के प्रेसि-डेंट हैं, वह क्या कहते हैं :

"This was an attack on the very concept of freedom of expression It must have been inspired"

I correct the great President, not inspired, but instigated" by believers in suppression of human liberty"

आज हमे बडी गंभीरता से इन सब बातों पर विचार करना है। अगर वे यह समझते हैं कि अखबारो को बन्द कर देने से वह जनता की इच्छा को बन्द कर सकते हैं, तो उन का ख्याल सही नहीं है । उस के बाद हमारे श्री चन्द्रजीत यादव वहां गये और उन्होंने एन्टी-सोशल एलीमेंट्स को तो शांत किया और सब कुछ किया, मगर वहा क्या हुआ, उस के बारे में मैं दो एक शब्द आप से कहना चाहता हू ।

सभापति महोदय, कांग्रेस (ओ) के एक बडे नेता है । व बड नेता है और उन के पिता का स्थान देशभक्तो मे नम्बर 1 की पंक्ति मे आता है । उन्होंने जो करामात वहां पर भीतर ही भीतर की, उस के बारे में मैं यही कहता हू, "ले डूबता है एक बागी नाव को मझधार मे ।" सारे पाटलिपुत्र को, सारे बुद्ध के बिहार को एकदम उन्होने पूर्ण रूप में कलंकित कर दिया । अब वह यहा नही हैं ।

मैं उनसे जवाब चाहता हूं कि आप लोगों ने 18 के पहले ही 15 तारीख को एक गुप्त बैठक की थी या नही की थी ? बताइए जवाब दीजिए ।

These groups held a most secret meeting and decided to exploit the issue of soaring prices and all these and what not.

मे मानता हू कि बिहार गरीब है, प्रथम स्थान मे यह तीसरी श्रेणी में था और अब यह बीसवे स्थान पर है । पर कैपिटा इनकम में, गृह मंत्री महोदय, मैं बताऊं कि वह 19 वें स्थान पर चला गया है । अब केवल दो सीढी उस को नीचे और जाना है और बस, खत्म है । इस इम्बैलेंस को दूर करना होगा । मैं गृह मंत्री महोदय से कहना चाहता हू कि उन्होंने व्रत लिया है 22 लाख बिलो पावर्टी लाइन के लोगो को ऊपर उठाने का तो उसे वह पूरा करे । विद्यार्थियों के विषय में मैं बताता हू कि बिहार 10 रुपये प्रति विद्यार्थी खर्च करता है जब कि आन्ध्र प्रदेश 133 रुपय प्रति विद्यार्थी खर्च करता है और केरल 60 रुपये प्रति विद्यार्थी खर्च करता है ।

गुप्त ... गया के सम्बन्ध मे कहना चाहता हू कि जनसंघ के श्री ईश्वर जी ने बडी भविष्यवाणिया की है । ईश्वर जी सुन लें वह बी बी लाल आई ए एस वहीं के रहने वाले थे, वहीं के प्रोफेसर थे । उन को बडा अनुभव था इसलिए उन को वहा भेजा गया था और गफूर साहब ने भेजा था । वह जानते थे कि कांग्रेस (आ) के बड नेता वहा रहते हैं तो व कुछ न कुछ झंझट आज नही तो कल वहा मचाएगे । इसलिए उन को वहा भेजा गया था । 18 तारीख को जब सब कुछ शान्तिपूर्वक वहा हो गया तब वह बी बी लाल अच्छे थे । और 7 अप्रैल को आकर वह खराब हो गए ? वही बी बी लाल क्या 7 अप्रैल को बदल गए? मैं कहता हू आप की करतूतें बदल गई होंगी । आप की करतूतें काली हो गई होंगी । लाल साहब का उस मे कोई कसूर नहीं है ।

अंत में एक बात मैं और कहना चाहता हूं। कास्टलेसनेस के बारे में मेरा एक बिल है। गृह मंत्री महोदय को मैं उस की प्रति दूंगा। बहुत सिम्पल बिल है। उस को वह पढ़ें और देखें। गंभीरतापूर्वक उस पर विचार करें और कास्टिज़म को हटाने का काम करें।

SHRI SAMAR GUHA (Contai): Sir, when a man is off his head we know by what name he is described. To-day the Congress Party is seized with political lunacy, and that is the reason why they are finding, either in Gujarat or in Bihar, that somebody has been planted from outside; some agent provocateurs are there; some CIA agents are there; even the Sarvodaya people and Shanti Sena people have become CIA agents to create all kinds of troubles! Fortunately, they have not said as the word lunacy means that somebody has come from the moon to plant this kind of trouble either in Gujarat or in Bihar.

What has happened in Gujarat and what is happening in Bihar is not merely an agitation; they are not mere students' agitations, they are not mere demonstrations; they are not mere movements—they are of greater significance and of greater values. The people having vested interests, when they are going to lose pelf, pomp and power, and everything, like naturally they are terribly afraid and fail to see the real meaning of such happenings. What is happening is of greater significance and has greater meaning.

You will remember, Sir, the other day, Shri Dikshit bantered when I said that Gujarat has shown a new way between election and revolution. They have shown the way, the way of moral revolution. The banner that was raised by the youth, the green souls of Gujarat, the great community of people of Gujarat, that banner has been taken a step forward to Bihar. That banner of revolt, the banner of moral revolution against all kinds of corruptions,—political corruption, economic corruption, social and cultural corruption, administrative corruption, corruption galore, corruption by which the whole country has been swamped—has been taken a step forward. When the people have lost faith in the political set-up, when they have lost faith in all kinds of politics and when they have lost faith in either leftism or rightism or any 'ism', when they started hating the political communities or political parties, there, I should say, the ethical or moral revolution has been started by the youth, and that banner has been taken a step forward from Gujarat to Bihar.

This banner of revolution is now in the hands of the hero of the August revolution, Shri Jaiprakash Narayan. Unfortunately, I know, and I have seen and I have heard that so many statements are being issued against Shri Jaiprakash Narayan by so-called progressive congressmen. There are m y sparrows which try to spite the lions. There are many political sparrows also who are trying now to spite the lion, the lion of patriotism, the lion of sacrifice, the lion of all the embodiments and the concepts of Indian democracy, freedom and patriotism,—Shri Jaiprakash Narayan. They are trying to smite him, spite him and do what not.

Recently, Shri Chandrajit Yadav, Congress General Secretary made a statement in Calcutta which appeared in Jugantar. He says: "The peace committee of Jayaprakash Narayan and Sarvodaya people have joined hands with reactionaries. Not only black-moneys were exchanged but foreign agents were working with them in Bihar." Today we hear echoes of what some of the allies of the ruling party say and what they charge against J.P. I ask: is there any clearer person in India to-day than J.P.? He has given up all aspirations. Perhaps the young upstarts of

[Shri Samar Guha]

the Congress do not know that in 1954 J.P. was invited to be the Deputy Prime Minister of India. The question was on everybody's lips at that time, after Nehru who? After Nehru who will rule India? The answer was—J.P. Here is a man who sacrificed everything and has dedicated himself completely to the cause of Indian freedom and Indian democratic movement and regeneration of the whole Indian nationhood on the basis of Gandhism Unless you have been off your head you would not have chosen to attack a man who has disowned everything in the world except his idealism. That shows what kind of lunacy has seized the minds of the Congress people.

I am reminded of a mythological story. When the oceans were churned for getting nectar, poison came and later on nectar also came The devils who were ruling the world at that time were terrorised by the emergence of nectar. Ultimately nectar came and nectar ruled the world It is devil which wields power in the country today, they are terribly afraid of this new wave, impact and surge of the current moral revolution, the flag of which has been raised by the youth.

I know there have been many ugly incidents and I kept silent. A man was shaved in Gujarat by angry youngmen, certainly it is not commendable. I ask Mr. Dikshitji: now whether it is a fact that in many cities of Bihar your policemen have seized young men and shaved off their heads and shaved off every thing. Is it civilized? It would have been better if such things had not happened.

What is happening and after these things happened in Bihar if it goes to U.P. and from U.P. if it goes to M.P. and then to West Bengal and then to whole of India.... (*Interruptions*) people might call be irresponsible or insensible, yet I well hail it.

I was one who did not attack Indiraji even for a day after she assumed power, through immoral means. Such immoral thing never happened in any democratic country. The Prime Minister was the first to propose and nominate the candidature for the President. She then scuttled the party's nominee. I tried to argue to myself and convince myself that in revolutionary politics means and ends are perhaps not always compatible, if the ends are clear, if the objectives are clear if the means are revolutionary, even it is apparently immoral, then I support it I kept mum at that time When there was bank nationalisation, when there were slogans like Garibi Hatao although I was in the Opposition, I made it a point that I will support each and every progressive move of the Congress Government But now, after these years, what do we find now? Not only, the means have been lost, but the ends have been totally lost in a pool, in a whirlpool of total corruption in the country. Everything—all ethics are gone, all values are gone No political values, no economic values exist now—all values are gone in the country (*Interruptions*)

16 00 hrs.

You congressmen may laugh at me In Bihar, in Monghyr, about 10,000 widows brought out a procession It is very significant: why these widows brought out this procession. I would say, if anybody has planted anger in the minds of the common people, if anybody has sabotaged the present political set up by rousing the hunger of the common people, if anybody has made the blood boil in the viens of our young men, it is those people who by their corrupt rule, by their lack of sense, by their lack of morality, by their denial of sense of values, by sabotaging and scuttling democratic values, by sabotaging and scuttling political values, by sabotaging and scuttling

the tenets and basic values of democracy, are responsible for spontaneous upsurge of the people.

Not only that. Now, the economic life of the common men has become impossible. Can you imagine the miserable plight of the common people today? Take for example, Class III and Class IV employees cases. How can the non-wage earners live? How can these people live, the village people, the 75 per cent of the population of our country who live in the villages, the landless people, those people who have less than two and three acres? According to your statistics 42.6 per cent of the population live below poverty line. Now, the value of the rupee has gone down. According to the latest bulletin of the Reserve Bank, it is now worth 24 paise. Do you know the terrible condition in which the common people live now? Do you realise their acute pangs of hunger and misery? Do you understand what is a political volcano? Where lies the lava? Where is it boiling? It is in the heart of the common people. You do not know because you are terribly afraid, as the devil, of the mystical days about the nectar, about surge of the moral revolution raging in the country today.

Before concluding, I would say this. I do not want any enquiry committee. There is no necessity for an enquiry. The revolution has started surging, swarming, sweeping the whole of India, new revolution, new upsurge, new moral revolution and that is the only way to defend the future of democracy, future of freedom because the might of the people will ultimately triumph over the arrogance and corruption of the administration.

सरदार स्वर्ण सिंह सोढी (जमशेदपुर) : चैयरमैन साहब, मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के भाषण को बड़े गौर से सुन रहा था। श्री वाजपेयी जी ने कहा कि सहरसा में जो कुछ उन के आदमियों ने किया है, उस में मे अपने लोगों के खिलाफ एक्शन लेंगे—यह अच्छी बात कही है। लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि गया में इन लोगों ने जो किया है उस पर वे क्या एक्शन लेंगे। जब इन की पार्टी—जनसंघ पार्टी दूसरी अपोजीशन पार्टियों के साथ बिहार में राज्य करती थी तब इन्होंने कितना करप्शन बिहार से हटा दिया। आज ये हम लोगों को ब्लेम करते हैं—इस के लिये इन को सोचना चाहिये, ऐसे ब्लेम करना अच्छी बात नहीं है।

श्रीमती सहोदराबाई राय (सागर): 18 महीने मध्य प्रदेश में भी राज्य किया था, जब नहीं चला तो छोड कर भाग गये।

श्री ईश्वर चौधरी : गया में जो हुआ उस का उदाहरण दीजिये।

सरदार स्वर्णसिंह सोढी : कहा गया है कि वहां जलियावाला बाग बना दिया था। ऐसी बात नहीं हुई थी। अभी सिन्हा जी ने कहा कि पुलिस के पास आंसू की गैस भी नहीं थी लेकिन मेरी जानकारी है कि पहले पुलिस ने उन को वार्निंग दी, मजिस्ट्रेट ने वार्निंग दी, उस के बाद टीयरगैस शैल्ज चलाये गये, 27 शैल्ज चलाये, उस के बाद पुलिस का घिराव किया गया, तब उन्होंने अपनी हिफाजत के लिये गोली चलाई।

रामावतार शास्त्री जी ने कहा कि लोग दौडते हुए मारे गये—यह गलत है, दौड़ते हुए नहीं मारे गये। जब उन्होंने पुलिस पर हमला करना चाहा तब दो एक राउण्ड चलाये गये। अगर दौडते हुए मारे जाते तो पीछे से गोलिया लगनी चाहिये थी—इस लिये यह बात गलत है।

यह जो सर्च लाइट की रिपोर्ट निकली है, यह भी गलत है। असलियत यह है कि 8 आदमी मारे गये और सात आदमी घायल हुए ये अपोजीशन पार्टियों के लोग लड़कों को आगे ले आते हैं, मैं एक-एक अपोजीशन पार्टी का नाम ले सकता हूं, लेकिन नाम क्या लूं, जहां

[सरदार स्वर्ण सिंह सोखी]

इन को मौका मिलता है उन को आगे ला कर मरवा देते हैं और फिर कांग्रेस गवर्नमैंट को बदनाम करते हैं ।

जनसंघ के मित्रों ने कहा कि वहां जनसंघ के जो लोग थे उन पर मार पड़ी मैं कहता हूं कि किसी जनसंघी पर मार नहीं पड़ी, वे अपने लोगों को तो वहां से उठा कर भाग गये, इन का तो काम ही यही है कि सीधे-सादे लोगों को भड़का कर यहां ला कर भिड़ा देते हैं और बाद में खुद भाग जाते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि कितने जनसंघियों पर मार पड़ी, कितने लोगों को चोट लगी ?

जयप्रकाश जी की बात कही जाती है ––वे जो बयान देते हैं ये प्रेस वाले उस को गलत तरीके से पेश करते हैं, उन के मुंह से ऐसी बात कैसे निकल सकती है । उन के बारे में किसी को कोई सन्देह नहीं होना चाहिये । उन्होंने इस मौके पर जो कुछ कोशिश की है, बिहार में शांति लाने की कोशिश की है ।

अपोजीशन पार्टीज़ के बारे में मैं फिर कहना चाहता हूं––जब मैं ने पिछली दफ़ा यहां बयान दिया कि जमशेदपुर में कुछ नहीं हुआ, तो दूसरे दिन ही इन्होंने 10–20 या 50 गुण्डे खादी भण्डार में भेज दिये, वहां पर हल्ला करवा दिया––यह चीज़ आप को शोभा नहीं देती ।

ज्योतिर्मय वसु साहब ने स्टूडेन्ट्स के बारे में कहा कि उन का इस में बिल्कुल हाथ नहीं है । गया में यह जरूर है कि मुल्क में आज जो महगाई है उस का असर पड़ा है। हमारे यहां उर्दू की एक कहावत है "तंग आयद बजंग आयद" जब आदमी तंग हो जाता है तो जंग पर उतर आता है––वही हालत इन अपोजीशन पार्टीज़ की हैं। मैं अपोजीशन पार्टियों से कहना चाहता हूं––अगर आप भी चाहते हैं कि कभी राज्य करें तो कम से कम हंगामा तो न करें, ताकि लोग महसूस करें कि हिन्दुस्तान में कांग्रेस के अलावा दूसरी अच्छी पार्टियां भी हैं। लेकिन आप के इस तरह के कामों का तो जनता पर अच्छा असर नहीं पड़ेगा।

मैं मंत्री जी से कहूंगा कि––इस में क्या हर्ज है आप जांच करवाइये, सच्ची बात सामने आ जायेगी, इस से लोगों के दिल शांत हो जायेंगे । लेकिन मैं अपोजीशन पार्टीज़ से भी कहूंगा कि आप लोगों को भड़काने की कोशिश न कीजिये। असेम्बली को डिज़ाल्व कराना है तो कराइये, जो कुछ होना हैं वह होगा, लेकिन लोगों को भड़का कर काम खराब न कीजिये । आप लोग समझदार आदमी हैं, सोच समझ कर काम कीजिये ।

श्री राम भगत पासवान (रसड़ा) : सभापति महोदय, बिहार की स्थिति भयंकर जरूर है और इस भयंकर स्थिति का कारण गरीबी, महंगाई, भुखमरी और बेरोज़गारी हैं । इस बेरोज़गारी और भुखमरी की समस्या को सुलझाने के लिये जिस तरीके से हमारी प्रधान मंत्री जी तत्पर हैं, ठीक उसके उलट हमारे विरोधी पार्टियों के लोग आग में घी डालने का काम कर रहे हैं। सभापति जी, आज वे आन्दोलन नहीं करते हैं जिन के पास लाचारी हैं, भुखमरी है, जो गरीब हैं, क्योंकि उन्हें तो प्रधान मंत्री जी के समाजवाद में पूरी आस्था है । वे देखते आ रहे हैं, जनता देखती आ रही है कि अभी तक देश में कितनी विपत्तियां आई हैं उन सभी को प्रधान मंत्री जी ने बड़ी तत्परता के साथ आशिर्वाद में परिवर्तित किया हैं । ठीक उसी तरह से महगाई, बेरोज़गारी और गरीबी की समस्या जो हमारे सामने उपस्थित है उस को भी प्रधान मंत्री जी ने अपने सिद्धान्त अपने समाजवादी सिद्धान्तों के द्वारा तत्परता

और सतर्कता के साथ मार्कीवादि मे परिवर्तित कर देगी । आन्दोलन तो हुआ करते है। जो बार बार चुनावों मे हार पछाड खाते रहे हैं, जिन्हे समाजवाद में विश्वास नही है, जो पूंजीपतियों के साथ साठ-गांठ करते हैं वे लोग ऐसा करते हैं। मैं बहुत सक्षेप मे बताना चाहता हू कि बिहार में जयप्रकाश बाबू के प्रति बहुत श्रद्धा है लेकिन उन के प्रति लोगो की श्रद्धा और भी बढती यदि वे गरीबों के बीच जाते, मजदूरो के बीच जाते और जो भूस्वामी हैं जिनके ऊपर लैंड-सीलिंग लागू होने जा रही है, जो भूमि को चुरा रहे है, उन भूस्वामियो और पूंजीपतियों की लिस्ट वे तैयार करते और समाजवादी व्यवस्था लाने में सहयोग देते। उस दशा में जयप्रकाश बाबू के प्रति लोगो की श्रद्धा और भी बढ़ती। हम समाजवादी व्यवस्था लाना चाहते हैं, समाजवाद के लिए सारे प्रयास करते हैं लेकिन इस मे जो चतुर व्यक्ति हैं वे फायदा उठाते हैं। यह सही है कि हमारी प्रधान मंत्री ने बहुत सी समाजवादी व्यवस्थाओं को लाने का प्रयास किया है लेकिन उन से बड़े बड़े लोग ही फायदा उठाते रहे हैं। मैं सरकार से आग्रह करूंगा कि हमारे देश की जो वर्तमान स्थिति है; जो गरीबी, बेकारी और भुखमरी की स्थिति है उसके लिये हमे ठोस मजबूत कदम उठाने पड़ेंगे। हमने लैंड सीलिंग की चर्चा कर दी लेकिन उस को कार्यान्वित नही कर रहे है। इस से भूस्वामियों का, जो भूमि के मालिक है उस जमीन को चुराने का मौका मिलेगा। वे अपनी जमीन तो चुरा रहे हैं, गरीबों की जमीन भी हड़पने की चेस्टा करते है। इस प्रकार गरीबी बढ़ती चली जायगी। मेरा गृह मंत्री जी से आग्रह है कि लैंड सीलिंग के द्वारा जिन के पास फाजिल भूमि है वह लेकर जल्दी से जल्दी गरीबो को बांटी जाये और बेकारी की समस्या को हल क्या जाये। मेरा यह भी आग्रह है कि प्रखण्ड वाईज छोटी मोटी इण्डस्ट्रीज की स्थापना की जायें तथा दफ्तरों मैं बड़ी बड़ी तनख्वाह पाने वाले कर्मचारियों की तनख्वाहे कम कर के नये पदो का सृजन करके नवयुवको को काम दिया जाये क्योंकि आज लाखो की संख्या में हमारे देश मे नवयुवक ग्रैजुएट होकर निकल रहे हैं हर साल उनकी समस्या का समाधान हम नही करेंगे तो जरूर हमारे देश में कभी भयावह स्थिति पैदा हो सकती है। इस लिए मेरा आप से आग्रह है कि बेकारी की समस्या मिटाने के लिए और गरीबी की समस्या मिटाने के लिए आप तुरन्त ठोस कदम उठाये।

SHRI PILOO MODY. Mr. Chairman, I was not intending to participate in this debate because it would be pointless pleading my case before the very guilty men who are responsible for what is happening in Bihar. It is quite evident that when things transpired in Gujarat this Government and this party were warned by all of us that this is not just another one of those accidental things that has happened. I think they took no notice. They even ridiculed us. They thought that what happened in Gujarat will not repeat itself elsewhere.

It is quite evident that there has been a great deal happening in this country for which this Government is directly responsible Can you think that a Government like this, an all-powerful Government like this, can shirk its responsibility about high prices, can shirk its responsibility about ever-spreading and perennially increasing unemployment, can shirk its responsibility about monumental corruption, about shortages and about every conceivable sort of injustice, political, social and economic? The very fact that a debate is going on about Bihar today and nobody has mentioned the central figure of Bihar

[Shri Piloo Mody]

and, that is, Mr. Lalit Narayan Mishra I just don't understand. Are you living in this world or are you thinking of giving up this world and going to some other world faster than it is your time to go? Any speech on Bihar that does not mention him, is dishonest.

We have a puppet Government in Bihar, created by a Minister of the Central Government who took the entire Government, purchased it and did what he liked—I do not know what—and put it in his pocket, appointing every Minister of his own liking. And that Ministry is brought down by the people. Is there any reason to be surprised that this thing is happening?

How did it all start in Gujarat? It started very innocently about some mess bill. The students thought it was too high for them to pay. And yet, overnight, starting with that little mess bill, 500 units of the Nav Nirman Samiti grew up all over Gujarat. Do you think that Mr. Vajpayee or Mr. Anand Murti who has been in jail for so many months or any C.I.A. agent or even a K.G.B. agent or even Mr. Bhogendra Jha or, for that matter, anybody in this House could do anything like that?

SHRI VASANT SATHE (Akola): Excepting you.

SHRI PILOO MODY: Perhaps But, nevertheless, this had to be washed off in some fashion or the other.

I think, it was last year I warned this Government that unless they learn to admit their mistakes in all humility and to make amends, genuine and sincere amends, to the people for all the oppression that they have brought about in this country, this country will not be safe this party will not be safe and, certainly, this Government will not be safe.

What has happened in Bihar? By saying that it was so and so who instigated the people, and so and so who did'nt, and that it was Mr. Vajpayee and some people who stripped some man, do you think that is a reasonable excuse for explaining away what happened in Bihar? The fact is that the anger of the people is rising because of all the hardships they have to bear and, in addition to having to bear all these hardships, see the miserable manner in which they are treated and brushed aside. Is there any person in this country who comes in contact with the Government at any level who does not get bruised, hurt, insulted and humiliated, whether he is rich or poor? If he gets a cheque of Rs. 11 from the Government which is six months overdue, he spends three days in the Bank in trying to cash it!

This is the sort of administration that these people have created and, they think, in an administration like that, the people are not likely to get angry. Well, the rising anger of the people is rising higher than even the corruption that you can perpetrate. And it is rising at such a speed! There are no safety valves. There was a time when you expected that if you went to a law court, you might get some justice. But look at the manner in which they have fiddled with the courts. There was a time when you raised a matter in Parliament or when some Members of the Opposition raised a matter in Parliament, you expected that that would have some effect on the Government. There was a time when you could take out a demonstration Today, the mere fact that you want to take out a demonstration, it calls for repression. If you shout a few slogans against the Government, you are muzzled—section 144 is slapped on. They infiltrate demonstrations with their agent provocateurs to throw stones so, that that gives an excuse to the police to resort to firing. If there is breaking of window-panes or shouting of a few slogans against the Government, they resort to shooting people down in cold blood. I have seen

it happening. This is what has been happening. As for Mr. Bhogendra Jha who initiated this debate, I would like to know whether he was on the 16th .

SHRI S M BANERJEE: I will just go and call him here.

SHRI PILOO MODY: It is quite obvious that Mr. Banerjee was not there He is a little smarter than Mr Jha. Therefore, all this hypocrisy goes on—and the constant search for a scapegoat. As somebody said, pretty soon you will be blaming it all on the man in the Moon because you would have run out of all alibis and excuses that human ingenuity can find After having run out of all excuses, the only person that they can peg the whole thing on is a man like Mr Jayaprakash Narayan. I think, we have reached the nadir of public life I am no follower of Mr. Jayaprakash Narayan; I do not even believe him; nor have I any close contact with him; nevertheless, if one were asked to find one good, honest decent man particularly in the public life of this country, one would probably think of Mr Jayaprakash Narayan He may not be a genius, he may not be a guru, he may not be anything at all; but, nevertheless, he is a good, honest man. And in this country we have lost all sense of values Even a good, honest man is no longer needed! He is to be abused when the occasion arises. I have heard pank kids signing memorandum and speaking in a manner which would shock even their own parents; sometimes I wonder how they address their own parents.

Therefore, it is with the heaviest heart that I condemn this Government, not because of the mistakes it has made; mistakes it has made by the millions. But let them come forward and admit one mistake. It will make it easier for them to admit two and then ten any maybe, a time will come when they will admit all the mistakes they have made and then perhaps we will have a happier country.

श्री नागेन्द्रप्रसाद यादव : (सीतामढ़ी) सभापति जी, मैं आप के माध्यम से गृह मंत्री जी का ध्यान बिहार की ओर ले जाना चाहता हूं। सभापति जी बिहार मे 16 तारीख को शान्तिपूर्ण प्रदर्शन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से किये गये। इस के बाद बिहार मे जो हमारे जनसंघ के नेता हैं खासकर कि अटल जी वे 16 तारीख से पहले गया मे गये थे अपनी मीटिंग मे और वहां पर उन्होंने अपने साथियो के बीच मे भाषण दिया था कि बिहार के साथियो तुम भी गुजरात की तरह तैयार हो जाओ। जो जनसंघी विधायक बिहार के थे, उन को इन्होंने सम्बोधित किया। अटल जी ने कहा था कि बिहार के विधायको, तुम भी गुजरात के लोगो की तरह अपने इस्तीफ़े देने की तैयारी करो। अटल जी, आप को याद होगा, कि आप ने गया मे यह कहा था। 18-3-74 को अटल जी गया मे थे और अटल जी के साथ हमारे गृह साहब भी पटना की जेल में गये थे और वहां पर इन की मुलाकात आनन्दमार्गियो के नेता के साथ हुई थी। काफी फल, मेवे और मिठाई वे उन को जेल मे खिलाने के लिए ले गये थे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : बिल्कुल गलत बात है। एक साल से वे भूख हड़ताल पर थे, मेवे कैसे खिला दिये।

श्री नागेन्द्र प्रसाद यादव : अटल जी ने आनन्द मार्गियों के नेता को जेल में जा कर काफी मिठाई खिलाई फल खिलाए और बैठ कर के इन्होंने एक तोड़ फोड़ योजना इसलिए बनाई कि जब इन की हार बैलेट पेपर की लड़ाई मे उड़ीसा और उत्तर प्रदेश मे हुई और इन की करारी हार हुई तो यह पटना गये गृह साहब के साथ मिठाई ले कर आनन्द मार्गियो के नेता से उन्होंने मंत्रणा की कि बिहार मे गुजरात के बाद किस तरह आन्दोलन

[श्री नागेन्द्र प्रसाद यादव]

किया जाए, किस तरह अग्निकाण्ड कराया जाय। वाजपेयी जी ने यह योजना बनाई और पटना जेल के एक किनारे मे इन्होने आनन्दमार्गियो के नेता से मुलाकात की और उसी का फल यह हुआ कि 18 तारीख का पूरे बिहार में हमारे आनन्दमार्गियो ने, जनसघियो ने और आर०एस०एस० के लोगो ने आन्दोलन किये, मकान जलाए गये और सर्चलाइट को भी इन्होने जलाया। आप के ही आदमी जनसघ के लोग झडा ले कर वहा गये थे।

श्रीमन् मुझे आप ने अन्त मे समय दिया है। इसलिए कम से कम सात मिनट तो दीजिए।

सभापति जी सर्चलाइट जनसघियो ने जलाया और झूठा इन का प्रचार होता है कि कम्युनिष्ट पार्टी के लोगो ने उस को जलाया। यह गलत है। कम्युनिस्ट पार्टी के लोग तो शान्तिपूर्ण ढग से 16 तारीख को प्रदर्शन कर रहे थे। 18 तारीख के प्रदर्शन मे कम्युनिस्ट पार्टी का कोई हाथ नही था (व्यवधान)

श्री भोगेन्द्र झा : 16 तारीख को इन्होंने क्या किया और ये वहा क्यो गये, इस के बारे बारे मे वाजपेयी जी पर्सनल एक्सप्लेनेशन दें।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, आप मुझे मौका देंगे तो मै इस का उत्तर देने के लिए तैयार हू।

श्री नागेन्द्र प्रसाद यादव : सभापति जी, 18-3-74 को बिहार के छात्रो ने शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किया लेकिन उन के साथ उन के गिरोह मे अटल जी के चेले चले गये बिना झडा लिये, उन्होने झडा नही लिया। छात्रो के बीच मे आनन्दमार्गी और जनसघ चले गये और उन्होने बोतलो मे पेट्रोल ले कर छीटे दिये और दियासलाई लगा दी और बिहार के छात्रो को इन्होने बदनाम किया। सभापति जी, बिहार के छात्रो ने कही भी आग नही लगाई। उन्होने अपनी मांगो के समर्थन मे शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किया। सभापति जी, मैं गृह मत्री जी से अनुरोध करूगा कि बिहार के छात्रो की जो माग है, आप उसे स्वीकार करें और बिहार के मुख्य मत्री जी से भी कहे कि जो उन की मांग है छात्र के जो नेता हैं हमारे गफूर साहब मुख्य मत्री, बिहार उन से बातचीत करें। गृह मत्री जी भी छात्रो के नेताओं और शिक्षको के नेताओ को दिल्ली बुला कर उन से बातचीत करे और जो उन की डिमान्डे हो उसे स्वीकार करे।

सभापति जी, मै सर्वोदय नेता जय प्रकाश जी की ओर ध्यान दिलाना चाहता हू अपने साथियो का। सभापति जी, जयप्रकाश जी ने सन् 1942 की अगस्त क्रान्ति मे भाग लिया, यह बिलकुल सही है। 1942 के आन्दोलन और उस के पूर्व भी उन का बहुत बडा त्याग है आजादी के लिए लेकिन इधर जयप्रकाश जी ने सन् 1952 के इलैक्शन मे अपने उम्मीदवारो को खडा किया बिहार मे ही नही बल्कि पूरे हिन्दुस्तान मे और उस मे उन की पार्टी की करारी हार हुई। फिर 1957 मे भी उन्होने पार्टी के लोगो को खडा किया और उन की करारी हार हुई। इस के बाद 1962 मे भी उन्होने लोगो को खडा किया और उस मे भी उन की हार हुई। इस के बाद सन् 1967 मे भी उन्होने लोगो को खडा किया और उन के लोग चुनाव मे हारे। इस तरह से चुनाव मे हार खाने के बाद जयप्रकाश जी विनोबा जी के साथ सर्वोदय का काम करने चले गये। उस के बाद भी उन से नही रहा गया क्योकि गद्दी का नशा तो उन को था ही। वह तो झूठे ही विनोबा जी के साथ चले गए थे कुछ दिनो के लिए। सभापति जी को स्मरण होगा जब बिहार के मुख्य मत्री स्वर्गीय बाबू श्रीकृष्ण सिंह जी थे और बिहार के मत्रि मडल मे कृष्ण बल्लभ सहाय नही लिए गए तो उन्होने

एक बहुत लम्बी चिट्ठी तीन पेज की श्री कृष्ण सिंह को लिखी । उन्हें बहुत तकलीफ हुई कि श्रीकृष्ण सिंह ने उन को मंत्री नहीं बनाया वह लम्बी चिट्ठी जयप्रकाश बाबू ने लिखी श्री बाबू को और श्री बाबू ने उस का उत्तर दिया । तीन पेज की बड़ी लम्बी लम्बी चिट्ठियां थी । मैं दिखलाऊंगा, अभी भी कहीं होगी । उन्हें बड़ा क्षोभ हुआ कि कृष्ण वल्लभ सहाय को मंत्रिमंडल में नहीं लिया गया । उस के बाद जयप्रकाश बाबू पटना में गए और पटना जाने के बाद जब 18 तारीख को जनसंघियों और आनन्दमार्गियों ने आन्दोलन किया, आगजनी हुई तो जयप्रकाश बाबू अपने को बचाने के लिए फिर उस के बाद शांतिपूर्ण प्रदर्शन किए । उन के 1 हजार चेले बिहार से लाए गए और एक एक आदमी पर दो दो सौ रुपये जय प्रकाश बाबू ने खर्च किए । उस के बाद क्या हुआ ? जब प्रकाश बाबू अपने चेले के मुह पर पट्टी बांधे हुए थे । उस के दोनों हाथ पीछे रस्सी से बांधे गए । इस के माने वह लोगों को दिखला रहे थे कि इंदिरा गांधी के राज्य में हिन्दुस्तान में किसी को बोलने नहीं दिया जाता । जयप्रकाश बाबू हिन्दू परिवार से आते है उनकी आयु 70 साल की हो गयी है उन के दिमाग का संतुलन खराब हो गया है । जय प्रकाश बाबू के दिमाग का संतुलन खराब हो गया है इसीलिए कभी वाराणसी में जा कर कभी गुजरात में जा कर कभी बिहार मे जा कर पहले तो आगलगी करा देते है आगे छात्रो को झोंक देते है और पीछे काली पट्टी बांध कर और हाथ बांध कर लोगों को दिखलाने के लिए जुलूस निकालते हैं । कहते है कि हम शांति मे विश्वास करते हैं । यदि जयप्रकाश बाबू की चलती–जय प्रकाश बाबू कभी शेख अब्दुल्ला जब जेल मे थे तो शेख अब्दुल्ला की वकालत करते थे जेल से छुड़ाने के लिए कोशिश करते थे अगर उन की चलती तो काश्मीर पाकिस्तान में चला गया होता । यही अटल जी जयप्रकाश बाबू के बारे में कुछ दिन पहले क्या बोलते थे ? लेकिन इनके साथ जय प्रकाश बाबू की एक चटाई पर गांधी मदान में मीटिंग हुई, उसमें इनके भी नेता थे, कर्पूरी जी भी थे, और लोग भी थे । तो उस दिन जय प्रकाश बाबू ठीक साबित हुए और जब शेख अब्दुल्ला को छुड़ाने की बात करते थे तब अटल जी उनके बारे में क्या बोलते थे ? कहना तो बहुत कुछ था लेकिन आपने जो भी समय दिया उसके लिए धन्यवाद ।

SHRI TRIDIB CHAUDHURI (Berhampore): Sir, I have been here long enough to lose all interest in speech-making on this forum; of that I have had enough in the past; but time comes when one has to break his silence. I can only pray that good sense may yet dawn on the ruling party.

With all the seriousness that I can command, as a fairly senior Member of this House and also an humble soldier in the struggle for freedom—there are many colleagues on the other side of the House with whom I had the privilege to work—I tell them 'pleased search your heart; this is not a mere momentary effervescence of mass movement that has come up suddenly'. In Gujarat it was just the beginning; in Bihar, it has spread fast Perhaps, if you are serious enough, you will understand that unless you change your ways very radically, this is going to be the beginning of your end.

Sir I need not speak about or quote anybody else. But, the Congress President himself, Dr. Shankar Dayal Sharma said the other day—what did he say? He said that if inequalities and injustices that still persist are not eradicated or are not done away with, then nobody can prevent a violent revolution in this country. The Prime Minister, the other day, expressed herself more or less in same terms in Chandigigarh and Shri Vajpayee

[Shri Tridib Chaudhuri]

referred to that. In Bihar, what is happening is only the first tremor of an earthquake Do not think that even if the people in the Opposition keep quiet, then, everything will be all right. There are certain aspects in the handling of the situation about which I wanted to refer. But, there is hardly any time to refer to that. But, I feel that it is my duty to refer to one fact that even when we are discussing the situation in Bihar Please look at the extraordinariness of the situation in Bihar where we are suppressed to have an elected constitutional Government What has happened in Bihar, primarily, concerns the law and order. Even then this Parliament has felt compelled to discuss Bihar because the situation there is very extraordinary.

Just at this moment, an announcement had been made about the change of Government in Bihar If everything was all right, then why do you feel that the Government should be changed there? Have you pondered over direction of the change? The Bihar Chief Minister said that he was forming a war Cabinet. War against whom? A new Government has been constituted; a smaller Government has been constituted already. Even before the Opposition parties could speak out, from your own party and from your own ranks, accusations have come that this new and smaller Cabinet is loaded in favour of a group dominated by a certain person, sitting here in New Delhi

SHRI PILOO MODY: Name him

SHRI TRIDIB CHAUDHURI: Sir, it is not my practice or habit to refer to particular persons or to indulge in what is known as character assassination But, certain accusations have been made against certain persons—certain families—who are said to held the Government of Bihar in their pocket We all know what is discussed in the lobbies; we know what our friends from Bihar discuss in the lobbies We do not come here in order to keep quiet. So, I again appeal to the best sense of patriotism and far-sightedness and constructive imagination of the Congress Party and their sense of responsibility. Let them remember that they have been returned to power in a massive majority; they have certain promises to keep and certain duties to discharge And let them take the right steps in the light of the tragic happenings that have taken place in Gujarat and that are taking place in Bihar. If not, I can only say 'God save the country'.

SHRI M. SATYANARAYAN RAO (Karimnagar): Sir, although I was not willing to participate yet when I saw that there is no seriousness among the ruling party Members about the situation prevailing in Gujarat and Bihar I was compelled to speak. I am really sorry to see the Members indulging in things which are very objectionable. We know that a grave situation prevails in the country not only in Bihar but everywhere Last time when I spoke in this House I told this House and requested the Members of the ruling party that don't think you are ruling to defend the Government but you will have to defend the country. Even if I am there I will defend but you must realise the difficulties of the people. They know everything. Whenever we meet them in the Central Hall they speak out their mind but when they participate in the debate they say so many things against this party or that party I am telling you my dear friends this is not going to satisfy the people You cannot blame the Opposition parties always. With seriousness I am telling you to not utilise the services of students. They have had enough. In Telengana and Andhra we have seen what is the stuff of those students. They have spoiled their career. They have become completely useless. They have become a great burden on us. So, please realise With experience I am telling my dear friends on this side also if you have got any problem do not depend upon

students and spoil their career. I request my friends there, you please see the difficulties of the people. Shortages are there. Because of the price rise middle-class is affected. For the first time the common man is affected. There is no safety. Last time when I mentioned about it I was told that that was not their experience but it was only our experience. While travelling in a bus or train if you say you are a Member of Parliament—either Congress or Opposition—there is no security for you. The people are hating all the politicians This is the tragedy in the country. This is a fact and this fact should be kept in mind. There is no safety for anybody whether Congress or Opposition. That means parliamentary democracy is in danger. If you really want the parliamentary democracy to survive then it is the responsibility of everybody, including the Opposition parties, to sit together and try to solve the problems that are facing the country. Unless you do that I do not think you will be able to satisfy the poor people. This must be kept in your view.

As regards Bihar—I am very sorry to know—today we have seen in the papers that some Cabinet has been constituted. We know from very reliable sources and from responsible persons like Congress M.Ps. and MLAs that again most corrupt people are there in this Cabinet. They are continuing the same gentlemen again in the new Cabinet. What effect will it have on the people? This is what I want to ask the Home Minister. If such a Cabinet is there, it will have no impact on the people, and the people will not be satisfied and their problems will not be solved. Government say that they are doing all this because they want to maintain law and order. But I submit that this is not a law and order situation at all. I do not want dissolution of the Assembly and the introduction of President's rule thereafter. Let the Assembly continue. But it then pick up such persons and put them in the Cabinet.

Nowadays, there is so much controversy about Mr. Jaya Prakash Narayan. Last time when I spoke here, I had also criticised him. When he spoke about the situation in Gujarat and called upon the students and teachers to come out of their classes and start an agitation, I took great objection to it and said that it was a very dangerous thing. A person like Mr Jaya Prakash Narayan who is a very good man asking the students and teachers to come out of their classes and start an agitation is very bad, and, therefore, I had also criticised him last time. But to say that he is dishonest man, to say that he takes money from very rich people is a very dangerous thing. Those who say so are unnecessarily having confrontation with that man. He may be committing so many mistakes. But about his honesty and his sacrifice for the country, there are no two opinions in the country. So, those who are making such remarks are unnecesarily criticising him and unnecessarily having this confrontation with him. I know that there are some gentlemen in the Congress Party, not all, but some of them, who want some confrontation between Prime Minister Mrs. Indira Gandhi and Mr. Jaya Prakash Narayan; they are very happy with this and that is why they go on issuing statement after statement. This is very bad, and I would request the Home Minister to rectify this matter.

MR. CHAIRMAN: Now, the hon. Home Minister.

SHRI PILOO MODY: Have they no sense of shame? What are they clapping for? This is a solemn occasion. What are they celebrating?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT): They are only starting to follow his example. When he talks about celebrating I am remind-

[Shri Uma Shankar Dikshit]

ed of what had happened at the time of the election of the last President. Long before the election was held, he was celebrating and wanting victory to Mr. Subba Rao. He was there in the' plane, and I was also there, and I was perhaps unknown to him then. I do not know whether he wants other people to follow his example or not.

SHRI PILOO MODY: He will admit that he would have made a better President.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: In any case, he should not have celebrated it before the election, at least in the manner in which he was doing it.

SHRI PILOO MODY: I am not a hypocrite. I drink in public.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: That apart, I agree with him that this is a solemn occasion, and I do not want to import irrelevant things or matters which are below the dignity of this House or the decorum of this House. These are serious matters and we must consider them with all the seriousness at our command every section of this House should do so I have intervened or spoken in this House more than half a dozen times but this debate has been on the whole a rather painful experience for two particular reasons

Firstly, when facts were stated or denied, when references were made to important people or to events no respect was given to fact or to reality or to some proportion of reality, and any kind of statements were made.

Secondly, to begin with, I would refer to the speeches of the last three hon Members. I was deeply impressed by the manner and the approach of Shri Tribid Kumar Chaudhuri s speech and also that of the young Member who followed him. It is a serious matter. It is a question on which the ruling party and also the Opposition, in my opinion, have to search their hearts. We have to search our hearts and take a serious line of action which will meet the situation.

For instance, it has been asked: 'When it is admitted that there is corruption, when it is admitted there is shortage, when it is said that prices are rising, what are you doing? Why do you speak of yourself? Why are you governing? Why are you in the Government?' and so on. What kind of logic is the?

SHRI S. M BANERJEE Why don't you arrest them?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT· Arrest the prices or arrest whom?

SHRI S M. BANERJEE· Arrest the hoarders and blackmarketeers.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT In one State alone, 5000 raids have taken place, and thousands of people have been arrested in the country

SHRI S. M. BANERJEE: But they had released Shri S K. Mody on bail

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT Large number of people have been arrested, and some paraded in the streets and convicted.

They have been convicted. He is greatly ignorant if he says that smugglers and blackmarketeers are not being punished or that their places are not being raided In Gujarat alone, within a short time, there were 500 cases. (*Interruptions*) Therefore, let us not make this kind of sweeping statements, such kind of generalisation painting everything black, everybody black. It is not proper; it is not true

So far as these last three gentlemen are concerned—I refer to them again—Shri Yadav made some observations We have no right to expect Jaya Prakashji to agree with us or ourselves to agree with him politically. He does not belong to the Congress Party. He has taken certain stands from time to

time according to his conscience. He has not been particularly consistent also. He is not really fit to be a party-man. Otherwise, he would not have allowed that party to be broken up to which he belonged; he would not have let slip that historic opportunity he had in the shape of the socialist party and would not have let it be broken up in the manner it did. He is a man of conscience. Let us understand this. I would request my friend, Shri Yadav, to realise that if he is going to apply the ordinary cheap standard to a man like that, he will be making a great mistake. I do not want the Congress Party to be misunderstood in this respect. I feel very strongly on this not because I worked with him or he worked with me during the 1942 movement, but because when we take a public stand, we have to have some sense of proportion.

Now, therefore, on behalf of the Congiee Party, I would like to say this that this is not the view of the Congress Party. Jayaprakashji being a person who in the matter of personal integrity or intellectual integrity or as a man who is a public-spirited gentleman, as a man with a clean conscience, as a man who is devoted to a high standard of life, in these matters we hold him in high respect That has not prevented us from not finding ourselves in agreement with him in most matters for the last 25 years. Therefore, I beg of you all not to say anything that will unnecessarily embitter that man of conscience and man of soul.

I was dealing with this question of whether we should learn lessons from history or not. What has happened? Have we forgotten 1971? Have we forgotten 1972? Is not the public a good judge? Everybody has got the name of the public on his lips like that of God whom we remember when seeking blessings. These leaders who are so bitter in their criticism of the Congress Party Governments have been weighed by the public; tried and found wanting.

My friend, Shri Piloo Mody's party, when it started with Rajaji and Shri K. M. Munshi and others, appeared to have some sort of a big future as a kind of alternative. But where is he now? Where is it now? The party has been rejected outright.

SHRI PILLO MODY: My dear Sir, this has nothing to do with parties.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: It is all right as a cheap joke to say that his is the best party.

SHRI PILOO MODY: I would like you to consider where you are before you ask where I am. This has nothing to do with parties. I will not stand such bloody nonsense. Do not tell nonsensical nonsense to me.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Parties are judged by their representatives.

SHRI PILOO MODY: Your talking about Rajaji is like a prostitute talking about love.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Let him not excite himself.

SHRI K. P. UNNIKRISHNAN: Would you expunge these words if you find them abjectionable?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: If that expression suits Shri Mody, let him have the pleasure of it.

MR. CHAIRMAN: Mr. Mody, you are a man of humour. Please take it in the proper spirit.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I am sorry if I have hurt him.

SHRI PILOO MODY: My dear Sir, apparently the Minister seems to think that what is important in this world is to win elections, by creating, by thugging, by money, by skullduggery, by stopping the voters from going to the booths, by stuffing the ballot-boxes and finally by miscounting the votes. You take pride in winning such elections.

MR. CHAIRMAN: Mr. Mody, the hon. Minister has said that he is sorry if he has hurt you.

SHRI PILOO MODY: Winning the elections in this country like that is nothing. (*Interruptions*) If you had fair elections, you would not have this sort of trash over here.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Sir, I was to begin by saying that in today's debate, either the hon. Members have gone by the general approach, the budget approach or by the Presidential Address approach by speaking everything they liked on any subject while dealing with the question which is before the House.

Sir, this discussion was asked for by the hon. Member Shri Jyotirmoy Bosu and also by some other friends in the Opposition. I had expected that they would either ask for some information or some clarification of the position. I made a statement that day in which I mentioned a number of salient points, and I gave a fairly clear picture of what had happened in Bihar They should have, as responsible Members of the Opposition, accepted the facts. When earlier, the question came up, Shri Chaudhuri that day made wholly untenable and unsupportable statements. He repeated the same allegations today. I am really surprised and am greatly disappointed that his leader did not pull him up. He has the audacity to say that over a hundered people were killed and that over 200 people were injured. It all happened between about 3.35 and 5.35 p.m. It was not in the dark of midnight when injured people could have been carried away. How could they have removed the injured persons or the dead bodies? It is something utterly fantastic and unworthy to be stated by a responsible Member of Parliament to say that hundreds of people were killed and then were quietly removed somewhere and buried or burnt. Mind should have been applied as to what could have happened during that short time of the day.

I would like to point out the circumstances under which this is supposed to have happened. Large crowds were there pressing towards the kotwali or towards the telephone exchange. All this happened within a radius of half a mile or less than half a mile. The crowds were advancing and all the time the SDO and others were giving warning. Then tear-gas was used. On one occasion as it took time before tear-gas arrived, they made a lathi charge. Otherwise, on all the four occasions, first tear-gas was used The warning was repeatedly given. Time after time they were asked to go away. Nobody listened, and the warning and tear-gas only had the effect of bringing the crowds forward and nearer to the authorities making their position dangerous At one point the position was so bad that they were hemmed in on both sides in one small lane and then possibly the entire force would have been wiped out.

Therefore, what I am begging of you consider is that you should not give any weight to the allegation which has been made by hon. friends opposite, that hundreds of people were killed or hundreds of people were injured, which is entirely without foundation.

17.00 hrs.

Certain other matters have been referred to. The main point in my opinion, of having a discussion on a subject like this was to find out whether there was any excess committed by the police, whether more pople were killed than was inevitable, whether there was delay in taking action and whether it led to wider repurcussions and whether the Government took maximum care as provided in the Rules. In this respect I beg to submit that every rule was followed.

SHRI S. M. BANERJEE: How do you say that? Why not have a judicial enquiry?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: It is a highly fallacious argument. First you state a falsehood as high as the sky and then you say: what is the harm; if you are not afraid why not have an enquiry?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: I quoted a statement made by a former Member of Parliament belonging to the Ruling party.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: It may be whoever, for whatever reasons. . . (*Interruptions*).

SHRI S M. BANERJEE. You accept whatever the Bihar Government says

श्री ईश्वर चौधरी 13 तारीख की रात्रि को बत्ती बुझाने का क्या कारण था और बत्ती बुझा कर सारी लाशों को मिलिट्री हास्पीटल में डालने का क्या कारण था और फिर मिलिट्री हास्पीटल, पुलिस स्टेशन और रेलवे हास्पीटल में लाशों और मरीजों को रखने का क्या कारण था ? इन सब बातों की सच्चाई तभी पता चलेगी जब आप न्यायिक जांच करायेंगे ।

श्री उमा शंकर दीक्षित आपने जितनी बातें कही है, वे बिल्कुल गलत हैं और वस्तु-स्थिति से उनका कोई ताल्लुक नहीं है । साढ़े तीन बजे से साढ़े पांच बजे तक जब फाइरिंग हुई, तो इस बात को मानने का क्या कारण है कि जो घायल हुए थे उनको हमने छिपा दिया, पुलिस ने छिपा दिया या जो मर गये उनको कहीं दफना दिया या कोई उनको लेकर कहीं चला गया ? मेरा यही कहना है और मेरी यही मुख्य दलील है । इस पर आप विचार करें और बाद में अगर आप समझा दें कि इसमें यह खामियां हैं या कमियां हैं तो हम उनको मानने के लिए तैयार हैं ।

एक दूसरी बात मैं यह कह रहा था । . . . (व्यवधान) . . . . आप जो कहते हैं, उसमें आप की बात विश्वसनीय नहीं मालूम होती है । आप अभी युवक हैं और आपको सीखना चाहिए कि आप ऐसी बातें कहें जिनका कुछ रखाव पड़े । अगर आप किसी बात को दुगुना, चौगुना या दस गुना बढ़ा कर कहेंगे, तो कौन उसको मानेगा ।

श्री ईश्वर चौधरी . जो आपने बताया है उसको मानने के लिए तैयार नहीं हूं ।

श्री उमा शंकर दीक्षित न मानिये ।

I was saying that the police acted with care by giving warnings by using other measures for dissuading the crowds, by first using tear gas and making lathicharge— and finally when they are completely forced, in resorting to firing It was done under the orders of the SDO, by a responsible officer of the CRP or BFS. It happened five times: two rounds, just two rounds first time, then one round then two rounds; then one round and finally two rounds. That is thrice two each and thrice one each. I say that I have taken special precaution by deputing a responsible officer . . .

SHRI SAMAR GUHA: You are giving the official version. . . . (*Interruptions*) On a point of order. The hon. Minister is giving certain information on what took place in Bihar. They have given their version about deaths, about casualties and about firing.

MR. CHAIRMAN. What is your point of order?

SHRI SAMAR GUHA How are we to believe it? Are we to take the official version? Are we going to prosecute the Press and newspapers in Bihar where they have given.. (*Interruptions*).

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT. If he has believed Press reports, he need not come to us for ascertaining the facts As we have to take responsibility, we had checked the information reported by the Bihar Government through our own officers We had specially deputed a responsible officer to go all-round to see the places, come back to us and report the facts so that we are able to give these facts to you, as they stand today Up to the point of time of my speaking I have placed the facts as ascertained and checked by us (*Interruptions*)

MR CHAIRMAN Please do not interrupt the Minister.

SHRI BHOGENDRA JHA I do not dispute what he is saying But, I would like to know, whether he will advise the Government of Bhiar to order a judicial enquiry

MR CHAIRMAN· We had a debate Members of Opposition had their full say and I think we had a very good atmosphere. I think, the Minister should be given an opportunity to place certain facts, and therefore, please do not interrupt the Minister

SHRI S. M. BANERJEE. Supposing we accept these facts that only eight people were killed. Take it for granted. Eight lives do not justify a judicial probe. But, what about the ten-year boy who was killed? Was he an Ananda Margi? Did he belong to RSS? Who was this ten-year old boy? Why was he killed? Who killed him?

MR. CHAIRMAN: You made your point. It is upto the Minister either to accept or not to accept it. We should give him an opportunity to have his say.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Then I shall briefly refer to the last point made by the last speaker. Mr. S M Banerjee said yesterday that he had more regard for me than some of my own Members I accept that statement I would like to submit for your consideration the fact which one of the Members had also mentioned though I do not know whether he had given prior notice

SHRI S M BANERJEE I do not have any personal quarrel with you. But, I only want that you should punish the murderers, human murderers

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT Now, Sir it was said that police, BSF or CRP, pursued the running mob and killed some of them without any cause, without justification Also that something wrong had happened and that it is necessary to go into a roving or detailed enquiry Crowds are pressing forward towards the Telephone Exchange Despite warning those who were doing 'dharna' or 'gherao' refused to allow any one to go inside Though the picketers were once persuaded to make a little room, the workers refused to go inside because they were afraid This continued on the 9th, 10th and 11th On the 11th—I say this from what has been communicated to me—information was received that something more serious was going to happen the next day That evening, information was sent to the Chief Secretary of Bihar Government that more forces should be sent Up to the 11th evening the gherao, or dharna or picketing was quite peaceful. Nobody was hurt although the work was completely at a standstill They might not have been able to paralyse the entire Government of Bihar or other Governments in the country, but they had paralysed the telephone exchange About half a dozen officers tried to

run a skeleton service. Then, with great difficulty, the picketeers were persuaded not to prevent the General Manager or SDO Telephones to scale the compound wall and inside. This was the maximum concession which was granted to the officer-in-charge. Such was the situation which continued right up to the evening of 11th. On the 11th evening information was received—I do not know who was responsible....

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: He has to find out wherefrom the information came.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT. I have found out, but I am not willing to say it here. I am not going into names. Two parties were definitely involved in all that happened from the 9th to the 12th. Whoever it may be, I do not want to mention any names.

SHRI BHOGENDRA JHA: Why can't he gives the name of the party, if not the individuals?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Intelligence reports are reports of a different kind. I am giving the reason why force was sent. Force was made available after information went to the Chief Secretary of Bihar Government that unless more force was sent, there would be difficulty. Therefore, three or four companies came in the night. The situation was very serious....

SHRI BHOGENDRA JHA: Why not name the two parties?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: To the best of our information, CPI was not involved. But certain necessary precautions were taken.

Shri A. K. Sinha, Magistrate and Shri P. B. Roy, Deputy Commandant BSF whose party fired three rounds have stated that they checked the unfired ammunition of the party and empty cartridges collected after the firing immediately after the operation was over and verified that only 3 rounds were fired. Shri Quasim Magistrate and Shri Roy again checked the remaining ammunitions and the empties collected by the BSF also of Naik Shri B. L. Ghosh and found that only three rounds had been fired. The Platoon Commander of the CRPF Sri Mohan Singh also checked the empties and the unfired cartridges and had verified that only two rounds had been fired. (*Interruptions*).

52 policemen including 3 of BSF and 4 of CRPF were injured by the missiles hurled by mobs at different places on the G. B. Road, K. P. Road and other places. Three were grievously injured. Another noteworthy point is that for the first time, not only brickbats but cut ice blocks and bottles were thrown in ample quantity.

I do not want to give unnecessary publicity to a device of this kind. The important aspect to note is that an ice block hits and it melts. Nothing is found afterwards. We could have got photographs of pieces of bottles strewn on the road, stones lying, but not of ice blocks. (*Interruptions*).

Twenty-seven rounds of tear-gas were burst to disperse the crowds, 17 between Telephone Exchange and Kotwali on G. B. Road and 10 on K. P. Road. I am giving the facts which have been ascertained by the officers who went to the spot and took evidence, as *panchnamas* were signed. On that basis, I am making this statement.

One Police Pick-up was set on fire on Riverside Road in Kirani Ghat Mohalla. The police driver ran up and reported to the Kotwali Police Station at about 5 P. M. where a rescue party was sent and vehicle brought to Kotwali after the crowd was dispersed.

A jeep under use of D.S.A. Home Guards was forcibly taken charge of by the mob in the lane running east almost in front of northern edge of the Post Office. Shri S. K. Vij, Dy. Commandant, B.S.F. reacued this jeep from

[Shri Uma Shankar Dikhsit]

the hands of the mob and deposited it at the Collectorate.

Extensive enquiries have been made to ascertain if any more persons had been reported killed or injured in the incidents of the 12th afternoon. But despite every effort made, no such information has been forthcoming yet. Enquiries in this direction are still continuing.

It is possible that some injured people might have gone away out of the fear, that if they went with their injury to the police station or to the hospital, they might be arrested. In saying so, I have this purpose in mind that if there is anybody who was injured but who did not report, let him come forward and we will not harm him provided he gives full statement to us.

As regards deaths, I do not believe that deaths have taken place in large numbers as alleged by the Opposition Members. Death is a far more serious matter. We will, certainly, welcome any information on this point. But upto now—I went outside about half an hour ago—upto that time, we have no further information.

One of the dead, namely, Navin Kumar Sinha is said to have been fired upon near the Jain Temple. They talked about the Jain Temple. Some of our friends were excited that Jains being so peaceful and non-violent, how could these people with rifles etc. go to the temple. The Doctor who conducted *post mortem* on his body has recovered a small metallic piece in his liver. The B.S.F. and the C.R.P. did not use any pellets. In every case, without exception no other ammunition except bullets, was issued. Therefore, it could not have come out of an official arm at all. A look at the metallic piece would show that it cannot at all be a part of a bullet. It has been sent for examination and report to ballistics experts of forensic science laboratory....

SHRI PILOO MODY: On a point of order, Sir.

The Minister is reading from a particular document. That document should be placed on the Table of the House, according to the rules. If he wants to break the rules, then let him go ahead.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: These are my own notes. I got them prepared last night. If he wants, I can give to him tomorrow.

SHRI PILOO MODY: Why not today?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I have got only one copy.

It may also be likely that some people from housetops may have fired on the policemen operating on the ground which may have hit Navin Kumar Sinha. The fact that only eight rounds were fired during a total period of two hours—the last two rounds were fired at about 5.35 p.m.—would show that the armed contingents which were called into action acted with commendable self-confidence and self control.

It is important to note that, of the 16 bullet injuries so far established, only three impacted above the waist-line. I am only mentioning the facts. Anybody can contradict these facts if a contrary evidence is available. As I said, of the 16 bullet injuries so far established, only three impacted above the waist-line. This is a reliable indication of the fact that the firing was controlled and almost invariably aimed low, and minimal.

With these words, I want to submit for the consideration of the House.... (*Interruptions*) I think I have made a mistake and I withdraw the offer that I made to Mr. Piloo Mody. I do not

know; he might make some wrong use of it.

SHRI PILOO MODY: I will make the same use as you made.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I will consult and then give. These are the main facts. I expected that all such questions would be asked in order to ascertain whether the police force, BSF and others acted properly or not. But no such questions were asked, on the other hand, other matters going right upto Moon were raised; as hon. Member Mr. Piloo Mody did. There is no part of this world or the other world which has not been touched in the course of this debate. I submit with great respect that much of it was not relevant.

I am very thankful for the very comprehensive discussion which has taken place, and I hope that this matter will be considered in the right spirit in which I have placed it before the House.

MR. CHAIRMAN: You said that Mr. Piloo Mody went upto the Moon.

I was surprised how Mr. Piloo Mody could go upto the Moon. Some hon. members rose—

MR. CHAIRMAN: I will permit only two or three members to ask a question each.

श्री ईश्वर चौधरी : क्या शान्तिपूर्ण सत्याग्रहियों ने जनता ने सरकारी भवनों में लूटपाट की हैं ? क्या गया के जिलाधीश ने यह बात नहीं कही है कि "देखते गोली मार दो ?" यदि यह बात कही है और जनता ने सरकारी भवनों में लूटपाट और आगजनी की है तो एन्क्वायरी क्यों नहीं होती है ?

SHRI BHOGENDRA JHA: It seems the Home Minister is convinced and confident about the statement he has made. In that context, I want to ask what is the objection to advise the Bihar Government to order a judicial inquiry. Now the Home Minister must have got sufficient time. I want to know what transpired on the 16th March between Shri Atal Bihari Vajpayee and three other MPs and the Anand Marg chief in the Patna Camp Jail. According to the Bihar Jail Manual Rules, no talk can take place without an officer being present. I also want to know what remedy he is suggesting for the consideration of the House. Some of his party-men have demanded dissolution of the Assembly and imposition of President's rule. What is Government's thinking on this?

SHRI S. M. BANERJEE: My question is this. What specific objection you have to have a judicial probe by the State Government because it was admitted that only 8 people were killed? After all the same officers who have murdered these people can not sit in judgement.

I also suggest a judicial probe only because those people who were innocently killed, their family members can get compensation only if it was proved that excessive force was used.

My second question is: what is your opinion about the new Ministers?

M. CHAIRMAN: You can ignore the last question.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I begin with the last question and come to the first later very soon.

Firstly, I regard this, I hope my Party and other hon. Members will not mind, a step in the right direction.

SHRI BHOGENDRA JHA: More corrupt.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I have told you that if you ask a question, you should take my answer He had no right to ask this question about their being corrupt or not. Many of the Opposition Parties have had opportunities in Bihar, UP and MP, and in Tamil Nadu there is an Opposition Party ruling, and if you want to know what kind of allegations are being made against that good party, you will forget accusing us of anything hereafter. That sort of thing goes on. This means not that they have gone wrong.... *(Interruptions)* It merely means that they have been there too long and people do not like their faces—ours or anybody else's. There are different reasons for that and we need not go into them. Let us not impute this kind of dark motives....

SHRI S. M. BANERJEE: Nowadays every Minister's conduct is being investigated by the CBI before he is made the Minister. Even our Assembly Candidates' conduct was investigated.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT. Is he talking of his own Party?

MR. CHAIRMAN: It will not be proper to discuss the conduct of Ministers here.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Shri Bhogendra Jha wants to know what happened on the 16th or rather earlier than the 16th, when, I suppose, Shri Atal Bihari Vajpayee and others went and saw Prabhat Ranjan Sarkar. My reply is that if the hon. Member takes the trouble of putting down a starred question, I shall gladly answer it....

SHRI S. M. BANERJEE: It may not get in the ballot.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT. That is another matter. That is a matter of luck. Better luck next time, I would say.

SHRI SAMAR GUHA: If a short-notice question will be accepted, I will put it.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: The debate was to end at 3.30 p.m. Instead of 3.30 now it is 5.30 p.m. Therefore, please forgive me and let me quickly answer the remaining questions.

The hon. Member wants to know as to what is the remedy. I would like to answer that question by putting another question. Remedy for what? We are dealing with a situation which has arisen in the country in the most unexpected manner. What kind of remedy do you want? You know situations have arisen in this country for historical reasons, for reasons beyond our control for what are called. Asmani Sultani, that is reasons of nature. Extraordinary rise in the price of crude and terribly high price rises have taken place in a number of other commodities, and if you ask me why these things have happened, my reply is, I am not able to answer that question.

Two questions my young friend has asked. He wants to know..

SHRI BHOGENDRA JHA *rose.*

MR CHAIRMAN: No please. You have asked your questions No discussion please.

SHRI VIKRAM MAHAJAN (Kangra). You cannot allow the same member to go on asking question after question. He was given two opportunities before.

SHRI BHOGENDRA JHA: This will help you. The question is: your Party has demanded President's rule. I want to know whether you intend that or not.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: This question does not arise.

SHRI BHOGENDRA JHA: Your Party has raised it.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Then do not listen to such questions. Mr. Choudhuri said that they were peaceful picketers. Have they the right to peacefully picket or not? If they have the right, then, why were they interfered with? This is what I understood to be his question. How, what happened was this. So long as they remained peaceful picketeers nothing was done to them for three days. It is only when Mr. Bose and two ladies were taken into custody, who were not allowing anybody to go in and the working of the entire telephone exchange had come to a standstill, at that time when the others prevented this van with these three prisoners to be taken out, action had to be taken. One hon. Member here said that they lay down on the road just in front of it. Now if that happens—and that is what happened—action has to be taken. So, that is my answer to his first question.

Now I come to the question about "shoot at sight". My friend—not so friendly a friend,—hon. Member Shri Jyotirmoy Bosu takes particular pleasure in finding a case for breach of privilege. He is in search for some breach or other even if it does not exist. And that day, to make a long story short, I said, with due respect to Members that I was sorry if anything wrong had happened and I said that I did not mean any harm or to mislead the House. The hon. gentleman intervened and then I made a statement. In his letter, he quoted only part of the relevent portion, the upper portion only and not the lower portion. Anyway, I will write that in my reply to him. I wanted to give the facts. The facts are clear. No order was given to shoot at sight. The question was whether such an order was given to shoot at sight. Now, these English words mean something according to the English Dictionary. The words 'shoot at sight' mean, 'shoot at sight' and nothing else. So, I have said, no order was given to shoot at sight.

Further, no announcement was made telling the people that those who violate the curfew would be shot at. Curfew on the 12th was not there; it came later on. A warning was however given that those indulging in loot and arson were likely to be shot at. And, the A.I.R, Patna did not make any announcement regarding shoot at sight. That is all, Sir, that I have to say.

MR. CHAIRMAN: Now we will take up Introduction of Private Members' Bills. Shri Vishwanath Pratap Singh.

17.34 hrs.

RETIRED ARMY SOLDIERS RE-EMPLOYMENT BILL*

SHRI VISHWANATH PRATAP SINGH (Phulpur): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill to provide for the re-employment of retired Army soldiers in the various forces constituted and maintained by the Central and the State Governments.

MR. CHAIRMAN: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to provide for the re-employment of retired Army soldiers in the various forces constituted and maintained by the Central and the State Governments."

The motion was adopted.

SHRI VISHWANATH PRATAP SINGH: I introduce the Bill.

---

*Published in Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 2, dated 19-4-74.